सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 17, नई दिल्ली । शुक्रवार, 28 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सत्य बोलकर मित्र बनाना अच्छा है, परन्तु झूठ बेलकर मित्र बनाने से सत्य बोलकर शत्रु बनाना अधिक अच्छा है, क्योंकि आप संसार में सबको एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते।

03 'जन्म से लेकर मरण तक टैक्स ही टैक्स', सांसद राघव चड्ढा
06 प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षणिक संस्कृति में छिपे तनाव पहचानें
08 पुरी-राउरकेला बंदे भारत एक्सप्रेस के समय में परिवर्तन

कितना असहाय नजर आ रहा हैं दिल्ली परिवहन विभाग का स्क्रैपसेल परिवहन आयुक्त के प्रिय स्क्रैप डीलरो के समक्ष

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन आयुक्त ने अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को दिल्ली की सड़को से वाहन उठवाकर देने के लिए अपने पद की ताकत के दुरुपयोग के साथ बॉक्सरों और बदमाशों की ताकत का प्रयोग कर जितने वाहन सुपुर्द करवाए उनकी स्क्रैप कीमत तक उन्होंने विभाग में जमा नहीं करवाए और स्क्रैप सेल के द्वारा बार बार नोटिस देने पर भी कोई भी पैसे जमा नहीं करवा रहे क्योंकि उनके सिर पर तो **परिवहन आयुक्त का हाथ है** अब परिवहन विभाग का स्क्रैप सेल इतना असहाय हो रहा की नोटिस जारी करने के सिवा तो और कुछ कर ही नहीं सकता क्योंकि **कार्यवाही के लिए तो परिवहन आयुक्त की आज्ञा अनिवार्य है पर जिस की शय पर ही पैसे जमा नहीं हो रहे वह कार्यवाही के आदेश देगा, बड़ा सवाल ?**

आपकी जानकारी हेतु प्रस्तुत है परिवहन विभाग के स्क्रैप सेल द्वारा जारी एक और दिखावटी ट्रायल मेल का हिन्दी रूपांतर

स्क्रैपसेल टीपीटी 4:38 अपराह्न

अनिरुद्ध को, भरत, भारत, जाओ, गोग्री...

ट्रेल मेल का संदर्भ लें सभी आरवीएसएफ को निर्देश दिया जाता है कि वे 31/03/2025 तक सौंपे गए सभी वाहनों के संबंध में संलग्न प्रारूप में डेटा उपलब्ध कराएं।

परिवहन विभाग, जीएनसीटीडी की प्रवर्तन टीमों द्वारा 11/10/2024 से आज तक यानी 22/02/2025 तक उन्हें सौंप दिया गया है। हालाँकि, आज तक, अधिकांश आर.वी.एस.एफ. ने कोई डेटा प्रस्तुत या उपलब्ध नहीं कराया है। इस संबंध में, एक बार फिर निर्देश दिया जाता है कि सभी आर.वी.एस.एफ. को अपना डेटा (संलग्न प्रारूप के अनुसार) 31/03/2025 तक जमा करना होगा, अन्यथा जिस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। यह भी सूचित किया जाता है कि यदि कोई आरवीएसएफ 31/03/2025 तक जीवन समाप्ति वाले वाहनों के लिए संलग्न प्रारूप में डेटा प्रस्तुत करने में विफल रहता है, तो संबंधित आरवीएसएफ को सौंपे गए सभी वाहनों को लावारिस वाहन माना जाएगा और तदनुसार कार्रवाई की जाएगी।

सांख्यिकी अधिकारी (स्क्रैपिंग सेल)
परिवहन विभाग, जीएनसीटी दिल्ली

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए **प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है** और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की **"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र"** का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

नई दिल्ली मेट्रो स्टेशन में खोला गया पॉड होटल, मिलेगी सब सुविधा

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने नई दिल्ली मेट्रो स्टेशन पर एक पॉड होटल शुरू किया है, जिससे यात्रा के दौरान रुकने वाले यात्री आराम से ठहर सकें। यह पहल DMRC की उस रणनीति का हिस्सा है, जिसके तहत मेट्रो स्टेशनों को सिर्फ यात्रा के लिए नहीं, बल्कि व्यापारिक केंद्रों में बदलकर अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे किराए के अलावा भी आय बढ़ाई जा सके।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने सफर के दौरान थक चुके यात्रियों के लिए एक खास सुविधा शुरू की है। बता दें, न्यू दिल्ली मेट्रो स्टेशन के अंदर ही एक पॉड होटल की शुरुआत हुई है। यह होटल येलो लाइन और एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन के व्यस्त इंटरचेंज पर बनाया गया है, ताकि सफर के दौरान यात्री थोड़ा आराम कर सकें, और खुद को रिफ्रेश करा सकें।

यह सुविधा करीबन 3,000 वर्ग मीटर में फैली हुई है, जिसमें छोटे-स्लीपिंग पॉड्स के अलावा कुछ बड़े कमरे भी होंगे। खासतौर पर वे यात्री जो लंबी यात्रा कर रहे हैं या सफर के बीच थोड़ी देर का आराम चाहते हैं, उनके लिए ये होटल फायदेमंद रहने वाला है। ये एक किफायती और सुविधाजनक विकल्प है, जो दुनिया भर के बड़े ट्रांसपोर्ट हब में मौजूद कैप्सूल होटलों की तरह ही यात्रियों को एक आरामदायक अनुभव देगा। चलिए आपको इस होटल की और देते हैं जानकारी।

DMRC की बड़ी योजना का हिस्सा है ये

यह पहल DMRC की बड़ी योजना का हिस्सा है, जिसका मकसद किराए के अलावा दूसरी आमदनी के जरिए मेट्रो सेवा को बेहतर बनाना और यात्रियों की सुविधाओं को बढ़ाना है। कई मेट्रो स्टेशनों जैसे मालवीय नगर, पंजाबी बाग, आजादपुर और फरीदाबाद सेक्टर 20B को व्यावसायिक हब में बदला जा रहा है, जहां दुकानों और फूड कोर्ट जैसी सुविधाएं होंगी। इसके अलावा, नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी मेट्रो स्टेशन पर एक भव्य बैंक्वेट हॉल भी बनाया गया है, जिससे मेट्रो परिसर का उपयोग केवल सफर तक सीमित न रहे, बल्कि अन्य जरूरतों के लिए भी किया जा सके।

DMRC दे रहा है इन जगहों पर भी ध्यान

DMRC ने आने वाले समय में कमर्शियल ग्रोथ के लिए कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान की है। योजना के तहत, कोहाट एन्क्लेव को एक व्यावसायिक क्षेत्र बनाया जाएगा, जहां पार्किंग की सुविधा होगी। आजादपुर में 21,000 वर्ग मीटर में ऑफिस और रिटेल स्पेस बनाया जाएगा, जबकि मोहन एस्टेट में 8,900 वर्ग मीटर क्षेत्र को औद्योगिक उपयोग के लिए तैयार किया जाएगा। आनंद विहार मेट्रो स्टेशन पर भी 4,100 वर्ग मीटर में रिटेल स्पेस जोड़ा जाएगा।

DMRC होटल जैसी और सुविधाएं ला रहा है

DMRC का मकसद मेट्रो नेटवर्क में व्यावसायिक स्थान, होटल जैसी सुविधाएं और ट्रांजिट सेवाओं को शामिल करके यात्रियों के लिए मेट्रो को और सुविधाजनक बनाना है। इस तरह, मेट्रो एक सेल्फ सिस्टम बन सकेगी, जो सरकार पर ज्यादा निर्भर हुए बिना अपनी सेवाएं सुचारू रूप से चला सके।

पॉड होटल की शुरुआत

पॉड होटल की शुरुआत न्यू दिल्ली मेट्रो स्टेशन को सिर्फ एक ट्रांजिट हब से बदलकर ऐसा स्थान बना देगी, जहां यात्री अपने सफर के बीच आराम कर सकें और फिर तरोताजा होकर अपनी यात्रा जारी रख सकें।

पॉड होटल की खासियत

पॉड होटल की सबसे बड़ी खासियत ये है कि यहां अपनी मर्जी के हिसाब से आप यहां कुछ घंटों या पूरी रात ठहर सकते हैं और सबसे बड़ी बात है यहां पुलिस का कोई झंझट नहीं है। ओयो होटल में हाल के दिनों में अनमैरिड कपल्ड को कमरे देने से इंकार करने की नीति ने कई यात्रियों को परेशान कर दिया था। मेरठ में भी ओयो की नई पॉलिसी के मुताबिक अनमैरिड कपल्स को अब कमरा नहीं दिया जाएगा। लेकिन पॉड होटल में ऐसी

दिल्ली की सड़कों पर अतिक्रमण हुआ तो जिम्मेदार होंगे अधिकारी, मंत्री प्रवेश वर्मा ने दी चेतावनी

दिल्ली में सड़कों पर अतिक्रमण की समस्या से निपटने के लिए मंत्री प्रवेश वर्मा ने अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा कि अगर किसी भी विभाग की सड़क पर अतिक्रमण होता है तो संबंधित अधिकारी जिम्मेदार होंगे। मंत्री ने यह भी कहा कि अतिक्रमण हटाने के लिए एसटीएफ का गठन किया जाएगा जिसमें निगम जिला प्रशासन पुलिस यातायात सभी विभाग शामिल होंगे।

नई दिल्ली। मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा कि पूरी दिल्ली में सारी सड़कों पर ही अतिक्रमण है। चाहे निगम की हो या पीडब्ल्यूडी की हो। हर जगह रेहड़ी-पटरी वालों ने कब्जा कर रखा है। उन्होंने कहा कि जिस विभाग की सड़क है यदि वो शिकायत करता है तो समय सीमा में एसटीएफ एक्शन ले, हम इसकी व्यवस्था कर रहे हैं। एसटीएफ में निगम, जिला प्रशासन, पुलिस यातायात सभी विभाग रहते हैं। ताकि सामंजस्य से काम कर सकें। उन्होंने कहा कि इसकी वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी होगी। अधिकारियों की जवाबदेही तय होगी। दोबारा अतिक्रमण होता है तो जिम्मेदारी जरूर किसी अधिकारी की होगी। सभी अतिक्रमण लिखित में दें और जब भी कार्रवाई हो तो वहां पर खड़े होकर साथ दें।

उधर दिल्ली विधानसभा में बजट सत्र के चौथे दिन उस समय हंगामा खड़ा हो गया जब मंत्री प्रवेश वर्मा ने भाई शब्द का इस्तेमाल किया। सदन में प्रवेश वर्मा द्वारा 'कहां से लाए हो भाई' कहते ही आप नेता आक्रमक हो गए। उन्होंने सदन में खासा व्यवधान उत्पन्न किया। दरअसल प्रवेश वर्मा ने छठ पूजा से संबंधित एक सवाल के जवाब में दिया था। आप ने आरोप लगाया कि प्रवेश वर्मा ने पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी को कहा कि कहां से लाते हो भाई। इस पर व्यवधान इतना बढ़ गया कि विधानसभा अध्यक्ष ने आप के कुलदीप कुमार एवं विशेष रवि को मार्शल के जरिए से सदन से बाहर निकलवा दिया।

वहीं इस मामले पर मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा कि भाई कहने पर दिक्कत है क्या ? इस पर विवाद हो रहा है। क्या भाई कहना गलत है। प्रवेश वर्मा ने आगे कहा आतिशी मेरी बहन हैं, वो भाई नहीं है। आप लोग मेरे भाई हो। प्रवेश वर्मा ने कहा कि चाहे छठ पूजा हो, कांवड़ सेवा, चाहे उर्स हो या फूल वालों की सैर हो।

हर में सरकार पैसा देती है। यह हेड 1994 में शुरू हुआ था, उस समय भाजपा की सरकार थी और मदनलाल खुराना मुख्यमंत्री थे। उन्होंने कहा कि 1995 में इसका नाम बदलकर तीर्थ यात्रा विकास समिति कर दिया गया। उन्होंने कहा कि सभी धार्मिक कार्यक्रमों का हेड भाजपा की सरकार ने शुरू किया था।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

नमो भारत से मेट्रो स्टेशन जाने पर दोबारा चेकिंग से मिलेगी मुक्ति एनसीआरसीटी और डीएमआरसी के अधिकारी कर रहे मंथन

परिवहन विशेष न्यूज

अब नमो भारत से मेट्रो स्टेशन और मेट्रो स्टेशन से नमो भारत स्टेशन जाने पर दोबारा चेकिंग की झंझट से मुक्ति मिलने वाली है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) और दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन (डीएमआरसी) मिलकर इस दिशा में काम कर रहे हैं। पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर आनंद विहार में ऐसी व्यवस्था करने पर विचार किया जा रहा है।

दिल्ली। नमो भारत ट्रेन से उतरे यात्री को मेट्रो स्टेशन जाने पर दोबारा चेकिंग न करानी पड़े और इसी तरह मेट्रो ट्रेन के यात्री नमो भारत स्टेशन जा सकें, ऐसी व्यवस्था बनाने की तैयारी चल रही है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) और दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन (डीएमआरसी) के अधिकारी मिलकर इस दिशा में मंथन कर रहे हैं।

पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर आनंद विहार में ऐसी व्यवस्था करने पर विचार किया जा रहा है। अंदर ही अंदर नमो भारत स्टेशन से मेट्रो स्टेशन के बीच चेकिंग प्वाइंट के पार सीधे आटोमैटिक फेयर कलेक्शन (एएफसी) गेट तक आवागमन के लिए रास्ता बनाने की संभावना तलाशी जा रही है। इसमें सफलता मिली तो यात्रियों एक से दूसरे स्टेशन जाने पर दोबारा चेकिंग नहीं करानी होगी, उनका समय बचेगा।

नमो भारत स्टेशन पर दोबारा जांच करानी पड़ती है

अभी यात्री चेकिंग के बाद नमो भारत ट्रेन में सवार होते हैं, लेकिन जब यात्री उतर कर दूसरी जगह जाने को मेट्रो स्टेशन पर जाते हैं तो उन्हें वहां पर दोबारा अपनी और सामान की जांच करानी पड़ती है। फिर वह मेट्रो स्टेशन के एएफसी गेट तक पहुंचते हैं। ऐसा ही मेट्रो ट्रेन के यात्रियों को नमो भारत स्टेशन पर दोबारा जांच करानी पड़ती है। क्योंकि यात्री एक स्टेशन से बाहर निकलने के बाद दूसरे पर जाते हैं।

चेकिंग के लिए लगनी पड़ती है लंबी लाइन

दोनों स्टेशनों के बीच ऐसा कोई रास्ता नहीं बना, जिससे अंदर ही अंदर आवागमन संभव कर सकें। आनंद विहार जैसे बड़े मेट्रो स्टेशन पर चेकिंग की लंबी लाइन लगती है। सुबह और शाम को भीड़ इतनी अधिक होती है कि यात्री को चेकिंग के लिए लाइन में पांच से दस मिनट तक का इंतजार करना पड़ता है। मल्टी मॉडल अवधारणा में इसे अवरोध की तरह देखा जा रहा है।

सीधे एएफसी गेट तक एंट्री देने की कवायद

इस कारण अब विचार किया जा रहा है कि एक से दूसरे ट्रेन माध्यम में सफर करने वाले यात्रियों को ऐसा रास्ता प्रदान किया जाए कि स्टेशनों के बीच आवागमन के लिए उन्हें चेकिंग की प्रक्रिया से न गुजरना पड़े और उन्हें सीधे एएफसी गेट तक एंट्री मिल जाए। फिर एएफसी गेट से नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड या टिकट क्यू आर कोड टैप कर वह प्लेटफार्म जा सकें।

आनंद विहार पर दोनों स्टेशनों का कॉनकोर्स लेवल आपस में जुड़ा

इसके लिए एक साथ दोनों ट्रेन माध्यमों का टिकट जारी करने के प्रावधान को भी लागू किया जा सकता है। एनसीआरटीसी के एक अधिकारी ने बताया कि आनंद विहार पर दोनों स्टेशनों का कॉनकोर्स लेवल आपस में जुड़ा है, इसलिए पायलट प्रोजेक्ट के रूप में इस पर प्रयोग करने पर विचार किया जा रहा। सफलता मिलने पर बाकी न्यू अशोक नगर और गाजियाबाद में भी ऐसा किया जा सकता है।

विष्णु कौन है ?

इस चित्रण में विष्णु को एक इंसान के रूप बनाया गया था, या भारतीय प्राचीन ऋषियों द्वारा मानव जाति के लिए इस परम निरपेक्ष चेतना को समझने के लिए यह चित्र नियोजित किया गया था, । हम इस चित्रण के प्रत्येक पहलू का विश्लेषण करते हैः

1. विष्णु लीलाधर हैं - सत (विष्णु - परम निरपेक्ष चेतना) स्वयं को चित (शिव - कूटस्थ चेतना) और आनंद (ब्रम्हा - ब्रम्ह चेतना) में विभाजित करता है, अतः विष्णु और शिव दोनो ही पारब्रम्ह हैं, परन्तु अन्तर इतना ही है कि वह सत्जो ब्रम्ह (ॐ) में निहित होते हुए भी असलंग्न है कूटस्थ कहलाता है और जो ब्रम्ह की परिधि में नही है, परम कहलाता है। सच तो यह है कि सर्वस्व भेदरहित चैतन्य है। सत्ही लीला का जनक है इसलिए पुराणों में विष्णु को लीलाधर का नाम भी मिला है।

2. विष्णु के दो हाथ आगे एवं दो पीछे - अर्थात परम चेतना द्वारा सम्पन्न द्वंदरूपी कार्य (सृष्टि) प्राकट्य (सामने) और अप्राकट्य (पीछे) भी हैं। यानि अपरा एवं परा प्रकृति।

3. विष्णु – अर्थात सर्वव्यापी।

4. विष्णु का नीला वर्ण - अर्थात ब्रम्ह तत्व को धारण करना। इसलिए सनातन धर्म में भगवान का वर्ण नीला या श्यामल दिखाते हैं। नीले, स्याही और बैंगनी रंग की आवृत्तियां इद्रंधनुष में सूक्ष्मतर होती हैं। अतः इनको देवत्व दर्शाने में प्रयोग करते हैं। जीव के भ्रूमध्य में जब नीली ज्योति का दर्शन होने लगता है तो वह सच्चिदानंद के द्वार पर पहुँच जाता है यानि आनंदमय स्वरूप को प्राप्त होता है।

5. विष्णु का हाथ के सहारे नेत्र मूंदे लेटना - अर्थात परमेश्वर की चेतना ही लीला रचती है। वह चेतना कभी सोती नही है अपितु सदैव जागरुक रहती है।. समस्त दृश्रयम्और अदृश्रयम्, परम निराकार चेतना की ही अभिव्यक्ति है, जो हर साकार रुपी सक्षम अणु में व्याप्त है।

6. विष्णु का अनन्त या शेषनाग की कुडंलिनी पर लेटना - अर्थात परमेश्वर की चेतना में निहित माया ही अनन्त लीला है एवं उसके ऊपर ही चेतना का वास है। उस परम निराकार चेतना की सृष्टिकल्प-अभिव्यक्ति के अंत में, शेष रहती है मात्र सुप्तावस्थित मायाशक्ति, जो भावी सृष्टिकल्प के प्रतिपादन हेतु, अभिन्न चेतनारूपी कुंडलित स्थितज शक्ति होती है।

7. शेषनाग का सहस्त्रमुखी फन विष्णु के ऊपर - सृष्टिकल्प के आरम्भ में सहस्त्रमुखी (अनंतरूपी) माया पुनः चैतन्यावस्था में आकर विष्णु का आवरण बन जाती है।

8. विष्णु का वाहन गरुड़ पक्षी - गरुड़ सर्पों (माया के अनन्तरूप) का विनाशक एवं पक्षीराज माना जाता है। परम निराकार चेतना गरुड़ पर विराजमान होती है, अर्थात जो व्यक्ति मायाजनित अज्ञान का नाश कर, उसके ऊपर ऊँची स्थायी उड़ान भरना सीख जाता है, परम चेतना उसपर सवार रहती है।

9. विष्णु अर्धनारीश्वर नही हैं - अर्थात परम निरपेक्ष चेतना का अविभाजित सत्एवं अव्यक्त मूर्तरूप।

10. विष्णु के अवतार होना - अर्थात परम निरपेक्ष और निराकार चेतना साकार रूप में अवतरित होती है। वह परमेश्वर दोनों, निराकार और साकार है।

11. विष्णु की पत्नी लक्ष्मी - अर्थात चैतन्यता का "स्थिर भाव" जो सृष्टि का पालनकर्ता है और सृष्टि का यथोचित "पालना" है।

12. विष्णु का क्षीरसागर के मध्य वैकुंठ में वास करना - परम चेतना से उद्भूत होती है माया और उससे उद्भूत होता है परम ज्योतिर्मय सागर या ऐसा समझे कि ज्योतिर्मय सागर ही माया का मूलतः आधार है; प्रकाश ही हर पदार्थ का मूल है।, जिस पर माया प्रकट होती है; और परम एकल चेतना सबके मध्य में, यानि सबकी जनक है। वैकुंठ यानि मन, बुद्धि और अहम्के परे, अचिन्त्य "विषय-विकार रहित" अवस्था।

13. विष्णु के पीछे वाले हाथों में पंचजन्य शंख और सुदर्शन चक्र - अर्थात पंचप्राण, पंचतन्मंत्र एवं पंचमहाभूत और सुदर्शन चक्र अर्थात सृष्टिचक्र का आनंद स्वरूप। विष्णु के आगे वाले हाथों में गदा और कमल - अर्थात शक्ति और नित्यशुद्ध-आत्मा।

14. विष्णु के दो कर्णफूल - द्वंद से ही चेतना की प्रकृति सुशोभित है।

15. विष्णु के गले में बनफूलों की माला और कौस्तुभ - प्रकृति ही चेतना को सुशोभित करती है एवं कौस्तुभ यानि हमारी हर शुद्ध इच्छा परम चेतना के हृदय में वास करती है और उसका पूर्ण होना सुनिश्चित है।

16. विष्णु के सतांन नही - अर्थात चित और आनंद, सत्से उत्पन्न नही होते हैं, अपितु सत्के विभाज्य स्वरूप है।

लक्ष्य के प्रति दृढ़ निश्चयी होते है धनु राशि के जातक....

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी.)

नक्षत्र मंडल में चंद्रमा का गोचर मूल नक्षत्र से लेकर उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रथम चरण तक धनु राशि में होता है। यह पुरुष जाति की, कंचन वर्ण वाली, पूर्व दिशा बली, दृढ़ शरीर वाली, अग्नि तत्व से परिपूर्ण क्षत्रीय वर्ण वाली मानी गई है। कुंडली में धनु से जांघ और पैरो का विचार किया जाता है।

गुण और स्वभाव : धनु राशि के जातक सुंदर, विकसित शरीर वाले, लंबे, हल्के भूरे रंग के बाल वाले होते हैं। इनका माथा चौड़ा तथा भौंहे बड़ी बड़ी होती हैं। इनकी आंखे चमकदार तथा आकर्षित होती है।

धनु राशि के लोग ईमानदार, सत्यवक्ता, ज्ञानी तथा लक्ष्य की प्राप्ति में दृढ़ निश्चियी होते हैं। ये लोग बहुमुखी प्रतिभा वाले, सक्रीय, विनम्र और दयालु होते हैं। कम उम्र में ही इन्हे सांसारिक ज्ञान की प्राप्त कर आध्यात्मिक जगत में यह उन्नति कर लेते हैं। इनसे ली गई सलाह अक्सर लोगो के बहुत काम आती है। गुरु की राशि होने के कारण

इनमे देव शक्ति स्वतः विद्यमान रहती है। इनकी वाणी में ओज तथा आकर्षण शक्ति होती है यही कारण है कि धनु राशि के जातक एक कुशल वक्ता होते हैं। लेकिन कभी कभी यह खुद के लिए लापरवाह तथा जीवन में उदासीन से देखे जाते हैं।

कैरियरः धनु राशि के जातक सफल खिलाड़ी, मंत्री, तीरंदाज, शतरंज खिलाड़ी, बॉक्सर, ज्योतिष, धर्म गुरु, महंत, ट्रस्ट, सोशल वर्कर, सांसद, प्रधान मंत्री, वकील, सिविल तथा कंप्यूटर इंजीनियर, चिकित्सक, वैध, किसान, सलाहकार, मुनीम, मैनेजर, बैंक अधिकारी, वैज्ञानिक, हस्त रेखा विशेषज्ञ, पार्षद, प्रकाशक, दार्शनिक तथा शिक्षक आदि में कैरियर बना कर सफलता प्राप्त करते हैं।

रोगः धनु राशि के जातक यद्यपि स्वस्थ देखे जाते है फिर भी इन्हे कुछ बीमारी से जूझना पड़ सकता है जैसे कि गंजापन, जांघो के रोग, मोटापा, टाइफाइड, लकवा, चिंता, साइटिका, नर्वस ब्रेकडाउन आदि।

भाग्यशाली दिन : रवि, मंगल, बुध और गुरुवार

भाग्यशाली रंग : पीला, लाल और संतरी

भाग्यशाली अंक :1,3,4,6,8,9

शुभ रत्न : पुखराज

उपायः धनु राशि के लोगो को गुरुवार का व्रत तथा भगवान विष्णु की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक गुरुवार को भगवान विष्णु को केले का भोग लगाएं और कपूर से आरती करें। तथा भगवान सूर्य को नित्य अर्ध्य प्रदान करें।

त्रिफला : आयुर्वेद का अनमोल उपहार

नेत्र-प्रक्षलन : एक चम्मच त्रिफला चूर्ण रात को एक कटोरी पानी में भिगोकर रखें। सुबह कपड़े से छानकर उस पानी से आंखें धो लें। यह प्रयोग आंखों के लिए अत्यंत हितकर है। इससे आंखें स्वच्छ व दृष्टि सूक्ष्म होती है। आंखों की जलन, लालिमा आदि तकलीफें दूर होती हैं।

- कुल्ला करना : त्रिफला रात को पानी में भिगोकर रखें। सुबह मंजन करने के बाद यह पानी मुंह में भरकर रखें। थोड़ी देर बाद निकाल दें। इससे दांत व मसूड़े वृद्धावस्था तक मजबूत रहते हैं। इससे अरुचि, मुख की दुर्गंध व मुंह के छाले नष्ट होते हैं।

- त्रिफला के गुनगुने काढ़े में शहद मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है। त्रिफला के काढ़े से घाव धोने से एलोपैथिक- एंटिसेप्टिक की आवश्यकता नहीं रहती। घाव जल्दी भर जाता है।

- गाय का घी व शहद के मिश्रण (घी अधिक व शहद कम) के साथ त्रिफला चूर्ण का सेवन आंखों के लिए वरदान स्वरूप है।

- संयमित आहार-विहार के साथ इसका नियमित प्रयोग करने से मोतियाबिंद, कांचबिंदु-दृष्टिदोष आदि नेत्र रोग होने की संभावना नहीं होती।

- मूत्र संबंधी सभी विकारों व मधुमेह में यह फायदेमंद है। रात को गुनगुने पानी के साथ त्रिफला लेने से कब्ज नहीं रहती है।

मात्रा : 2 से 4 ग्राम चूर्ण दोपहर को भोजन के बाद अथवा रात को गुनगुने पानी के साथ लें।

एक अध्ययन से पता चला है कि त्रिफला का सेवन रेडियोधर्मिता से भी बचाव करता है। प्रयोगों में देखा गया है कि त्रिफला की खुराकों से गामा किरणों के रेडिएशन के प्रभाव से होने वाली अस्वस्थता के लक्षण भी नहीं पाए जाते हैं। इसीलिए त्रिफला चूर्ण आयुर्वेद का अनमोल उपहार कहा जाता है।

सावधानी : दुर्बल, कृश व्यक्ति तथा गर्भवती स्त्री को एवं नए बुखार में त्रिफला का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि दूध का सेवन करना हो तो दूध व त्रिफला के सेवन के बीच 2 घंटे का अंतर रखें।

चौदह दिनों तक चीनी छोड़ने के फायदे

14 दिनों तक चीनी छोड़ देने से शरीर में चीनी की कमी नहीं होगी, क्योंकि शरीर में पहले से ही ऊर्जा के लिए आवश्यक कार्बोहाइड्रेट होते हैं, जो चीनी के अलावा अन्य खाद्य पदार्थों से प्राप्त होते हैं।

चीनी कम खाने से जुड़ी कुछ और बातें

1. चीनी कम खाने से शरीर में अतिरिक्त कैलोरी जमा नहीं होती।
2. चीनी कम खाने से सूजन और कब्ज़ जैसी समस्याएं नहीं होती।
3. चीनी कम खाने से कोलेस्ट्रॉल लेवल कंट्रोल में रहता है।
4. चीनी कम खाने से दांतों की समस्याएं जैसे कैविटीज़ और मसूड़ों की बीमारी नहीं होती।
5. चीनी कम खाने से ओरल हेल्थ में सुधार होता है।

चीनी कम खाने के लिए, ये उपाय अपना सकते हैं सोडा या जूस की जगह पानी, हर्बल चाय या बिना चीनी वाली कॉफ़ी चुनें।

*फलों में नैचुरल स्वीटनर के साथ-साथ फ़ाइबर, विटामिन और खनिज होते हैं।

बैली फैट कम करना चाहते हैं, तो सिर्फ दो हफ्ते के लिए चीनी खाना छोड़ दें, क्योंकि ऐसा करने से आपको बैली फैट कम करने में काफी मदद मिलेगी। ऐसा इसलिए क्योंकि चीनी छोड़ने से आपके लिवर में जमा फैट कम होने लगेगा, जिससे बैली फैट भी कम होगा ऐसे आपका चेहरा पहले के राउंड शेप की तरह ज्यादा नेचुरल शेप में नजर आ जाएगा सात में आपकी आंखों के आसपास मौजूद पफीनेस और फ्लूइड रिटेंशन कम हो जाती है। इसकी वजह से आपकी आंखें कम सूजी हुई नजर आएगी।

ब्लैक फॉरेस्ट केक डे

अक्सर, बेकर्स ब्लैक फॉरेस्ट केक बनाने के लिए प्रत्येक परत के बीच व्हीप्ड क्रीम और चेरी के साथ चॉकलेट केक की कई शीट बिछाते हैं। फिर वे केक को व्हीप्ड क्रीम, मैराशिनो चेरी और चॉकलेट शेविंग्स से सजाते हैं। कुछ पारंपरिक व्यंजनों में परतों के बीच खट्टी चेरी और केक में किर्शवासेर (खट्टी चेरी से आसुत एक स्पष्ट शराब) मिलाने की बात कही जाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, बेकर्स आमतौर पर शराब का उपयोग नहीं करते हैं। हालाँकि, जर्मनी में, शराब एक अनिवार्य घटक है। अन्यथा, केक को कानूनी रूप से श्वार्ज़वाल्डर किर्शटोर्टे नाम से नहीं बेचा जा सकता है। इस केक का नाम दक्षिण-पश्चिमी जर्मनी के ब्लैक फॉरेस्ट (श्वार्ज़वाल्ड) पर्वत श्रृंखला के क्षेत्र की विशेष शराब (श्वार्ज़वाल्डर किर्श्वासर) के नाम पर रखा गया है। केक के इतिहास से परे, बेकर्स और पेस्ट्री शेफ ब्लैक फॉरेस्ट केक बनाते समय शानदार प्रदर्शन करते हैं। विपरीत रंग और बोल्ड लाल चेरी के साथ समृद्ध चॉकलेट की परतों का संयोजन बेकर्स को उल्लेखनीय टुकड़े डिजाइन करने का अवसर प्रदान करता है। उनकी शानदार व्याख्याएँ हमें शानदार यादें और आनंद लेने के लिए केक का एक मीठा टुकड़ा भी देती हैं।

ब्लैक फॉरेस्ट केक दिवस कैसे मनाएं? अपनी पसंदीदा बेकरी पर जाएं और घर ले जाने के लिए स्वादिष्ट ब्लैक फॉरेस्ट केक का ऑर्डर दें।

राष्ट्रीय ब्लैक फॉरेस्ट केक दिवस का इतिहास

नेशनल डे कैलेंडर इस केक हॉलिडे की उत्पत्ति पर शोध जारी रखता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम निश्चित रूप से केक का स्वाद चखने का आनंद लेते हैं!

भगवान शंकर का चरणोदक तथा प्रसाद लेना चाहिए या नहीं ?

इस सम्बंध में कहीं-कहीं ऐसी धारणा बन गई है कि शंकर जी का प्रसाद तथा चरणोदक नहीं ग्रहण करना चाहिए। हालांकि यह किसी शिवद्रोही द्वारा किया गया दुष्प्रचार मात्र है, फिर भी इसपर एक शास्त्रीय विमर्श की आवश्यकता है :----

भोजन से पहले प्रत्येक द्विजाति तथा संन्यासी को ब्रह्मार्पण करने से पूर्व अन्न दोष की निवृत्ति के लिए यह मन्त्र पढ़ना चाहिए "

"अन्नं ब्रह्म रसं विष्णुर्भोक्तादेवो महेश्वरः।

एवं ध्यात्वा द्विजोभुङ्क्ते अन्न दोषैर्न लिप्यते।।"

【चार प्रकार का अन्न ब्रह्मा है, छः प्रकार का स्वाद विष्णु है, भोग लगाने वाले भोक्ता शिव है, ऐसे ध्यान करके भोजन करने वाला द्विज अन्न दोष से लिप्त नहीं होता।】

इससे सिद्ध होता है कि भोग लगाने वाले एकमात्र शंकर ही हैं।

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में जितने भी जीव है, समस्त जीव शिव की कृपा से ही अपने-अपने खाद्य एवं पेय पदार्थ खाते-पीते हैं।

शंकर से सब शक्ति प्राप्त करते हैं, संहार के देवता शंकर हैं, भोजन भी संहार क्रिया है।

किसी भी देवी-देवता के मंदिर में ब्रह्मा, विष्णु, हनुमान, भैरव, दुर्गा, महाकाली आदि समस्त देवी-देवता शिव रूप धारण किये बिना भोग नहीं लगाते।

वे भोग लगाते समय अपने रूप को त्यागकर शिव रूप धारण करते हैं, इसीलिए मन्दिर के पुजारी भोग लगाते समय पर्दा करते हैं।

इससे सिद्ध हुआ कि प्रत्येक देवता का प्रसाद शिव का ही प्रसाद है, अतः शंकर के भोग से कोई नहीं बच सकता।

यदि कोई कहे कि शंकर जी के लाट पर चढ़ी जल नहीं ग्रहण करना चाहिए, तो उनके मस्तक पर तो गंगाजी भी चढ़ी हैं, फिर तो उसे गोमुख से लेकर गंगासागर तक कहीं भी स्नान आदि नहीं करना चाहिए।

देवताओं का पूजन गंगा जल से न करो तथा गंगाजल से जिन प्रान्तों की सिंचाई होती है, उनमें पैदा होने वाले अन्न, फल का भी सेवन न करो यदि शिव-पादोदक से इतनी ही आपत्ति है तो !

इतना ही नहीं ! भागवत के आठवें स्कन्ध में समुद्र मंथन के बाद अमृत निकलने पर जब विष्णु भगवान् ने मोहिनी रूप धारण कर देवताओं को अमृत पिलाया, असुरों को मोहित किया, फिर भगवान् अंतर्ध्यान हुये।

तब शिवजी की प्रार्थना पर भगवान् ने उनको मोहिनी रूप दिखाया, उस रूप को देखकर शंकर जी के तेज से खनिज- सोना-चांदी आदि उत्पन्न हुए, उनका भी उपयोग फिर तो नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ये भी तो शंकर जी से उत्पन्न हुए हैं !

कुल मिलाकर बात यह कि शंकर जी का चरणोदक तथा प्रसाद का परित्याग करके कोई प्राणी जीवन धारण नहीं कर सकता।

शिव जी के प्रसाद ग्रहण करने की

प्रशंसा शिवपुराण के विद्येश्वर संहिता का २२वां अध्याय में इस प्रकार किया गया है

"दृष्टवापि शिवनैवेद्यं यान्ति पापानि दूरतः।

भुक्त्वा तु शिवनैवेद्यं पुण्यान्यायान्ति कोटिशः।।

अलं याग सहस्रेण ह्यलं यागार्बुदैरपि।

भक्षिते शिव नैवेद्ये शिवसायुज्यमाप्नुयात।।

आगतं शिवनैवेद्य गृहीत्वा शिरसा मुदा।

भक्षणीयं प्रयत्नेन शिवस्मरण पूर्वकम्।।

न यस्य शिव नैवैद्ये ग्रहणेच्छा प्रजायते।

स पापिष्ठो गरिष्ठः स्यान्नरकं यात्यपि ध्रुवम्।।"

अर्थ== शिव प्रसाद देखने मात्र से पाप दूर हो जाते हैं तथा सेवन से करोड़ों पुण्य प्राप्त होते हैं। हजारों तथा करोडों यज्ञादिकों से क्या लाभ है ! भक्त तो एकमात्र शिव प्रसाद के भक्षण से ही शिव-सायुज्य प्राप्त करता है। प्राप्त किये हुये शिव-नैवेद्य को प्रसन्नचित्त से सिर झुकाकर शिव का स्मरण करते हुए लेना चाहिए। जिसकी शिव-प्रसाद ग्रहण करने की इच्छा नहीं होती, वह पापियों में महापापी नरक को प्राप्त करता है।₹भगवान् शंकर का चरणोदक तथा प्रसाद लेना चाहिए या नहीं ?₹ इस सम्बंध में कहीं-कहीं ऐसी धारणा बन गई है कि शंकर जी का प्रसाद तथा चरणोदक नहीं ग्रहण करना चाहिए। हालांकि यह किसी शिवद्रोही द्वारा किया गया दुष्प्रचार मात्र है, फिर भी इसपर एक शास्त्रीय विमर्श की आवश्यकता है :-- इतना ही नहीं ! भागवत के आठवें स्कन्ध में समुद्र मंथन के बाद अमृत निकलने पर जब विष्णु भगवान् ने मोहिनी रूप धारण कर देवताओं को अमृत पिलाया, असुरों को मोहित किया, फिर भगवान् अंतर्ध्यान हुये।

तब शिवजी की प्रार्थना पर भगवान् ने उनको मोहिनी रूप दिखाया, उस रूप को देखकर शंकर जी के तेज से खनिज- सोना-चांदी आदि उत्पन्न हुए, उनका भी उपयोग फिर तो नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ये भी तो शंकर जी से उत्पन्न हुए हैं !

कुल मिलाकर बात यह कि शंकर जी का चरणोदक तथा प्रसाद का परित्याग करके कोई प्राणी जीवन धारण नहीं कर सकता।

शिव जी के प्रसाद ग्रहण करने की प्रशंसा शिवपुराण के विद्येश्वर संहिता का २२वां अध्याय में इस प्रकार किया गया है

"दृष्टवापि शिवनैवेद्यं यान्ति पापानि दूरतः।

भुक्त्वा तु शिवनैवेद्यं पुण्यान्यायान्ति कोटिशः।।

अलं याग सहस्रेण ह्यलं यागार्बुदैरपि।

भक्षिते शिव नैवेद्ये शिवसायुज्यमाप्नुयात।।

आगतं शिवनैवेद्य गृहीत्वा शिरसा मुदा।

भक्षणीयं प्रयत्नेन शिवस्मरण पूर्वकम्।।

न यस्य शिव नैवैद्ये ग्रहणेच्छा प्रजायते।

स पापिष्ठो गरिष्ठः स्यान्नरकं यात्यपि ध्रुवम्।।"

अर्थ== शिव प्रसाद देखने मात्र से पाप दूर हो जाते हैं तथा सेवन से करोड़ों पुण्य प्राप्त होते हैं। हजारों तथा करोडों यज्ञादिकों से क्या लाभ है ! भक्त तो एकमात्र शिव प्रसाद के भक्षण से ही शिव-सायुज्य प्राप्त करता है। प्राप्त किये हुये शिव-नैवेद्य को प्रसन्नचित्त से सिर झुकाकर शिव का स्मरण करते हुए लेना चाहिए। जिसकी शिव-प्रसाद ग्रहण करने की इच्छा नहीं होती, वह पापियों में महापापी नरक को प्राप्त करता है।

जिन शिवलिंगो के प्रसाद पर चण्ड का अधिकार है उनके ग्रहण का निषेध शास्त्रो मे है बाकि का नही।

मंत्र तो बिना सिद्ध किए प्रभावी नहीं होते फिर पवित्रीकरण मंत्र 'ओम अपवित्र पवित्रो वा' बिना सिद्ध किए कैसे प्रभावी होता है?

यह स्नान का मंत्र है। स्नान के साथ यदि मंत्र का जाप भी किया जाए तो स्नान का फल कई गुणा अधिक बढ़ जाता है। शास्त्रों में शामिल किए गए 'स्नानम मंत्र' का जाप अत्यंत लाभकारी है। इस मंत्र का यदि पूर्ण मन से ध्यान लगाकर जाप जाए तो यह शारीरिक एवं अन्य सभी अशुद्धियों को साफ करता है। शास्त्रों के अनुसार वर्णित ''स्नान मंत्र' है – ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभंतरः शुचिः।। इस मंत्र का अर्थ है – कोई भी मनुष्य जो पवित्र हो, अपवित्र हो या किसी भी स्थिति को प्राप्त क्यों न हो, जो भगवान पुण्डरीकाक्ष का स्मरण करता है, वह बाहर-भीतर से पवित्र हो जाता है। भगवान पुण्डरीकाक्ष पवित्र करें। हिन्दू धर्म में पुण्डरीकाक्ष भगवान विष्णु का उल्लेख करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। भगवान विष्णु ही जल के देवता हैं तथा यदि कोई उनका जाप करते हुए स्नान करता है तो विष्णु उसे सभी संसारिक पापों से मुक्त कर देते हैं। भगवान विष्णु के साथ उस व्यक्ति को विष्णु की पत्नी मां लक्ष्मी का भी आशीर्वाद मिलता है। धन की देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करने से व्यक्ति के जीवन में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आती। नियमित रूप से स्नान करने के बाद हिन्दू धर्म में पुरोहित द्वारा व्यक्ति के हाथों में गंगा जल अर्पित किया जाता है, जिसे मंत्र का जाप करते हुए ही ग्रहण करना चाहिए।

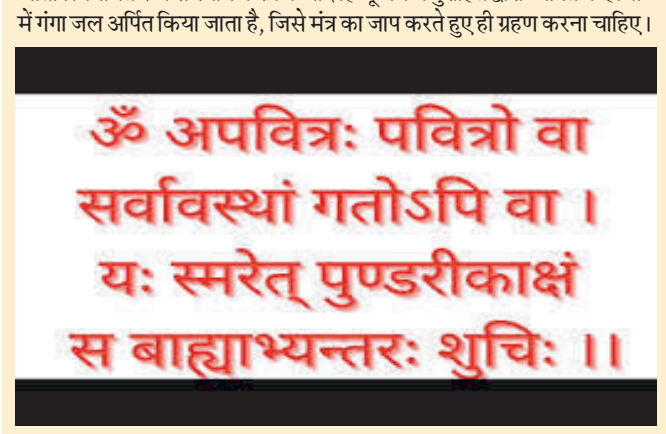

'जन्म से लेकर मरण तक टैक्स ही टैक्स', सांसद राघव चड्ढा ने लोगों पर टैक्स के बढ़ते बोझ का बयां किया दर्द

आम आदमी पार्टी (AAP) सांसद राघव चड्ढा ने गुरुवार को राज्यसभा में कर व्यवस्था को लेकर सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भारत में नागरिकों को जीवन के हर चरण में टैक्स देना पड़ता है- जन्म से लेकर मृत्यु तक। चड्ढा ने सवाल उठाया कि भारी-भरकम कर भुगतान के बावजूद नागरिकों को विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवा शिक्षा और बुनियादी ढांचा क्यों नहीं मिल पा रहा है।

नईदिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के सांसद राघव चड्ढा ने गुरुवार को राज्यसभा में भारत की कर प्रणाली पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने जीवन के हर चरण में करों के बोझ को स्पष्ट करते हुए कहा कि जन्म से लेकर मृत्यु तक सरकार नागरिकों की मदद करने के बजाय उन पर टैक्स लगाती है। चड्ढा ने यह भी पूछा कि क्या नागरिकों को उनके द्वारा दिए गए करों के बदले विश्व स्तरीय स्वास्थ्य, शिक्षा या बुनियादी ढांचा मिलता है?

चड्ढा ने कहा, "जीवन में दो चीजें निश्चित हैं- मृत्यु और कर। जैसे ही बच्चा जन्म लेता है, उसे दी जाने वाली वैक्सीन पर 5% जीएसटी लगता है। अगर अस्पताल का कमरा 5,000 रुपये से अधिक का है, तो उस पर भी 5% जीएसटी देना पड़ता है। शिशु देखभाल उत्पादों और मिठाइयों पर भी 5% जीएसटी लागू होता है।"

राज्यसभा सांसद ने कहा कि विश्व गुरु बनने आए थे लेकिन टैक्स गुरु बनकर रह गए हैं। जनता इतना टैक्स सरकार को देती है लेकिन टैक्स के बदले जनता को क्या मिलता है?

क्या जनता को क्वालिटी हेल्थ केयर मिलती है?

क्या बच्चों को वर्ल्ड क्लास शिक्षा मिलती है?

क्या 24 घंटे बिजली मिलती है?

क्या वर्ल्ड क्लास सड़कें मिलती हैं?

आखिर जनता जो इतना टैक्स देती है, उसका केंद्र सरकार करती क्या है?

बचपन में कई चीजों पर देना होता है टैक्स

उन्होंने बचपन के चरण का जिक्र करते हुए कहा कि बेबी फूड पर 12-18%, डायपर और खिलौनों पर 12%, और मुंडन जैसी सेवाओं पर 18% जीएसटी लगता है। स्कूल यूनिफॉर्म, जूते, नोटबुक (12% जीएसटी) और स्टेशनरी (18% जीएसटी) भी कर के दायरे में आते हैं।

किशोरावस्था में हर चीजों पर देना होता है टैक्स

किशोरावस्था में स्मार्टफोन, रिचार्ज, इंटरनेट, नेटफ्लिक्स, और मूवी टिकट पर जीएसटी लागू होता है। पहली बाइक या स्कूटर पर भी कर देना पड़ता है। उच्च शिक्षा में निजी कॉलेज की फीस, हॉस्टल, और छात्र ऋण पर जीएसटी लगता है। करियर शुरू होने पर टीडीएस और आयकर कटता है, रेस्तरां बिल और बीमा प्रीमियम पर भी कर लागू होता है।

रिटायरमेंट में पेंशन और दवाइयों पर कर का भार

मध्यम आयु में आय बढ़ने के साथ आयकर, कार पर जीएसटी, ईंधन पर वैट, और संपत्ति कर का बोझ बढ़ता है। रिटायरमेंट में पेंशन, ब्याज आय, स्वास्थ्य बिल, दवाइयों, और वसीयत के कानूनी शुल्क पर भी कर लगता है। चड्ढा ने तंज कसते हुए कहा कि सरकार हर कदम पर कर वसूलती है, लेकिन नागरिकों को उसके बदले क्या मिलता है, यह सवाल अभी भी बना हुआ है।

भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण मामले में सुप्रीम कोर्ट ने लगाई हरियाणा सरकार को कड़ी फटकार

- सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी हरियाणा सरकार ने कोर्ट द्वारा गठित विशेष जांच टीम को उपलब्ध नहीं कराये संसाधन

नई दिल्ली/चण्डीगढ़/हिसार

25 मार्च को हुई सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट की बेंच भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण के मामले में हरियाणा सरकार के नकारात्मक रवैए से नाराज नजर आई तथा हरियाणा सरकार के वकील को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित विशेष जांच टीम के बार-बार अनुरोध के बावजूद भी हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव जांच टीम को जांच के लिए समुचित संसाधन व सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं।

बेंच ने कहा कि हरियाणा सरकार की मंशा इस मामले में टीम का सहयोग करने की नहीं लग रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार के वकील को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर विशेष जांच टीम को भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण में जांच के लिए जरूरी संसाधन व सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराए गए तथा उनका सहयोग नहीं किया गया तो इसे अदालत की अवमानना समझा जाएगा। अदालत हरियाणा के मुख्य सचिव को तलब करेगी और उनके खिलाफ अवमानना की कार्रवाई चलाई जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट की कड़ी फटकार के बाद हरियाणा सरकार ने कोर्ट को आश्वासन दिया कि विशेष जांच टीम को हर तरह का सहयोग दिया जाएगा तथा उन्हें जांच के संबंध में यात्राएं तथा ठहराव वगैरह के लिए समुचित संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे।

पिछली सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के दो पूर्व पुलिस महानिदेशकों के नेतृत्व में एक विशेष जांच टीम का गठन कर मामले की पुनः जांच के आदेश दिए थे तथा टीम को निर्देश दिए थे कि इस मामले में पूरे प्रकरण की पुनः जांच कर तीन माह में कोर्ट के समक्ष रिपोर्ट पेश करें।

सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार को भी आदेश दिए थे कि इस मामले में विशेष जांच टीम को यात्रा, ठहराव अन्य सभी साधन सहित हर संभव सहायता उपलब्ध करवाई जावे।

परंतु जांच टीम द्वारा बार-बार हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव को पत्र लिखे जाने के बावजूद भी हरियाणा सरकार द्वारा विशेष जांच टीम के अनुरोध पर कोई कार्रवाई नहीं की गई तथा ना ही उनके पत्रों के जवाब दिए गए जिसके चलते पीड़ित पक्ष ने सुप्रीम कोर्ट में हरियाणा सरकार के खिलाफ एक अन्य याचिका दायर की गई, जिसमें हरियाणा सरकार पर आरोप लगाए की हरियाणा सरकार इस मामले में जानबूझकर विशेष जांच टीम का सहयोग नहीं कर रही है तथा उन्हें जांच के लिए संसाधन उपलब्ध नहीं करा रही है।

छह सप्ताह के बाद इस मामले की पुन सुनवाई होगी तथा इस दौरान जांच कमेटी अपनी रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट के सामने रख सकती है।

देवेन्द्र यादव ने रिक्त 12 दिल्ली नगर निगम वार्डों के उप चुनावों में संगठन मजबूती और जीत की रणनीति के लिए बैठक की

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नईदिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने आज दिल्ली नगर निगम उप चुनाव के लिए रणनीति तय करने हेतू एक महत्वपूर्ण बैठक ली। दिल्ली कांग्रेस चुनाव आयोग से मांग करती है कि दिल्ली नगर निगम उपचुनाव जल्द से जल्द कराए जाए क्योंकि दिल्ली की जनता को प्रतिदिन की समस्याओं को सुलझाने के लिए निगम पार्षदों से सम्पर्क करना होता है। लोकसभा और विधानसभा चुनाव में 12 निगम पार्षद चुनाव जीतने के बाद 12 वार्ड रिक्त हो गए है और उन पर उपचुनाव होना है। इन वार्डों पर उप चुनाव में कांग्रेस संगठन की मजबूत स्थिति बनाने के लिए बैठक में निगम उपचुनावों के लिए कांग्रेस नेता मौजूद रहे।

बैठक में प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के अलावा दिल्ली के पूर्व मंत्री डा0 नरेन्द्र नाथ, कम्युनिकेशन विभाग के चेयरमैन एवं पूर्व विधायक श्री अनिल भारद्वाज व प्रदेश प्रशासनिक अधिकारी जतिन शर्मा, सतेन्द्र शर्मा, मौहम्मद उस्मान, हर्ष चौधरी, जे.पी. पंवार, नीतू वर्मा, राजेश गर्ग, प्रवीण कुमार, चन्द्रकांत गिरी और चरणजीत राय मौजूद थे। जिनके साथ दिल्ली नगर निगम उप चुनाव पर चर्चा हुई।

उन्होंने कहा कि सत्ता हथियाने के लिए भाजपा और आम आदमी पार्टी के बीच लगातार नूरा कुश्ती के कारण पिछले दो वर्षों से निगम का कामकाज ठप्प पड़ा है, कांग्रेस कार्यकर्ताओं को इनके आपसी संघर्ष को उजागर करने के लिए लोगों के बीच सच्चाई को बताना होगा कि भाजपा और आम आदमी पार्टी की नियमित लड़ाई ने शहर के सभी विकास कार्य ठप्प कर दिए है। उन्होंने कहा कि समय परिवर्तन को देखते हुए निगम वार्डों पर मजबूत उम्मीदवारों के साथ जीत का लक्ष्य साधकर काम करने की जरुरत है। निगम वार्ड का चुनाव छोटा होता है और विधानसभा में भाजपा की जीत के बाद भी लोग कांग्रेस की चर्चा करते है, कांग्रेस कार्यकर्ताओं को सिर्फ मजबूत से अपना पक्ष रखने की जरुरत है, हम उपचुनाव में जीत दर्ज करा सकते है।

अलर्ट! नया सरकारी प्लान।

जातिवादी गुंडो व जातिवादी पुलिस के गठजोड़ द्वारा दलितों पर अत्याचार के मामले में दर्ज कराए गए मुकदमो की धार को कुंठित करने के लिए मौजूद सरकार की मूक सहमती से तैयार की गई कुछ नई चाले !

पुलिस द्वारा घटना के बाद आरोपी जातिवादी गुंडो से ही पीड़ितों के खिलाफ शिकायत दिला दी जाती है जिसमें पीड़ित समाज के लोगों पर आरोप लगाया जाता है कि वह एससी एसटी एक्ट का मुकदमा दर्ज करने की धमकियां दे रहे हैं।

पीड़ित दलितों के खिलाफ आरोपी पक्ष अपने घर के नाबालिक लड़कियों से पोक्सो एक्ट के तहत झूठी दरखास्त दिलाने का काम करते हैं ताकि समझौते का माहौल तैयार हो सके।

पीड़ित दलित समाज के लोगों के खिलाफ काउंटर झूठे आरोपों में 379बी आईपीसी के तहत मुकदमा दर्ज कराया जाता है, जिसमें 10 साल तक की सजा है इसमें कीमती सामान की छीना झपटी के झूठे आरोप लगाए जाते हैं।

जातिवादी लोगो द्वारा अपने ही परिवार की महिलाओं से छेड़खानी के झूठे आरोप भी लगाने का प्रचलन बढ़ गया है ताकि समझौते के लिए मजबूर किया जा सके। हमें पुलिस और जातिवादी गुंडो की चालों को समझना होगा तथा अपने लिए बने कानून और अधिकारों की रक्षा स्वयं करनी होंगी क्योंकि मौजूदा सरकार आपके संवैधानिक अधिकारों व आपकी रक्षा के लिए बने कानूनों को खत्म करने पर तुली हुई है।

"कुआँ सूखने पर ही पता चलता है पानी की कीमत"

कहावत ₹जब तक कुआँ सूख नहीं जाता, हमें पानी की कीमत का पता नहीं चलता₹ हमें इस बात की याद दिलाती है कि हमें अपने जीवन और संसाधनों के प्रति जागरूक और कृतज्ञ रहना चाहिए। चाहे वह जल हो, प्रेम हो, स्वतंत्रता हो या स्वास्थ्य, हमें इनका सम्मान और संरक्षण करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए वे उपलब्ध रह सकें। मनुष्य अक्सर किसी चीज़ का वास्तविक मूल्य तब तक नहीं समझता जब तक वह खत्म नहीं हो जाती। एक गाँव के सूखते झरने की कहानी के माध्यम से यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि कैसे प्रचुरता हमें आत्मसंतुष्ट बना देती है और कमी हमें जागरूक करती है।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

एक सुदूर घाटी में बसे गांव में एक झरना था जिसे जीवन धारा कहा जाता था। पीढ़ियों तक ग्रामीणों ने इसका उपयोग किया, लेकिन जब आधुनिक सुविधाएं आईं, तो यह उपेक्षित हो गया। एक साल, भीषण सूखे ने झरने को सुखा दिया, और तभी ग्रामीणों को इसकी कीमत का एहसास हुआ। यह कहानी दर्शाती है कि हम अक्सर किसी चीज़ के महत्व को तब तक नहीं समझते जब तक वह खत्म नहीं हो जाती। पानी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे स्वास्थ्य, संबंध और स्वतंत्रता का प्रतीक है। हम अक्सर मान लेते हैं कि ये हमेशा बने रहेंगे, परंतु जब यह संकट में होते हैं, तभी हम उनकी कीमत समझते हैं। जीवन की क्षणभंगुरता हमें वर्तमान का आदर करने के लिए प्रेरित करती है। जैसे नल से पानी की सतत आपूर्ति को हम सामान्य मानते हैं, वैसे ही हम अपनों, स्वास्थ्य और स्वतंत्रता को भी हल्के में लेते हैं।

जब संसाधन प्रचुर मात्रा में होते हैं, तो हम उनकी कद्र करना छोड़ देते हैं। अरस्तू के नैतिक दर्शन के अनुसार, जागरूकता और संतुलन ही सच्चे गुणों को जन्म देते हैं। भरे कुएं का पानी हमें कृतज्ञ नहीं बनाता, परंतु पानी की कमी हमें उसकी महत्ता सिखाती है। 1930 के दशक की महामंदी ने लोगों को यह समझाया कि संसाधनों की उपलब्धता और कमी का चक्र कैसा होता है। ग्रीक त्रासदियों में अक्सर चरित्रों को जीवन का सच्चा अर्थ तब पता चलता है जब वे सब कुछ खो चुके होते हैं। शेक्सपियर के किंग लियर को प्यार की वास्तविकता तब समझ आई जब वह धोखा खा चुका था। महामारी ने भी हमें सामाजिक मेलजोल की अहमियत सिखाई। मानवता बार-बार संसाधनों का दुरुपयोग करती है और फिर संकट के समय उन्हें बचाने का प्रयास करती है। नीत्शे की शाश्वत पुनरावृत्ति की अवधारणा बताती है कि जब तक हम सच में नहीं सीखते, हम वही गलतियाँ दोहराते हैं। 1930 के डस्ट बाउल संकट ने कृषि को नुकसान पहुँचाया, जिससे सबक लेकर सुधार हुए, लेकिन समय के साथ लोग फिर लापरवाह हो गए।

उपयोगितावादी दर्शन कहता है कि किसी चीज़ का मूल्य उसकी उपयोगिता से निर्धारित होता है। जल की वास्तविक कीमत उसकी उपलब्धता के अनुसार बदलती है। उप-सहारा अफ्रीका में पानी की कमी ने जल संरक्षण के नए समाधान उत्पन्न किए। इसी तरह, जब कोई संसाधन दुर्लभ हो जाता है, तब उसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। जल संकट सिर्फ मानव जीवन ही नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। पारिस्थितिक दर्शन बताता है कि हमें प्रकृति के प्रति जागरूक होना चाहिए। अरल सागर का सूखना इसका उदाहरण है, जिससे सामाजिक और आर्थिक संकट पैदा हुए। यदि हम संसाधनों को संरक्षित नहीं करते, तो हमारा अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। धार्मिक और दार्शनिक परंपराएँ बताती हैं कि वंचना मूल्य की गहरी समझ देती है। रमज़ान के उपवास लोगों को भोजन की कीमत और जरूरतमंदों की स्थिति का एहसास कराते हैं। इसी तरह, कठिनाइयाँ हमें जीवन की असली जरूरतों का महत्व सिखाती हैं।

मानव अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर है, और जल संकट इस निर्भरता को दर्शाता है। फुकुशिमा परमाणु आपदा ने भी दिखाया कि तकनीकी विकास के बावजूद हम प्राकृतिक शक्तियों के आगे असहाय हैं। यह हमें हमारे संसाधनों की सीमाओं का सम्मान करना सिखाता है। पानी जीवन देता है, परंतु बाढ़ और सुनामी जैसी आपदाओं से विनाश भी ला सकता है। ताओवाद के अनुसार, जीवन विरोधाभासों से भरा है, और हमें संतुलन बनाए रखना सीखना चाहिए। विभिन्न संस्कृतियों में जल को शुद्धिकरण का प्रतीक माना जाता है। ईसाई धर्म में बपतिस्मा का जल आत्मा की पुनर्जन्म का संकेत देता है। कुँए का सूखना हमें चेतावनी देता है कि हमें अपने संसाधनों की रक्षा करनी चाहिए। महात्मा गांधी ने कहा था, ₹पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त प्रदान करती है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच को पूरा नहीं कर सकती।₹ भारत में चिपको आंदोलन इस बात का उदाहरण है कि समुदाय मिलकर प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा कर सकता है।

कहावत ₹जब तक कुआँ सूख नहीं जाता, हमें पानी की कीमत का पता नहीं चलता₹ एक गहरी सच्चाई को उजागर करती है। हमें संसाधनों के खत्म होने से पहले उनके महत्व को समझना चाहिए। जल, प्रेम, स्वास्थ्य या स्वतंत्रता—इन सभी को खोने से पहले संजोना चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनका संरक्षण हो सके। पानी सिर्फ एक भौतिक संसाधन नहीं है, बल्कि यह जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं—स्वास्थ्य, रिश्ते और स्वतंत्रता—का प्रतीक भी है। जब ये आसानी से उपलब्ध होते हैं, तो हम उन्हें हल्के में लेते हैं, लेकिन जब वे खतरे में होते हैं या खो जाते हैं, तब हमें उनका महत्व समझ आता है।

ईद के लिए तैयार हों: ऑइलिंग से स्टाइलिंग तक – चमकदार बालों का राज

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली। ईद का त्यौहार नजदीक है, और इस मौके पर सबसे अच्छा दिखना हर किसी की चाहत होती है। चमकदार और स्वस्थ बाल आपके लुक को पूरा करते हैं। ऑइलिंग से लेकर स्टाइलिंग तक, सही हेयर केयर रूटीन आपके बालों को सेहतमंद, चमकीला और त्यौहार के लिए तैयार बनाता है।

अपने बालों की देखभाल की शुरुआत नारियल, विटामिन ई और चमेली के अर्क से भरपूर पौष्टिक तेल से करें। ये तत्व नमी को बनाए रखते हैं, बालों को मजबूती देते हैं और प्राकृतिक चमक लाते हैं। ऐसा हल्का और बिना चिपचिपाहट वाला तेल चुनें जो जल्दी सोख ले और बालों को भारी किए बिना उन्हें मुलायम व सुगंधित बनाए। अगर आप आसान और असरदार तरीका चाहते हैं, तो पैराशूट एडवांस्ड जैस्मिन हेयर ऑइल रूखेपन से लड़ने और चमक बढ़ाने का एक बेहतरीन उपाय है।

पैराशूट एडवांस्ड जैस्मिन हेयर ऑइल आपके बालों को गहराई से पोषण देता है, जिससे वे चिकने और चमकदार बनते हैं। इस नारियल आधारित तेल से सिर की हल्की मालिश न सिर्फ चमक बढ़ाती है, बल्कि आपकी इंद्रियों को भी तरोताजा करती है। मालिश के बाद तेल को करीब 30 मिनट तक रहने दें, फिर हल्के शैम्पू से धो लें। इसके बाद अपनी पसंद के हिसाब से स्टाइल करें – पोषित बालों को सँवारना अब बेहद आसान हो जाएगा।

अतिरिक्त चमक और शानदार लुक के लिए हल्के तेल का इस्तेमाल करें। तेल लगाकर उंगलियों से बालों को हल्के से सँवारें – प्राकृतिक चमक तुरंत नजर आएगी। चाहे आप मुलायम कर्ल्स, सीधे बाल, लहरदार स्टाइल या पारंपरिक चोटी चुनें, स्वस्थ और पोषित बाल हर स्टाइल को बेहतर बनाते हैं और ईद के जश्न के लिए चमक बिखेरते हैं।

ईद के इस खास मौके पर अपने बालों को त्यौहार का हिस्सा बनने दें। आत्मविश्वास के साथ पोषण दें, स्टाइल करें और चमक बिखेरें!

संवेदनहीन न्याय? बार-बार समाज को झकझोरते सवेंदनहीन, अमानवीय फैसले

क्या हमारी न्याय प्रणाली यौन अपराधों के मामलों में और अधिक संवेदनशील हो सकती है? या फिर ऐसे सवेंदनहीन, अमानवीय फैसले बार-बार समाज को झकझोरते रहेंगे? यह मामला न्यायपालिका की संवेदनशीलता और यौन अपराधों के खिलाफ कड़े कानूनों की प्रभावशीलता पर सवाल उठाता है। महिला संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने फैसले का विरोध किया, जिससे सोशल मीडिया पर #JusticeForVictims और #JudiciaryReform जैसे हैशटैग ट्रेंड करने लगे। यह जरूरी है कि न्याय व्यवस्था सिर्फ कानूनी पहलुओं पर नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक आधारों पर भी फैसले ले, ताकि पीड़ितों को न्याय मिले और अपराधियों को कड़ा संदेश जाए।

प्रियंका सौरभ

17 मार्च को इलाहाबाद हाई कोर्ट ने एक ऐसा फैसला सुनाया, जिसने कानूनी गलियारों से लेकर आम जनता तक सभी को हैरान कर दिया। मामला था नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म की कोशिश का, लेकिन कोर्ट ने आरोपी को जमानत देते हुए कुछ ऐसी टिप्पणियाँ कर दीं, जिन पर बवाल मच गया। देखते ही देखते यह मामला गरमाया और सुप्रीम कोर्ट को दखल देना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट ने तुरंत एक्शन लेते हुए हाई कोर्ट की विवादास्पद टिप्पणियों पर रोक लगा दी और यूपी सरकार व केंद्र सरकार से जवाब मांग लिया। अब यह मामला और भी दिलचस्प हो गया है, क्योंकि यह सिर्फ एक कानूनी लड़ाई नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का विषय भी बन चुका है।

विवाद की जड़ क्या थी?

हाई कोर्ट के फैसले में कहा गया कि पीड़िता के निजी अंग पकड़ना और नाड़ा खोलने की कोशिश करना 'दुष्कर्म की कोशिश' की परिभाषा में नहीं आता। बस, यही बयान आग में घी डालने जैसा साबित हुआ! कानून के जानकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और आम जनता ने इस पर सवाल उठाए। कई लोगों ने इसे यौन अपराधों के खिलाफ बनाए गए कड़े कानूनों को कमजोर करने वाला करार दिया। POCSO (Protection of Children from Sexual Offences) एक्ट के तहत दर्ज इस मामले में हाई कोर्ट की टिप्पणी न केवल चौंकाने वाली थी, बल्कि इसने यह संकेत भी दिया कि शायद न्यायपालिका में कुछ बदलावों की जरूरत है।

न्यायपालिका में सुधार की आवश्यकता

यह कोई पहला मामला नहीं है जब न्यायपालिका के किसी फैसले ने विवाद खड़ा किया हो। इससे पहले भी कई ऐसे निर्णय सामने आए हैं, जिन्होंने यौन हिंसा से जुड़े मामलों में न्याय व्यवस्था की संवेदनशीलता पर सवाल उठाए हैं। कई बार पीड़ितों को न्याय मिलने में सालों लग जाते हैं, और कई मामलों में फैसले इतने कमजोर होते हैं कि अपराधियों को इसका लाभ मिल जाता है। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि न्यायपालिका को यौन अपराधों के मामलों में अधिक जागरूक और संवेदनशील होने की जरूरत है। सिर्फ कानून की किताबों में लिखी धाराओं का पालन करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह भी देखना जरूरी है कि इनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है।

सुप्रीम कोर्ट का जवाबी हमला

सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के फैसले को गंभीरता से लेते हुए पाया कि इस तरह की टिप्पणियाँ समाज में गलत संदेश दे सकती हैं। इससे भविष्य में अन्य मामलों में भी गलत नज़ीर (precedent) बन सकती है। ऐसे में, शीर्ष अदालत ने फौरन हाई कोर्ट की विवादास्पद टिप्पणियों पर रोक लगा दी।

इसके अलावा, यूपी सरकार और केंद्र सरकार को भी नोटिस जारी कर दिया गया कि वे इस पर

अपना पक्ष रखें। अब देखना दिलचस्प होगा कि सरकारें इस मुद्दे पर क्या रुख अपनाती हैं।

सड़क से सोशल मीडिया तक विरोध

यह मामला सिर्फ अदालत तक सीमित नहीं रहा। महिला अधिकार संगठनों, वकीलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इसे अन्याय करार दिया। ट्विटर से लेकर सड़क तक, इस फैसले का जमकर विरोध हुआ। ट्रेंड्स में #JusticeForVictims और #JudiciaryReform जैसे हैशटैग छा गए। लोगों का कहना था कि ऐसे फैसले यौन हिंसा के पीड़ितों का हौसला तोड़ सकते हैं और अपराधियों को बढ़ावा मिल सकता है। महिला संगठनों ने भी इस मुद्दे पर कड़ा विरोध जताया और मांग की कि ऐसे मामलों में न्यायपालिका को ज्यादा सतर्क रहना चाहिए। कई विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह के फैसले समाज में महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा को लेकर डर का माहौल बना सकते हैं।

क्या कहता है कानून?

भारतीय दंड संहिता (IPC) और POCSO अधिनियम के तहत यौन अपराधों के खिलाफ सख्त प्रावधान हैं। इनमें सजा के स्पष्ट प्रावधान दिए गए हैं, लेकिन कई बार अदालतों की व्याख्या इन मामलों में दोषियों को राहत देने का काम करती है। विशेषज्ञों का मानना है कि POCSO एक्ट को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसमें संशोधन की जरूरत है, ताकि ऐसे मामलों में सख्त और त्वरित न्याय मिल सके। सरकार को भी इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए और ऐसी कानूनी खामियों को दूर करने की दिशा में कदम उठाने चाहिए। अब सबकी नज़रें सुप्रीम कोर्ट की अगली सुनवाई पर टिकी हैं। क्या हाई कोर्ट का फैसला पूरी तरह पलटा जाएगा? क्या आरोपी की जमानत रद्द होगी? या फिर सुप्रीम कोर्ट कोई नई गाइडलाइन जारी करेगा? यह मामला सिर्फ कानूनी लड़ाई तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भारतीय न्याय प्रणाली की कार्यप्रणाली और उसकी संवेदनशीलता की परीक्षा भी बन चुका है।

समाज के लिए एक सीख

इस पूरे घटनाक्रम से एक बड़ा सवाल उठता है – क्या हमारी न्याय प्रणाली यौन अपराधों के मामलों में और अधिक संवेदनशील हो सकती है? या फिर ऐसे सवेंदनहीन, अमानवीय फैसले बार-बार समाज को झकझोरते रहेंगे? यह जरूरी है कि न्याय व्यवस्था सिर्फ कानूनी पहलुओं पर नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक आधारों पर भी फैसले ले, ताकि पीड़ितों को न्याय मिले और अपराधियों को कड़ा संदेश जाए। कानून सिर्फ किताबों में दर्ज शब्द नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे पीड़ितों की आवाज़ बनना चाहिए। इसके अलावा, सरकार और न्यायपालिका को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि यौन हिंसा से जुड़े मामलों में दोषियों को सख्त सजा मिले और पीड़ितों को जल्द से जल्द न्याय मिले। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक ऐसे विवादित फैसले समाज को झकझोरते रहेंगे और पीड़ितों का न्याय प्रणाली से भरोसा उठता रहेगा।

रंग से नहीं, काबिलियत से तय होती है पहचान

[रंग का दाग : समाज की काली सच्चाई पर शारदा मुरलीधरन का करारा जवाब]

रंग—एक ऐसा शब्द, जो सिर्फ चमक या छाया नहीं, बल्कि समाज की गहरी दरारों का प्रतीक बन चुका है। यह वह जहरीला बीज है, जो सदियों से भारतीय समाज की मिट्टी में बोया गया और आज भी इसकी जहरीली फसल हमारे आत्मसम्मान को लील रही है। खासकर महिलाएँ—जिनकी पहचान, योग्यता और सपनों को रंग के इस पैमाने पर तौला जाता है। यह शर्मिंदगी की बात है कि आधुनिकता का ढिंढोरा पीटने वाला हमारा समाज आज भी गोरे और काले के भेद में उलझा हुआ है। लेकिन इस अंधेरे में एक चिंगारी जली—केरल की पहली महिला मुख्य सचिव शारदा मुरलीधरन ने रंगभेद की इस कुत्सित मानसिकता पर ऐसा प्रहार किया कि समाज का चेहरा शर्म से झुक गया। उनके साहस ने न सिर्फ एक बहस छेड़ी, बल्कि यह साबित कर दिया कि सफलता का कोई रंग नहीं होता—वह तो मेहनत, आत्मविश्वास और काबिलियत का प्रकाश है।

शारदा मुरलीधरन ने हाल ही में सोशल मीडिया पर अपने जीवन की कड़वी सच्चाइयाँ उजागर कीं। उनके सांवले रंग को बचपन से ही निशाना बनाया गया। ताने, कटाक्ष और अपमान उनके जीवन का हिस्सा बन गए थे। समाज ने उनके रंग को उनकी पहचान से बड़ा बना दिया, उनकी प्रतिभा को कुचलने की कोशिश की। लेकिन शारदा ने हार नहीं मानी। मेहनत और लगन से उन्होंने न सिर्फ ऊँचा मुकाम हासिल किया, बल्कि केरल की मुख्य सचिव बनकर इतिहास रच दिया। मगर समाज की संकीर्ण सोच यहाँ भी पीछे नहीं हटी। एक शख्स ने उनकी कार्यशैली की तुलना उनके पति से करते हुए बेहूदा टिप्पणी की: ₹वह उतनी ही काली हैं, जितना उनके पति गोरे थे।₹ यह टिप्पणी सिर्फ एक शब्द नहीं थी—यह समाज की उस गहरी बीमारी का लक्षण थी, जो रंग को इंसान की कीमत का पैमाना मानती है।

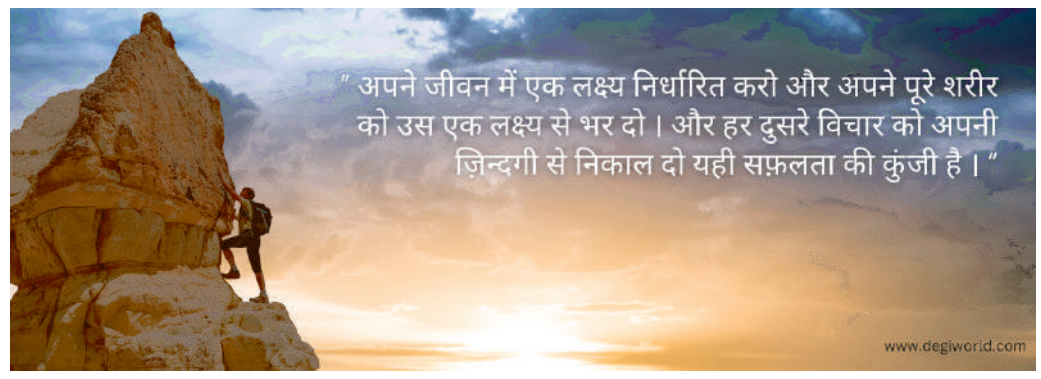

लेकिन शारदा ने इस अपमान का जवाब ऐसा दिया कि समाज की नींद उड़ गई। उन्होंने बुलंद आवाज में कहा, ₹मुझे मेरा रंग पसंद है। मुझे इस पर गर्व है।₹ यह जवाब सिर्फ उस शख्स के लिए नहीं था—यह हर उस सोच को चुनौती थी जो गोरे रंग को सुंदरता का ताज पहनाती है और सांवले रंग को अपमान की गहराई में धकेलती है। शारदा ने साफ कर दिया कि असली सुंदरता रंग में नहीं, आत्मविश्वास और प्रतिभा में बसती है। उनकी यह प्रतिक्रिया एक तूफान बन गई—जिसने समाज की चुप्पी को तोड़ा और रंगभेद के खिलाफ एक नई जंग की शुरुआत की।

यह सवाल अब हर जुबान पर है—आखिर क्यों गोरे रंग को ही श्रेष्ठता का पर्याय माना जाता है? क्यों सांवले रंग को हीनता की नजर से देखा जाता है? शारदा मुरलीधरन की यह बेबाकी उन लाखों महिलाओं के लिए मशाल बन गई, जो अपने रंग-रूप के कारण खुद को कमतर समझती हैं। उनकी आवाज ने समाज को आईना दिखाया और बदलाव की एक उम्मीद जगाई। यह सिर्फ एक महिला की कहानी नहीं है—यह उस दर्द की पुकार है, जो हर सांवली लड़की ने कभी न कभी महसूस किया है। यह उस संघर्ष की गाथा है, जो हर उस इंसान ने जिया है, जिसे उसके रंग के कारण हाशिए पर धकेल दिया गया।

भारतीय समाज में रंगभेद की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वे हमारी संस्कृति का हिस्सा बन चुकी हैं। बचपन से ही बच्चों के दिमाग में यह बात ठूँस दी जाती है कि गोरा रंग ही सुंदरता का प्रतीक है। टेलीविजन पर विज्ञापन हों या फिल्मों के गीत—हर जगह गोरे रंग को महिमामंडित किया जाता है। ₹फेयर एंड लवली₹ जैसी क्रीम्स की बिक्री इस सोच को और हवा देती है। शादी-विवाह में यह भेदभाव अपने चरम पर पहुँच जाता है। ₹गोरी बहू₹ की माँग आज भी हर परिवार की पहली शर्त होती है। सांवले रंग की लड़कियों को न सिर्फ अपमान सहना पड़ता है, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी कुचल दिया जाता है। यह एक ऐसी सजा है, जो बिना जुर्म के दी जाती है।

महिलाओं के लिए यह भेदभाव और भी क्रूर हो जाता है। चाहे वे कितना भी पढ़-लिख लें, कितना भी बड़ा मुकाम हासिल कर लें, उनकी पहचान उनके रंग से जोड़ दी जाती है। शारदा मुरलीधरन इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। उन्होंने अपनी मेहनत और काबिलियत से एक ऊँचा पद हासिल किया, लेकिन समाज ने उनकी सफलता को उनके रंग के चश्मे से देखा। यह सिर्फ उनकी कहानी नहीं है—यह हर उस महिला की कहानी है, जिसे उसके रंग के कारण जज किया गया। यह उस मानसिकता का सबूत है, जो योग्यता को रंग के तराजू पर तौलती है।

लेकिन शारदा ने इस सोच को ललकारा। उनकी प्रतिक्रिया ने समाज को झकझोर कर रख दिया। उन्होंने दिखाया कि रंग कोई बाधा नहीं है—यह तो एक पहचान है, जिसे गर्व से अपनाया जा सकता है। उनकी इस हिम्मत ने न सिर्फ रंगभेद के खिलाफ जंग छेड़ी, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव की नींव भी रखी। सोशल मीडिया पर उनकी बात को जबरदस्त समर्थन मिला। हजारों महिलाओं ने अपने अनुभव साझा किए—कोई अपने बचपन के तानों को याद कर रो पड़ी, तो किसी ने शादी में रिजेक्शन की पीड़ा बयाँ की। यह एक सामूहिक आवाज बन गई, जो रंगभेद के खिलाफ खड़ी हो गई। सरकार की ओर से भी इस मुद्दे पर सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। लोग अब खुलकर इस पर बात करने लगे हैं—यह बदलाव की पहली किरण है।

शारदा मुरलीधरन का यह साहस उन लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो अपने रंग-रूप को लेकर हीन भावना से जूझती हैं। उन्होंने साबित किया कि सुंदरता का असली मापदंड रंग नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, मेहनत और व्यक्तित्व है। समाज को इस संकीर्ण सोच से बाहर निकलना होगा। गोरे रंग को श्रेष्ठता का तमगा देना बंद करना होगा। शिक्षा और जागरूकता ही इस बीमारी का इलाज है। स्कूलों में बच्चों को यह सिखाना होगा कि हर रंग खूबसूरत है। माता-पिता को अपनी बेटियों को यह भरोसा देना होगा कि उनकी कीमत उनके रंग से नहीं, उनकी काबिलियत से तय होती है।

यह घटना इस बात का सबूत है कि समाज में बदलाव की शुरुआत हो चुकी है। लोग अब रंग-रूप से परे जाकर इंसान की योग्यता को महत्व देने लगे हैं। शारदा मुरलीधरन ने समाज को एक अनमोल सबक सिखाया—सफलता का कोई रंग नहीं होता। वह मेहनत की रोशनी से चमकती है, आत्मविश्वास की ताकत से खिलती है और काबिलियत के बल पर दुनिया को अपनी ओर मोड़ती है। उनका साहस और उनकी स्पष्टता आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मिसाल है। यह एक ऐसी मशाल है, जो रंगभेद के अंधेरे को चीरकर आत्मसम्मान और समानता का उजाला फैलाएगी।

शारदा की कहानी महज एक महिला की जीत नहीं है—यह हर उस इंसान का विजय गान है, जिसने अपने रंग के कारण अपमान के कांटे झेले, जिसकी आत्मा को रंगभेद की आग में जलाया गया। यह एक नई सुबह का आलोक है—वह सुबह, जहाँ रंग सिर्फ देह की सतह पर एक रेखा होगा, न कि इंसान की कीमत का वह क्रूर तराजू, जो सदियों से हमें तोलता आया है। अब समाज को नींद से जागना होगा, अपनी संकीर्ण सोच के बंधनों को तोड़ना होगा और यह गहरे तक मानना होगा कि असली सुंदरता रंग की परतों में नहीं, बल्कि दिल की गहराई में, दिमाग की उड़ान में और आत्मा की शक्ति में बसती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

वकील की हत्या के खिलाफ कानपुर कचेहरी में रही हड़ताल

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां कल्याणपुर खुर्द में बीते सोमवार को हुई वकील राजेश सिंह की हत्या को लेकर वकील और न्यायिक कार्य से विरत रहे। वकीलों की इस हड़ताल के चलते वाद कारियों को भी परेशानी का सामना करना पड़ा। साथ ही वकीलों ने डीएम को ज्ञापन देकर मृतक वकील के परिवार के लिए मुआवजे ओ परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी की भी मांग की। कुल मिलाकर अधिवक्ता राजेश सिंह हत्याकांड को लेकर अधिवक्ताओं का गुस्सा सातवें आसमान पर है।

याद रहे कि अधिवक्ता राजेश सिंह सोमवार शाम को अपनी पत्नी क्षमा और दो बेटियां निशि (10) नेहा (5) के साथ अपनी ससुराल के लिए निकले थे। घर से चंद कदम की दूरी पर वीएन शर्मा का मकान है, जिसमें धीरज तिवारी किराए पर रहकर तीन गाड़ियां चलवाने का काम करता है। सभी गाड़ियां घर के सामने ही खड़ी की जाती हैं, जिससे रास्ता बंद हो जाता है। उस दिन भी ऐसा ही हुआ। गाड़ी हटाने की बात पर राजेश सिंह की धीरज से बहस हुई थी। राजेश सिंह देर रात जब अपनी पत्नी और बच्चों के साथ घर वापस आए तब भी गाड़ी हटाने को लेकर विवाद हुआ। आरोपी धीरज तिवारी ने अपनी पत्नी और अन्य साथियों के साथ मिलकर राजेश सिंह पर हमला कर दिया। इस दौरान बैसाखी राजेश सिंह के सिर में लगी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बाद अस्पताल में भर्ती कराया जाने के बाद इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई थी।

संवेदनहीन फैसले पर सुप्रीम कोर्ट का सख्त रुख: न्याय की नई परिभाषा

[पीड़िता के दर्द के आगे न्याय की असंवेदनशीलता अस्वीकार्य]

"न्याय का मंदिर तब तक अधूरा है, जब तक वहां पीड़ित को अपमान का कड़वा घूंट न पीना पड़े।" यह मार्मिक और चिंतन को झकझोर देने वाला कथन उच्चतम न्यायालय ने हाल ही में एक ऐतिहासिक सुनवाई के दौरान कहा, जिसने न केवल न्यायिक प्रणाली की संवेदनशीलता पर सवाल उठाए, बल्कि समाज में पीड़ितों के प्रति गहरे बैठे असंवेदनशील रवैये को भी उजागर किया। यह टिप्पणी उस वक्त सामने आई जब सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के एक विवादास्पद और संवेदनहीन फैसले पर कड़ा रुख अपनाते हुए उसे तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिया। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 17 मार्च 2025 को अपने फैसले में कहा था कि एक नाबालिग लड़की के सीने को पकड़ना, उसकी पायजामा की डोरी तोड़ना और उसे एक सुनसान पुलिया के नीचे खींचने की कोशिश करना बलात्कार का प्रयास नहीं माना जा सकता। इस फैसले ने देशभर में आक्रोश की आग भड़का दी, क्योंकि यह न केवल कानून की मूल भावना को ठेस पहुंचाता था, बल्कि एक मासूम पीड़िता के दर्द को भी दरकिनार करता था। सुप्रीम कोर्ट ने इसे "पूरी तरह से असंवेदनशील और अमानवीय" करार देते हुए न केवल इस पर रोक लगाई, बल्कि इलाहाबाद हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को इस मामले में उचित कार्रवाई करने का निर्देश भी दिया। यह कदम न्यायिक सुधार की दिशा में एक साहसिक पहल है और बलात्कार पीड़ितों, खासकर नाबालिगों, के प्रति समाज की सोच में बदलाव का एक मजबूत संकेत देता है।

यह मामला उत्तर प्रदेश के कासगंज जिले का है, जहां 2021 में 11 साल की एक नाबालिग लड़की के साथ यौन उत्पीड़न का प्रयास हुआ था। अभियोजन पक्ष के मुताबिक, दो आरोपियों ने लड़की को मोटरसाइकिल पर घर छोड़ने का लालच दिया। लेकिन रास्ते में उनकी नीयत खराब हो गई। उन्होंने लड़की का यौन उत्पीड़न शुरू कर दिया—उसके सीने को पकड़ा, उसकी पायजामा की डोरी तोड़ दी और उसे एक सुनसान पुलिया के नीचे खींचने की कोशिश की। उस मासूम की चीखें सुनकर आसपास के लोग दौड़े आए, जिसके बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। इस जघन्य घटना के बाद निचली अदालत ने दोनों आरोपियों को बलात्कार के प्रयास और पॉक्सो एक्ट के तहत समन जारी किया था। यह फैसला पीड़िता को न्याय की राह पर ले जाने वाला एक कदम था। लेकिन इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज ने 17 मार्च 2025 को सुनवाई करते हुए निचली अदालत के फैसले को पलट दिया। जज ने तर्क दिया कि ऐसी हरकतें बलात्कार का प्रयास नहीं मानी जा सकतीं, क्योंकि अभियोजन पक्ष यह साबित नहीं कर सका कि आरोपियों का इरादा बलात्कार करना था। उन्होंने यह भी कहा कि इस घटना में "प्रवेशात्मक यौन हमले" का कोई सबूत नहीं है, इसलिए यह बलात्कार के प्रयास या पॉक्सो एक्ट की गंभीर धाराओं के तहत मामला नहीं बनता। इसके बजाय, जज ने आरोपियों को कम गंभीर धाराओं के तहत समन जारी करने का निर्देश दिया। यह फैसला न केवल कानूनी रूप से विवादास्पद था, बल्कि एक नाबालिग के दर्द को कम आंकने का भी प्रतीक बन गया।

इस फैसले ने देशभर में तीखा आक्रोश पैदा किया। सोशल मीडिया से लेकर सड़कों तक, लोगों ने इस असंवेदनशील निर्णय के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। महिला अधिकारों के लिए काम करने वाले संगठन 'वी द वीमेन ऑफ इंडिया' ने सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना को पत्र लिखकर तत्काल हस्तक्षेप की मांग की। जनता के गुस्से और संगठन की अपील को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने 25 मार्च 2025 को इस मामले का स्वतः संज्ञान लिया और 26 मार्च को सुनवाई शुरू की। जस्टिस बी.आर. गवई और जस्टिस ए.जी. मसीह की पीठ ने इस मामले को गंभीरता से लिया। जस्टिस गवई ने सुनवाई के दौरान कहा, "हमें यह कहते हुए गहरा दुख हो रहा है कि इस फैसले में संवेदनशीलता का पूरी तरह से अभाव है। यह कानून के सिद्धांतों के खिलाफ है और एक अमानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है।" उन्होंने यह भी उजागर किया कि यह फैसला जल्दबाजी में नहीं लिया गया था। यह 13 नवंबर 2024 को हुई सुनवाई के बाद चार महीने के विचार-मंथन के बाद दिया गया था, जो जज के सोच-विचार को और स्पष्ट करता है। सुप्रीम कोर्ट ने फैसले के पैराग्राफ 21, 24 और 26 पर विशेष आपत्ति जताई, जहां जज ने घटना का विस्तृत वर्णन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला था कि यह बलात्कार का प्रयास नहीं था। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर तत्काल रोक लगाई और केंद्र सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, और इलाहाबाद हाई कोर्ट को नोटिस जारी किया। कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि यह आदेश इलाहाबाद हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के समक्ष रखा जाए ताकि वे उचित कार्रवाई कर सकें। अगली सुनवाई चार सप्ताह बाद निर्धारित की गई है।

सुप्रीम कोर्ट का यह हस्तक्षेप इस मामले में पीड़िता को न्याय दिलाने की दिशा में एक बड़ा कदम है और न्यायिक प्रणाली में संवेदनशीलता की कमी को उजागर करता है। इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले की देशभर में आलोचना हुई। केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने इसे "सभ्य समाज के लिए अस्वीकार्य" बताया, जबकि राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने इसे "असंवेदनशील और खतरनाक" करार दिया। वरिष्ठ वकील इंदिरा जयसिंह ने कहा कि यह घटना "तैयारी से आगे की बात थी और कानूनी रूप से बलात्कार का प्रयास मानी जानी चाहिए।" सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला जजों को यह याद दिलाता है कि उनके शब्द और निर्णय समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं। यह पीड़ितों के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता की जरूरत को रेखांकित करता है और भविष्य में संवेदनशील मामलों में जजों को अधिक सावधानी बरतने के लिए प्रेरित करता है।

यह फैसला बलात्कार पीड़ितों, खासकर नाबालिगों, के लिए एक नई उम्मीद की किरण है। यह उन्हें भरोसा दिलाता है कि उनकी आवाज सुनी जाएगी और उन्हें अदालतों में सम्मान के साथ देखा जाएगा। यह समाज को यह संदेश भी देता है कि हमें पीड़ितों के प्रति अपनी सोच बदलनी होगी। हमें यह समझना होगा कि वे पहले ही एक गहरे आघात से गुजर चुके हैं, और उनकी पीड़ा को कम करने के लिए संवेदनशीलता जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट का यह साहसिक कदम इलाहाबाद हाई कोर्ट के असंवेदनशील और विवादास्पद फैसले को पलटने की दिशा में एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ है, जो न केवल न्यायिक प्रणाली में व्याप्त संवेदनहीनता को उजागर करता है, बल्कि इसमें आमूलचूल सुधार की तत्काल आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। यह जजों को उनकी उस जिम्मेदारी का अहसास कराता है जो कानून की व्याख्या से आगे बढ़कर पीड़ितों को सम्मान और न्याय दिलाने तक जाती है। यह फैसला पीड़ितों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। यह हमें सिखाता है कि न्याय का मंदिर तभी सच्चा मंदिर कहलाएगा, जब वहां हर पीड़ित को न केवल न्याय मिले, बल्कि सम्मान और संवेदना भी प्राप्त हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

प्रेम जीवन है, द्वेष मृत्यु है: स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद एक महान व्यक्तित्व थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति और अध्यात्म को विश्वभर में प्रसिद्ध किया। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था,

विवेकानंद जी का वास्तविक नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा ईश्वर चंद्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान से प्राप्त की और बाद में प्रेसीडेंसी कॉलेज से स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

विवेकानंद जी ने अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस के सानिध्य में आत्म-ज्ञान प्राप्त किया और 25 वर्ष की आयु में सन्यास ग्रहण किया। सन्यास लेने के बाद विवेकानंद जी ने भारत भ्रमण तथा विश्व यात्रा शुरू की।

उन्होंने 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत का प्रतिनिधित्व किया और अपने भाषण से विश्वभर में प्रसिद्ध हुए। उनके भाषण की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं।

उन्होंने अमेरिकी लोगों को बहन और भाई कहकर संबोधित किया।

उन्होंने भारतीय समाज को सहिष्णु और सार्वभौम स्वीकृत करने वाला बताया।

उन्होंने भारत को वास्तव में सभी धर्मों का सम्मान करने वाला बताया।

उन्होंने कहा कि भारत उन सभी लोगों को शरण देता है जो दुनिया के दूसरे भागों में शोषित किए गए हैं।

विवेकानंद जी ने शिक्षा और चरित्र निर्माण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण और व्यवहारिक जानकारी प्राप्त करने से है।

उनके अनुसार, ₹हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति स्वावलम्बी बनें₹।

विवेकानंद जी के युवाओं के लिए कुछ प्रेरणादायक अनमोल वचन इस प्रकार हैं।

₹खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।₹

₹सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी वह एक सत्य ही होगा।₹

₹विश्व एक विशाल व्यायामशाला है जहाँ हम खुद को मजबूत बनाने के लिए आते हैं।₹

₹शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु है। विस्तार जीवन है, संकुचन मृत्यु है। प्रेम जीवन है, द्वेष मृत्यु है।₹

₹जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।₹

स्वामी विवेकानंद जी के विचार और जीवन आज भी हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उनके जीवन से हमें कई महत्वपूर्ण सबक मिलते हैं जो हमें जीवन में आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

उनके कुछ प्रमुख विचार इस प्रकार हैं।

निडर रहो, स्वामी विवेकानंद जी बचपन से ही निडर थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया।

खुद पर विश्वास करो, स्वामी विवेकानंद जी ने हमेशा खुद पर विश्वास करने का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर भी विश्वास नहीं कर सकते।

सच्चा पुरुषार्थ, स्वामी विवेकानंद जी ने हमेशा सच्चे पुरुषार्थ का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि जीवन में सच्चा पुरुषार्थ ही हमें सफलता की ओर ले जाता है।

मां का सम्मान, स्वामी विवेकानंद जी ने हमेशा मां के सम्मान का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि मां से बढ़कर कोई नहीं है, और हमें हमेशा अपनी मां का सम्मान करना चाहिए।

इन विचारों को अपनाकर हम अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं और सफलता की ओर बढ़ सकते हैं।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश.

हरीराया सतगुरु की महाराष्ट्र मध्यप्रदेश परमार्थी यात्रा से भक्तजन निहाल हुए

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर सर्वविदित है कि जब-जब धरा पर दैत्यों कष्टों कालों के प्रहार से पृथ्वी के जीवन पर अत्याचार दमन होता है तो, पूर्ण सतगुरु हरिराया का किसी न किसी रूप में जन्म होता है और इन अत्याचारों से आत्माओं का भला कर जीवन जीने की सच्ची व सही राह दिखाकर अपने सही असली जामें में प्रवास कर जाते हैं। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्यों कि 23 से 25 मार्च 2025 तक महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के गोंदिया तिरोडा बालाघाट वरासिवनी सहित अनेक नगरों में हरीराय सतगुरु बाबा ईश्वर शाह साहिब जी का पावन सत्संग व दर्शन श्रवण कर ऐसा लगा मानो अंधेरी रात्रि में पूर्णिमा का दमकता प्रकाश फैल गया है,इन तीनों सत्संगों में मैंने हाजिर रहकर रिपोर्टिंग तैयार की है। मैंने देखा कि दोनों राज्यों के तीनों नगरों में हरीराय सतगुरु जी के नगर आगमन की खुशी में भारी मात्रा में भक्तों का हुजूम उमर पड़ा स्वागत में, नर्मदा आरती, ढोल नगाड़ा शहनाई के साथ श्रद्धा भाव से पुष्प वर्षा गुलाब की पंखुड़ियां व आतिशबाजी से स्वागत करने के साथ ही नियमों कानूनी दिशा निर्देशों का पालन कर हरे माधव सत्संग महाराष्ट्र एमपी के सत्संग वाले नगरोंमें किया गया जिसे देश-विदेश की संगतो ने लाभ उठाया। चूँकि सतगुरु साहिब जी की महाराष्ट्र मध्य प्रदेश वासी भक्तगण श्री दर्शन व पावन सत्संग सुनने हुजूम उमड़ा, सत्संग श्रवण कर दयालु भाव विभोर हुए, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, हरीराय सतगुरु की महाराष्ट्र मध्यप्रदेश परमार्थी यात्रा से रूही आत्माएं, भक्तजन निहाल हुए हरे माधव की गूंज से इस धरा पर झूम उठे भक्तजन।

साथियों बात अगर हम दिनांक 23 मार्च 2025 के गोंदिया सत्संग की करें तो, 22 मार्च का दिन भक्तों के लिए एक अद्भुत और आध्यात्मिक अनुभूति से परिपूर्ण था। इस दिन पूरे नगर ने सतगुरु बाबा जी का स्वागत भव्यता, श्रद्धा और उत्साह के साथ किया। ऐसा लग रहा था मानो पूरा ब्रह्मांड इस पावन क्षण का साक्षी बनने के लिए एकत्रित हो गया हो। बाबाजी का नगर में पदार्पण होते ही वातावरण भक्तिरस से सराबोर हो गया। बाबाजी के स्वागत के लिए शहर को भव्य रूप से सजाया गया था। शोभायात्रा मार्ग के दोनों ओर भक्त श्रद्धा से खड़े थे, उनकी आँखों में प्रेमाश्रु छलक रहे थे। जैसे ही बाबा जी का आगमन हुआ, समूचा वातावरण मंगल ध्वनियों, भजन-कीर्तन और जयघोष से गूंज उठा। आतिशबाजियों की रौशनी से आकाश जगमगा उठा, ढोल- नगाड़ों की गूंज और लोक कलाकारों के नृत्य ने समूचे दृश्य को दिव्यता से भर दिया। सड़कों पर जहां-जहां से बाबा जी का आगमन हुआ, वहां श्रद्धालु पुष्पवर्षा कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं देवगण भी इस पुण्य अवसर पर आकाश से पुष्पवर्षा कर रहे हों। शोभायात्रा मार्ग को भव्य स्वागत द्वारों से सजाया गया था, जिनपर आध्यात्मिक प्रतीकों और प्रेरणादायक वचनों की मनमोहक सजावट थी। शहर की हर गली और चौराहा रंगीन पताकाओं, रोशनी की लड़ियों और दीपमालाओं से सुसज्जित था, जो इस दिव्य अवसर की

गरिमा को और बढ़ा रहे थे।शोभायात्रा के समापन पर महाकुंभ की भव्य झांकी प्रस्तुत की गई, जिसने इस आध्यात्मिक उत्सव को और भी दिव्य बना दिया। इस झांकी ने यह प्रदर्शित किया कि पूज्यनीय बाबा जी समस्त तीर्थों के तीर्थ हैं, जहाँ न केवल मानव, बल्कि देवता, दिव्य आत्माएँ, सिद्ध, गंधर्व, सभी उनके श्रीचरणों में समर्पित होते हैं। इस झांकी के माध्यम से बाबा जी की अपार महिमा और उनकी दिव्य सत्ता का अनूठा दर्शन कराया गया, जिसने उपस्थित साधसंगत को भाव-विभोर कर दिया। इस पूरे दिव्य अवसर पर बाबा जी ने अपनी अनुकंपा की वर्षा करते हुए साधसंगत को अपने मधुर, करुणामयी और आनंदमयी दर्शन से कृतार्थ किया उनकी एक झलक मात्र से ही श्रद्धालुओं का रोम-रोम पुलकित हो उठा। बाबा जी की सौम्य मुस्कान और दिव्य दृष्टि ने समस्त भक्तों के हृदयों में अपार आनंद और प्रेम का संचार कर दिया। यह संपूर्ण अवसर शब्दों में व्यक्त करना अत्यंत कठिन है। यह केवल अनुभूति का विषय था एक ऐसा अनुभव जो हर भक्त के हृदय में सदा-सदा के लिए अंकित हो गया।

साथियों बात अगर हम 24 मार्च 2025 को तिरोडा सत्संग की करें तो, गोंदिया परमार्थी यात्रा के दौरान 24 मार्च 2025 को तिरोडा के प्रेमी भक्तों की विनय पुकार सुन हरिराया तिरोड़ा पधारे। कई वर्षों के लंबे अंतराल, प्रेमी भक्तों की विरह पुकार सुन सतगुरु साईंजन ने सभी सागर वासियों को पावन श्रीदर्शन से निहाल किया।का श्रीदर्शन पाकर ऐसा लगा मानो अंधियारी रात्रि में पूर्णिमा का दमकता प्रकाश फैल गया हो। हरिराया सतगुरु जी के नगर आगमन की खुशी में भारी संख्या में प्रेमी भक्तों का हुजूम एकत्रित हुआ जिसमें सागर सहित अनेक नगरों-कस्बों से भक्तगण आए। सतगुरु साहिबान जी का भव्य स्वागत श्रद्धालु भक्तें ने ढोल-नगाड़ों, शहनाइयों के साथ श्रद्धाभाव, पुष्प वर्षा एवं आतिशबाजी से किया। पूरा मार्ग हरे माधव, हरे माधव के नाद से गुंजायमान था। सारे मार्ग में हरे माधव की झण्डियां लहरा रहीं। राह में अखियाँ बिछाए खड़े भक्त, नैनों में आँसु और हाथों में प्रेम के पुष्प लिए सतगुरु श्रीचरणों में सत्कार कर रहीं भक्तगणों के विशाल समूह के साथ सतगुरु जी ने नवनिर्मित हरे माधव सत्संग भवन का उद्घाटन किया, पावन वचन मोतियों से सभी को निहाल किया। सतगुरु महाराज जी की प्रतिक्षा कर रहा, वहां भी हजारों संगतों को मध्य रात्रि तक श्री दर्शन आसीस से आपजी ने निहाल किया।

साथियों बात अगर हम 25 मार्च 2025 को बालाघाट और नैनपुर सत्संग की करें तो, प्रभु रुप सतगुरु जी की श्री चरण रज पाकर धन्य धन्य हुई बालाघाट की संगतें, सौभाग्य से प्राप्त होता है सतगुरु दर्शन एवं उनके पावन सानिध्य में सत्संग की अमृतवाणी श्रवण का लाभ सुअवसर प्राप्त हुआ। पूरण सतगुरु भगति की प्यासी जीवात्माओं की करुण पुकार अवश्य स्वीकार करते हैं। हरिराया सतगुरु बाबा ईश्वरशाह साहिब जी की असीम अनुकम्पा, हरेमाधव सत्संग के रूप में मंगलवार 25 मार्च को बालाघाट के प्रेमी भगत जनों पर बरसी। पूरण सतगुरु का दिव्य सत्संग, पावन दर्शन सौभाग्य से मिलता है, बालाघाट वासी सौभाग्यशाली है कि हमें माधवनगर कटनी हरेमाधव दरबार के सिद्ध संत हरिराया सतगुरु सांई ईश्वरशाह का सानिध्य दर्शन प्राप्त हुआ, हरेमाधव सत्संग की सद् ग्रंथ की वचन वाणियों, सतगुरु दर्शन, सतगुरु मुखारविंद से अमृत वर्षा से आत्म स्नान करने अनेक नगरों से संगतें बालाघाट पधारी जो इस पावन अवसर पर हरिराया सतगुरु मेहर कृपा की अमृत वर्षा में भीगी जी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि हरीराया सतगुरु की महाराष्ट्र मध्यप्रदेश परमार्थी यात्रा से भक्तजन निहाल हुए- हरे माधव सत्संग की गूंज से झूम उठे भक्तजन। सतगुरु साहिबान जी के महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश वासी भक्तगण, श्री दर्शन व पावन सत्संग सुनने हुजूम उमड़ पड़ा - सत्संग श्रवण कर श्रद्धालु निहाल हुए वर्तमान डिजिटल युग में सतगुरु के श्रीमुख से पावन आध्यात्मिक सत्संग सुनने व आत्मिक आनंद की लहर से लोक परलोक सवेरा होता है।

सिट्रॉएन की कारों को मार्च 2025 में खरीदने का बेहतरीन मौका, मिल रहे लाखों रुपये के डिस्काउंट

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की वाहन निर्माता Citroen की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। सिट्रॉएन की ओर से ऑफर की जाने वाली कारों को अगर इस महीने खरीदने का मन बना रहे हैं तो किस गाड़ी पर कितनी बचत की जा सकती है। सबसे ज्यादा Discount Offer किस कार पर मिल रहे हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली फ्रांस की वाहन निर्माता सिट्रॉएन की ओर से बेहतरीन बचत का मौका दिया जा रहा है। March 2025 के दौरान कंपनी की गाड़ी खरीदने पर आपको लाखों रुपये की बचत हो सकती है। किस गाड़ी पर इस महीने कितना डिस्काउंट दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Citroen Aircross पर सबसे ज्यादा बचत का मौका

सिट्रॉएन की ओर से एयरक्रॉस को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। अगर इस महीने इस गाड़ी को खरीदा जाता है तो आपको सबसे ज्यादा बचत का मौका मिल सकता है। जानकारी के मुताबिक इस गाड़ी पर March 2025 में अधिकतम 1.75 लाख रुपये की बचत हो सकती है। कंपनी की ओर से ऑफर किए जाने वाले 2023 के मॉडल्स पर यह ऑफर दिया जा रहा है। 2024 की यूनिट्स को इस महीने खरीदने पर अधिकतम 1.70 लाख रुपये तक की बचत हो सकती है। इस गाड़ी की एक्स शोरूम कीमत 8.49 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.41 लाख रुपये है।

Citroen Basalt पर भी मिलेगा ऑफर

सिट्रॉएन की ओर से बेसाल्ट को 2024 में ही लॉन्च किया गया था। इस कूप एसयूवी को खरीदने पर इस महीने खरीदने पर अधिकतम 1.70 लाख रुपये की बचत की जा सकती है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 8.25 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 14 लाख रुपये है।

Citroen eC3 पर भी होगी बचत

सिट्रॉएन की ओर से इलेक्ट्रिक हैचबैक सेगमेंट में eC3 की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को March 2025 में खरीदने पर 80 हजार रुपये तक बचाए जा सकते हैं। यह बचत गाड़ी की 2024 की बची हुई यूनिट्स पर होगी। 2023 की बची यूनिट्स को खरीदने पर अधिकतम एक लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। Citroen eC3 की एक्स शोरूम कीमत 12.76 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.53 लाख रुपये है।

Citroen C3 पर भी मिल रहे ऑफर

सिट्रॉएन की ओर से एंट्री लेवल हैचबैक के तौर पर C3 की बिक्री भारतीय बाजार में की जाती है। अगर इस महीने सिट्रॉएन की इस गाड़ी को खरीदने जा रहे हैं तो आपको अधिकतम एक लाख रुपये तक की बचत का मौका मिल सकता है। इस गाड़ी की एक्स शोरूम कीमत 6.16 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 10.26 लाख रुपये है।

बीते महीने कितनी यूनिट्स स्कूटर की हुई बिक्री, टॉप-5 में कौन हुआ शामिल, YoY आधार पर कैसा रहा प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री होती है। इनमें सबसे ज्यादा योगदान दो पहिया सेगमेंट का होता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान दो पहिया वाहन सेगमेंट में कितने स्कूटर्स की बिक्री हुई है। Top-5 में कौन से स्कूटर शामिल हुए हैं। ईयरली बेसिस पर कैसा प्रदर्शन रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। कई वाहन निर्माताओं की ओर से अलग अलग सेगमेंट में दो पहिया वाहनों की बिक्री की जाती है। इनमें कई निर्माता मोटरसाइकिल के अलावा स्कूटर्स की भी बिक्री करती हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान कितने स्कूटर्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कैसा प्रदर्शन रहा है। Top-5 लिस्ट में किस कंपनी के कौन से स्कूटर (Scooter Sales Report) शामिल हुए हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda Acitva की बिक्री में आई गिरावट

रिपोर्ट्स के मुताबिक होंडा की ओर से एक्टिवा स्कूटर को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। हर महीने इस स्कूटर की सबसे ज्यादा बिक्री होती है। लेकिन आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 13 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। बीते महीने के दौरान इसकी 174009 यूनिट्स की बिक्री हुई है। इसके पहले February 2024 में 200134 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

दूसरे नंबर पर रहा TVS Jupiter

टीवीएस की ओर से ऑफर किए जाने वाले स्कूटर TVS Jupiter को भी काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। बीते महीने के दौरान इस स्कूटर की 103576 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है। इसके पहले February 2024 में यह संख्या 73860 यूनिट्स की थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 40 फीसदी से ज्यादा की बढ़त हुई है।

तीसरे नंबर पर आया Suzuki Access

बीते महीने बिक्री के मामले में तीसरे नंबर पर सुजुकी एक्सेस स्कूटर रहा। इस स्कूटर की February 2024 में 59039 यूनिट्स की बिक्री हुई है जबकि इसके पहले 2024 में इसी अवधि के दौरान यह संख्या 56473 यूनिट्स थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में चार फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

अगले नंबर पर रहा TVS NTorq

टीवीएस की ओर से NTorq स्कूटर को भी ऑफर किया जाता है। आंकड़ों के मुताबिक बीते महीने के दौरान इस स्कूटर की 20992 यूनिट्स की बिक्री हुई है। इसके पहले 2024 में इसकी 24911 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 15 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई है।

Top-5 में शामिल हुआ Honda Dio स्कूटर

होंडा के एक और स्कूटर को भले ही Top-5 में जगह मिली है। लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में करीब 46 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। आंकड़ों के मुताबिक इस स्कूटर की बीते महीने के दौरान 16028 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि इसके पहले February 2024 में यह संख्या 29649 यूनिट्स की थी।

सुजुकी बर्गमैन फेसलिफ्ट टेस्टिंग के दौरान नजर आया

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी दो पहिया निर्माता Suzuki की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से 125 सीसी में ऑफर किए जाने वाले Suzuki Burgman के Facelift को लाने की तैयारी की जा रही है। टेस्टिंग के दौरान इस स्कूटर की क्या जानकारी सामने आई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में स्कूटर्स की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से 125 सीसी सेगमेंट में ऑफर किए जाने वाले Suzuki Burgman के Facelift वर्जन को लाने की तैयारी की जा रही है। हाल में ही इसे टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। स्कूटर की क्या जानकारी सामने आई है। किस तरह के बदलावों के साथ इसे कब तक लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

टेस्टिंग के दौरान नजर आया Suzuki Burgman Facelift

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सुजुकी बर्गमैन स्कूटर के फेसलिफ्ट को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। जिसके बाद यह उम्मीद की जा रही है कि निर्माता की ओर से इस स्कूटर के फेसलिफ्ट को जल्द ही बाजार में लॉन्च किया जा सकता है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक इसके मौजूदा वर्जन की तरह इसके फ्रंट को फेसलिफ्ट में भी रखा जाएगा। लेकिन इसकी हेडलाइट के डिजाइन में मामूली बदलाव हो सकते हैं। इसमें दिया जाने वाला इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर भी मौजूदा वर्जन की तरह ही होगा। जिसमें ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, टर्न बाय टर्न नेविगेशन के साथ अन्य फीचर्स को दिया जाएगा।

इंजन में होगा बदलाव

सुजुकी की ओर से बर्गमैन स्कूटर में 125 सीसी की क्षमता का इंजन दिया जाता है। फेसलिफ्ट वर्जन में भी इसी इंजन का उपयोग किया जा सकता है। निर्माता की ओर से हाल में ही इसके इंजन को OBD2B के साथ अपडेट किया गया है। इसमें 124 सीसी की क्षमता का सिंगल सिलेंडर एयर कूल्ड इंजन दिया जाता है जिससे 8.5 बीएचपी के साथ 10 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसके साथ सीवीटी गियरबॉक्स मिलता है।

न्यू रिनॉल्ट ट्राइबर लॉन्च से पहले नजर आई, जल्द हो सकती है लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की वाहन निर्माता रेनो की ओर से कई से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की एमपीवी Renault Triber को देखा गया है। इस दौरान किस तरह की जानकारी सामने आई है। कब तक नई ट्राइबर को किस तरह के बदलावों के साथ लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। फ्रांस की वाहन निर्माता Renault की ओर से भारतीय बाजार में बजट एमपीवी के तौर पर Renault Triber की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से इसमें कई बदलाव कर लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च से पहले इस गाड़ी को देखा गया है। इस दौरान किस तरह की जानकारी सामने आई है। कब तक इसे लॉन्च (Upcoming Launch) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

नजर आई नई रेनो ट्राइबर

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से बजट एमपीवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली रेनो ट्राइबर को जल्द ही कई बदलावों के साथ लाने की तैयारी की जा रही है। इसके पहले गाड़ी की एक यूनिट्स को देखा गया है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक जिस यूनिट को हाल में देखा गया है वह पूरी तरह से ढकी हुई थी। जिससे डिजाइन और फीचर्स की पूरी जानकारी तो सामने नहीं आ पाई है, लेकिन मौजूदा वर्जन के मुकाबले इसमें कई बदलाव किए जाएंगे। ट्रेलर पर दिखी यूनिट के मुताबिक बंपर, ग्रिल और लाइट में बदलाव की संभावना है। इसके साथ ही इसके इंटीरियर में भी कई बदलाव किए जा सकते हैं। जिससे गाड़ी को नया लुक मिल सकता है।

इंजन में होगा बदलाव?

रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से ट्राइबर के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसकी मौजूदा जेनरेशन में मिलने वाले एक लीटर तीन सिलेंडर नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन को ही नई ट्राइबर में भी दिया जा सकता है। जिससे इसे 72 बीएचपी की पावर और 96 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इस गाड़ी में मैनुअल और एएमटी ट्रांसमिशन को भी दिया जाएगा।

कब तक हो सकती है लॉन्च

रेनो की ओर से अभी इसके लॉन्च की तारीख को लेकर कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि रेनो अपनी इस बजट एमपीवी की नई जेनरेशन को भारतीय बाजार में साल के आखिर तक लॉन्च कर सकती है।

कितनी होगी कीमत

रेनो की ओर से ट्राइबर की एक्स शोरूम कीमत 6.10 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.98 लाख रुपये रखी गई है। नई जेनरेशन एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत में कुछ हजार रुपये का ही बदलाव हो सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

रेनो की ट्राइबर को बजट एमपीवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Ertiga और Kia Carens जैसी एमपीवी के साथ होता है। इसके साथ ही इसे कीमत के मामले में कई सब फोर मीटर एसयूवी और हैचबैक कारों से भी चुनौती मिलती है।

महिंद्रा XUV700 इबॉनी एडिशन वर्सेज टाटा सफारी डार्क एडिशन: डिजाइन, फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

हम यहां पर आपको Tata Safari Dark Edition और Mahindra XUV700 Ebony Edition की तुलना करते हुए बता रहे हैं दोनों SUVs अपनी डार्क-थीम वाली डिजाइन और प्रीमियम फीचर्स में से कौन बेहतर है। हम यहां पर आपको इन दोनों की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि यह डिजाइन फीचर्स और इंटीरियर के मामले में कौन बेहतर है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। मिड-साइज SUV सेगमेंट में पॉपुलर Mahindra XUV700 का डार्क एडिशन लॉन्च हुआ है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें एक समान ब्लैक्ड-आउट डिजाइन दिया गया है। इस सेगमेंट में XUV700 का मुकाबला Tata Safari से होता है। जिसे देखते हम यहां पर आपको इन दोनों के ब्लैक एडिशन की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि डिजाइन, इंटीरियर और फीचर्स के मामले में कौन बेहतर है।

1. बाहरी डिजाइन

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसके काफी अट्रैक्टिव लुक दिया गया है। इसमें काले फ्रंट ग्रिल और सिल्वर कलर की स्किड प्लेट्स दी गई है। इसमें 18 इंच के काले अलॉय व्हील्स और फ्लश डोर हैंडल डार्क-थीम को शामिल किया है। इमसें Ebony की बैजिंग भी दी गई है।

Tata Safari Dark Edition: इसे Oberon Black शेड और ब्लैक्ड-आउट लुक दिया गया है। इसमें दिए गए 19 इंच के काले अलॉय व्हील्स और काले बॉडी क्लैडिंग इसे स्पोर्टी लुक देते हैं। इसके पीछे की तरफ काले बम्पर्स और स्किड प्लेट्स दिए गए हैं, जो इसके डार्क एस्थेटिक और भी बढ़ा देते हैं।

2. इंटीरियर

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसमें पियानो ब्लैक एलिमेंट्स के साथ कंसोल, सिल्वर एक्सेंट्स और हल्के ग्रे फिनिश वाला रूफ लाइनर दिया गया है, जो इसे और भी अट्रैक्टिव बनाता है। इसके इंटीरियर्स में शानदार और उन्नत डिजाइन देखने के लिए मिलता है।

Tata Safari Dark Edition: इसमें पूरी तरह से ब्लैक कलर का डैशबोर्ड और सीट अपहोल्स्ट्री दी गई है। इसमें इंटीरियर्स में नीली एम्बियंट लाइटिंग दी गई है, जो शानदार माहौल बनाती है। इसमें दी गई काले और नीले रंग का कॉम्बीनेशन इसे स्पेशल रूप देता है।

3. फीचर्स

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसमें 10.25 इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स, पावर्ड ड्राइवर सीट (मेमोरी फंक्शन के साथ), वायरलेस फोन चार्जिंग, पैनोरमिक सनरूफ और ड्यूल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल जैसे फीचर्स को शामिल किया गया है।

Tata Safari Dark Edition: इसमें 12.3 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, 10-स्पीकर JBL साउंड सिस्टम, वेंटिलेटेड सीट्स और एम्बियंट लाइटिंग और जेस्चर-नियंत्रित पावर्ड टेलगेट जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

4. पावरट्रेन और इंजन विकल्प

Mahindra XUV700 Ebony Edition: यह दो इंजन ऑप्शन के साथ पेश किया गया है, जो 2-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन (200 PS, 380 Nm) और 2.2-लीटर डीजल इंजन (185 PS, 450 Nm) है। इसके इंजन को 6-स्पीड मैनुअल और 6-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स ऑप्शन के साथ दिया जाता है।

Tata Safari Dark Edition: इसमें 2-लीटर डीजल इंजन है, जो 170 PS पावर और 350 Nm टॉर्क देता है। इसमें 6-स्पीड मैनुअल और 6-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स का विकल्प है।

5. कीमत

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसकी एक्स-शोरूम कीमत 19.64 लाख रुपये से लेकर 24.14 लाख रुपये तक है।

Tata Safari Dark Edition: इसकी एक्स-शोरूम कीमत 19.65 लाख रुपये से 25.60 लाख रुपये तक है।

प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षणिक संस्कृति में छिपे तनाव पहचानें

विजय गर्ग

तीन कारणों के बारे में सोचें कि मानसिक तनाव या अकेलापन आईआईटी के माहौल में अंतर्निहित क्यों है। वास्तव में आप महसूस करेंगे कि किसी भी आईआईटी में प्रवेश पाने की प्रक्रिया ही स्वाभाविक रूप से तनावपूर्ण है। यह किसी महान शिक्षक के साथ चलकर सीखने जैसा न होकर विज्ञान और गणित की गूढ़ता को बनावटी बौद्धिक उत्साह और जिज्ञासा के साथ तलाशने जैसा है।

हाल ही में, आईआईटी कानपुर ने 'द आर्ट ऑफ़ लिविंग फ़ाउंडेशन' के साथ मिलकर एक 'भलाई कार्यक्रम' शुरू किया है। रिपोर्ट के अनुसार, फ़ाउंडेशन ने श्वास क्रिया, ध्यान और माईंडफुलनेस अर्थात 'संचेतना' (आसपास की घटनाओं के प्रति सजग रहते हुए इनमें बहने से बचना) सहित विशेषज्ञ सत्रों की एक शृंखला आयोजित करने पर सहमति जताई है। इसका उद्देश्य है युवा छात्रों की 'मानसिक सहनशक्ति एवं तनाव प्रबंधन क्षमताओं' को बेहतर बनाना। समझा जा सकता है कि आईआईटी के अधिकारी अपने छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर इतने चिंतित क्यों हैं। दरअसल, हाल ही में सूचना के अधिकार से मिली एक जानकारी से पता चला है कि पिछले पांच सालों में 37 विद्यार्थियों ने खुदकशी है, जिसमें 11 छात्र आईआईटी के थे। इसलिए, कोई हैरानी नहीं कि आईआईटी गुवाहाटी ने भी 'नैदानिक अभ्यासों' की एक शृंखला चलाने की घोषणा की है – मसलन,परामर्श सत्र, संकाय सदस्यों के साथ सुबह की सैर और 'तनाव से मुक्ति' कार्यशालाएं।

हालांकि,भारत में समकालीन शैक्षिक परिदृश्य के एक पर्यवेक्षक के रूप में, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि अलग-अलग परामर्श सत्र, श्वास क्रिया और संचेतना अभ्यासों का ऐसा कोई समुच्चय इन युवाओं की बढ़ती दिमागी, मानसिक चिंताओं और अस्तित्वगत पीड़ा से निपटने के लिए अपर्याप्त होगा, जो पहले ही अत्यंत-प्रतिस्पर्धात्मक और सामाजिक डार्विनवाद जनित जीवन-हंता वायरस से बनी मारक 'रण भूमि' में फंसे हुए हैं।

समस्या केवल किसी के 'आहत' हुए स्वः की नहीं है,समस्या समाज की पूरी संरचना है - जिसमें संसाधनों की कमी और असमानता है या फिर किसी की योग्यता केवल प्राप्त किए गए बढ़िया नंबरों से आंकने वाली विचारधारा बनकर रह गई है। उस चूहा-दौड़ में शामिल होना,जिसे तकनीकी-पूंजीपति 'सफलता' का प्रारूप ठहराते हैं। आप अपने 'अशांत' स्वः को बाकी समाज के ताने-बाने से अलग नहीं कर सकते।

तीन कारणों के बारे में सोचें कि मानसिक तनाव या अकेलापन आईआईटी के माहौल में अंतर्निहित क्यों है। वास्तव में आप महसूस करेंगे कि किसी भी आईआईटी में प्रवेश पाने की प्रक्रिया ही स्वाभाविक रूप से तनावपूर्ण है। यह किसी महान शिक्षक के साथ चलकर सीखने जैसा न होकर विज्ञान और गणित की गूढ़ता को बनावटी बौद्धिक उत्साह और जिज्ञासा के साथ तलाशने जैसा है। इतना ही नहीं, कोचिंग सेंटरों के अत्याचार से लेकर, कभी न खत्म होने वाले अभ्यास परीक्षा तक की इस यात्रा में कोई रचनात्मक उत्साह या खुशी नहीं है। 'भाग्यशाली' छात्र जब तक बाधाओं से पार पाते हैं - जेईई मुख्य परीक्षा से लेकर जेईई एडवांस उत्तीर्ण करने तक - तब तक उनमें से कई मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक तौर से दरिद्र हो चुके होते हैं।

दूसरा, यह मानना गलत है कि जब कोई आईआईटी में भर्ती पा लेता है तो उसकी जिंदगी वास्तव में भरपूर बन जाती है, और सब कुछ गुलाबी-गुलाबी हो जाता है। अतिशयी-प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षणिक संस्कृति में छिपे तनावों का कोई अंत नहीं है। अच्छा ग्रेड पाने की लालसा, बाजार मांग के अनुरूप लगातार बदलते 'कौशल' सीखते रहने का दबाव, और अंतिम नियति को लेकर निरंतर चिंता – जैसे कि, बढ़िया जगह पर नौकरी और वेतन पैकेज। ये सब एक ऐसा सामाजिक माहौल बना देते हैं, जिसमें कोई सच्चा दोस्त नहीं, कोई रचनात्मक उत्साह नहीं होता। हर कोई एक एकाकी व अहंकारी योद्धा भर है !

और तीसरा, चूंकि हमारे समाज में आईआईटी में दाखिला पाने का कुछ ज्यादा ही महिमामंडन किया जाता है, जिसकी कीमत में, हमारे अधिकांश

कॉलेज और विश्वविद्यालयों का व्यवस्थित रूप से अवमूल्यन हो रहा है। इसलिए आईआईटी विद्यार्थी के लिए लोगों की नज़रों में चढ़ने से बचना बहुत मुश्किल बन जाता है। हम आईआईटी में पढ़ने वाले को एक मिथकीय उत्पाद के रूप में देखना शुरू कर देते हैं: एक अत्यंत-बुद्धिमान प्रौद्योगिकीविद्, वह जो सब कुछ हासिल कर ले, जिसकी 'सफलता' को हम मिथक बनाना पसंद करते हैं। एक आकर्षक नौकरी, किसी तकनीकी-कॉर्पोरेट उद्यम में एक उच्च पद, लगातार विदेश यात्राएं और निरंतर सामाजिक/आर्थिक गतिशीलता ! वास्तव में, हमारा समाज पागलों की तरह 'सफलता की कहानियों' से ग्रस्त है। इसकी वजह से अगर आप एक 'आईआईटी वाले' हैं, तो इस बात की संभावना बहुत कम है कि लोगबाग–आपके माता-पिता सहित - आपको सिर्फ़ एक इंसान के रूप में देखेंगे। आपको लगातार अपने 'अलौकिक' गुणों को साबित करते रहना पड़ेगा। ऐसा लगता है मानो आपका 'आम होना' ही आपका गुनाह है ! वास्तव में, यह असंभव अपेक्षा उनमें से कईयों को अमानवीय अवगुण से भर देती है।

निस्संदेह, यदि हम इन मुद्दों पर विचार कर हल नहीं निकालते तो हम इन एकाकी व तनावग्रस्त युवा प्रतियोगियों के अंदर केवल ध्यान, श्वास क्रिया और संचेतना अभ्यास करवाकर विवेक पैदा नहीं करवा सकते। भले ही यह किसी प्रकार का अस्थायी राहत देने वाला हो –फील गुड की क्षणिक अवस्था उनके जीवन-पथ में कोई मौलिक परिवर्तन लाने की संभावना नहीं रखती। हालांकि, तात्पर्य यह नहीं है कि संचेतना अभ्यास कोई मायने नहीं रखता। निस्संदेह, अतीत की चोटों और भविष्य की चिंता से विचलित हुए बिना, वर्तमान क्षण में गहराई से और तीव्रता से जीने की क्षमता ही एक बड़ी ध्यान कला है। इसके लिए समर्पित धार्मिकता की भावना होनी चाहिए- शांति, प्रेम परिपूर्ण सहृदयता और करुणा की निरंतर खोज।

हालांकि, विडंबना यह है कि तेजी से विकास करते 'आध्यात्मिक सुपरमार्केट' वाले हमारे इस समयकाल ने ध्यान व संचेतना के लाभ का भी मजाक बनाकर रख दिया है। इसे फौरी राहत प्रदान करने वाले एक उत्पाद के रूप में बेचा जा रहा है। इसके अलावा, यह 'आध्यात्मिक उद्योग' एक अन्य महत्वपूर्ण सवाल अब तक नहीं पूछ पाया : संचेतना हो किसके वास्ते ? क्या मुझे अपने कॉर्पोरेट लालच को बढ़ाने के लिए संचेतना अभ्यास करने की आवश्यकता पड़ेगी ? क्या अपने विश्वविद्यालय में 'टॉपर' बनने के लिए मेरे लिए संचेतना अभ्यास करना जरूरी है ? क्या मुझे अहंकार के बोझ से मुक्ति और तनावमुक्ति हेतु संचेतना अभ्यास की आवश्यकता है ?

वास्तव में, 'आध्यात्मिक सुपरमार्केट' के व्यवसाय में रोजाना की तरक्की के साथ, हम अत्यधिक धनाढ्य सेलिब्रिटी बाबाओं और गुरुओं को अपने अमीर ग्राहकों को 'फौरी मोक्ष' के नाना प्रकार के पैकेज बेचते हुए देखते हैं –जैसे कि कॉर्पोरेट मालिकों से लेकर वे सभी, जो श्वास-क्रिया और संचेतना अभ्यास करने के वास्ते सात दिन का महंगे 'रिट्रीट सत्र' का खर्च उठा सकते हैं। इसलिए, कानपुर आईआईटी और आध्यात्मिक उद्योग के बीच गठबंधन को लेकर बनी अपनी असहजता व्यक्त करने में मुझे कोई हिचकिचाहट नहीं है। यदि हम युवा छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में सचमुच ईमानदार हैं, तो हमें उस समाज की संरचना पर सवाल उठाने की जरूरत है, जिसमें हम जी रहे हैं। इसके अलावा, हमें शिक्षा को पुनः परिभाषित करने, इसकी आत्मा को विशुद्ध रूप से योग्यतावादी व तकनीकी विचारधारा से बचाने और अपने छात्रों को जीवन की एक नई दृष्टि देने की जरूरत है - विशुद्ध 'कैरियरवादिता', अति-प्रतिस्पर्धात्मक और भौतिक सफलता से परे।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

रील्स और साहित्य

विजय गर्ग

इन दिनों रील्स और उसके कंटेंट की अच्छे और बुरे कारणों से खूब चर्चा होती रहती है। आजकल रील्स देखना बहुत ही लोकप्रिय होता जा रहा है। चकित करने वाली बात यह है कि रील्स के विषयों का फलक इतना व्यापक है कि वो किसी को भी घंटों तक रोके रख सकता है। अब तो स्थिति यह हो गई है कि रील्स में दिखाई गई बातों को सत्य माना जाने लगा है। रील्स की दुनिया में भविष्यवक्ताओं की बाढ़ आई हुई है। कोई आपके नाम के आधार पर तो कोई आपके नाम में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या को जोड़कर आपका भविष्य बता रहा है। कई महिलाएं भी भविष्य के बारे में बात करती नजर आएंगी। वो भी बता रही हैं। कि शुक्रवार को पति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। कोई महिला यह बताती है कि पत्नी को हर दिन पति के पाँव दबाने चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी जी भी विष्णु जी के पांव दबाती हैं। कोई महिला यह बताती है। कि अमुक अंक लिखकर अपने घर की तिजोरी में रख दो या अमुक नंबर के नोट अगर आपने अपने घर में पैसे रखने के स्थान पर रख दिया तो आपके पास धन की कोई कमी नहीं होगी। इसके अलावा, स्वास्थ्य विषय पर भी इनके बहुत सारे रील्स हैं कि यह खाना चाहिए या फिर यह नहीं खाना चाहिए। इतना ही नहीं, रील्स की दुनिया में बिजनेस करने के तौर तरीकों और और जमाधन को दोगुना और तिगुना तक करने के नुस्खे भी बताए जाने लगे हैं। ये सब इतने रोचक अंदाज में बताया जाता है कि देखनेवाला मोबाइल से चिपका रहता है। आमतौर पर यह देखा जाता है कि अगर रील्स देखना आरंभ कर दें तो घंटे दो घंटे तो ऐसे ही निकल जाते हैं।

कहना न होगा कि रील्स की दुनिया एक ऐसी मनोरंजक दुनिया है जो लोगों को बेहतर भविष्य का सपना भी दिखाती है। लोगों को पैसे कमाने से लेकर घर परिवार की सुख समृद्धि के नुस्खे बताती है। ये नुस्खे कितने सफल होते हैं यह पता नहीं, क्योंकि इस तरह का कोई रील देखने में नहीं आता है कि फलां नुरखे से उनका लाभ हुआ या इस तरह की कोई केस स्टडी भी अभी तक समने नहीं आई हैं कि फलां नंबर के नोट तिजोरी में रखने से उसकी आमदनी निरंतर बढ़ती चली गई। परंतु हां, इतना अवश्य है कि रील्स एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में ले जाता है, जहां सबकुछ मोहक और मायावी लगता है।

रील्स की दुनिया को हल्के-फुल्के मनोरंजन के तौर पर लिया जाना चाहिए। लिया जा भी रहा है। लेकिन इन दिनों साहित्य, कला और कविता से जुड़े कुछ ऐसे रोल्स देखने को मिले जो चिंतित करते हैं। हाल के दिनों में कई ऐसे रील्स देखने को मिले जिनमें सेलिब्रिटी कविता पढ़ते नजर आ रहे हैं। वो कविता किसी और की पढ़ते हैं और रील्स के डिस्क्रिप्शन में कवि का नाम लिख देते हैं। रोल में कहीं कवि का नाम नहीं होता है। सेलिब्रिटी की टीम उसको इंटरनेट मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर पोस्ट कर देती है और अश्वत्थामा हतो नरौ.... वाली ईमानदारी के साथ वीडियो के डिस्क्रिप्शन में कवि का नाम लिख देती है। होता यह है कि सेलिब्रिटी की पढ़ी गई कविताओं का वीडियो इन प्लेटफार्म्स से डाउनलोड करके उनके प्रशंसक उसको फिर से उन्हीं प्लेटफार्म्स पर साझा करना आरंभ कर देते हैं। प्रशंसक अश्वत्थामा वाली ईमानदारी को समझ नहीं पाते और वो सेलिब्रिटी की कविता के नाम से ही उसे साझा करना आरंभ कर देते हैं। दिनकर जी जैसे श्रेष्ठ कवियों की कविताएं तो लोगों को पता है तो उसमें यह खेल नहीं हो पाता है, लेकिन कई नवोदित कवि की कविताएं सेलिब्रिटी के नाम से चलने लगती हैं। कवि को पता भी नहीं चलता और वह कविता सेलिब्रिटी के नाम हो जाती है। रील्स की दुनिया में इस बेईमानी से कई साहित्यिक प्रतिभा कुंद हो जा रही हैं। इसका निदान कहीं न कहीं बौद्धिक जगत को ढूंढना ही चाहिए। इंटरनेट मीडिया पर बाढ़ की तरह संचालित इन रील्स का एक और नुकसान जो साहित्य का हो रहा है, वह यह कि पौराणिक ग्रंथों से बगैर संदर्भ के किस्सों को उठाकर प्रामाणिक तरीके से पेश कर दिया जा रहा है। पिछले दिनों जब इलाहाबादिया का मामला सामने आया था तो उसके कुछ दिनों बाद एक रील मेरी नजर से गुजरा। एक बेहद लोकप्रिय व्यक्ति उसमें एक किस्सा सुना रहे थे। किस्से में वह बता रहे थे कि कालिदास अपना ग्रंथ कुमारसंभव पूरा क्यों नहीं कर पाए ? उनके हिसाब से कालिदास जब कुमारसंभव में पार्वती और शंकर जी की रतिक्रिया के बारे में लिखने जा रहे थे, तब पार्वती जी को पता चल गया। उन्होंने सरस्वती जी को बुलाया और कहा कि यह कौन सा कवि है और क्या लिखने जा रहा है। इसे रोकना होगा। फिर किस्सागोई के अंदाज में यह प्रसंग आगे बढ़ता है। आगे वह बताते हैं कि सरस्वती जी ने क्रोधित होकर उनको श्राप दे दिया और वो बीमार हो गए। इस कारण से कुमारसंभव पूरा नहीं हो पाया।

यहां हमें यह समझना चाहिए कि कालिदास बीमार अवश्य हुए थे। उन्हें पक्षाघात हो गया और वह भी सरस्वती के श्राप के कारण, परंतु इसे कहां से उद्धृत किया गया था, यह तथ्य भी सामने आना चाहिए। इस पूरे प्रसंग में शब्द कुछ अलग हो सकते हैं, परंतु उनका भाव यही था। इस तरह के प्रकरणों में चिंता की बात यह है कि यह पूरा प्रसंग जैसे सुनाया गया, वह विश्वसनीय सा लगता है। इसे सुनकर नई पीढ़ी के लोगों में से कई सच मान सकते हैं, विशेषकर वे जो उनके प्रशंसक हैं। इससे तो एक अलग तरह का इतिहास बनता है। बौद्धिक समाज को इस तरह के प्रसंगों पर विचार करते हुए इस पर विमर्श को बढ़ावा देना चाहिए। चिंता तब और अधिक होती है, जब इस तरह के रील बनानेवाले लोग लोकप्रिय होते हैं। रील्स की दुनिया से पहले फेसबुक ने साहित्य का बहुत नुकसान किया, विशेषकर कविता का फेसबुक के लाइक्स और कमेंट ने कवियों और रचनाकारों के दिमाग में यह बैठा दिया कि अब उनको आलोचकों की आवश्यकता ही नहीं है। वो सीधे पाठक तक पहुंच रहे हैं। ऐसे लोग यह मानते थे कि आलोचक पाठकों तक पहुंचने का एक जरिया है। जबकि आलोचकों की भूमिका उससे कहीं अलग होती है। आलोचक रचना के अंदर प्रवेश करके उसकी गांठों को खोलकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। रचनाओं में अंतर्निहित भावों को आसान शब्दों में पाठकों को समझाने का प्रयत्न करता है। इससे रचनाकार और पाठक के बीच एक ऐसा संबंध बनता था जो फेसबुक के कमेंट से नहीं बन सकता है। फेसबुक पर जिस तरह के कमेंट आते हैं, उनमें से अधिकतर तो प्रशंसा के ही होते हैं जो रचना का न तो आकलन कर पाते हैं और न ही रचना के भीतर प्रवेश करके उसकी परतों को पाठकों के लिए खोलते हैं। कुल मिलाकर जो परिस्थितियाँ बन रही हैं उनमें प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए साहित्यकारों को आगे आना होगा। प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी वर्षों से आह्वान कर रहे हैं कि साहित्यकारों को इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म्स पर लिखना चाहिए। उनके नहीं लिखने से अनर्गल लिखनेवालों का बोलबाला होता जा रहा है। तकनीक को साहित्यकारों को अपनाना चाहिए और उसके नए माध्यमों को पाठकों तक पहुंचने का औजार बनाना चाहिए।

कैरियर की सफलता की नींव

विजय गर्ग

आध्यात्मिक विकास और कैरियर विकास को अलग-अलग करने के बजाय, उन्हें एक साथ करने का प्रयास करना चाहिए। हमें हर समय अपने प्रयासों में निरंतरता बनाए रखनी चाहिए तथा अपने प्रयासों का प्रतिदिन मूल्यांकन करते रहना चाहिए। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि बड़ी सफलताएं रोजाना किए गए छोटे-छोटे प्रयासों से ही प्राप्त होती हैं।

बड़ी सफलता छोटे प्रयासों से मिलती है।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि आध्यात्मिक विकास और कैरियर विकास अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जैसे-जैसे हम व्यक्तिगत रूप से विकसित होते हैं, हमारा करियर भी विकास के पथ पर अग्रसर होता है। इसलिए, किसी भी चुने हुए करियर के संतुलित विकास के लिए आवश्यक मानसिक सशक्तिकरण, मानसिक संतुलन और मानसिक शांति जैसे तत्वों को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। वास्तविक विकास के लिए आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ कौशल विकास, सोच में परिवर्तन और तकनीकी समाधानों का क्रियान्वयन आवश्यक तत्व हैं।

कैरियर की सफलता की नींव

आध्यात्मिक विकास को वास्तव में किसी भी करियर में सफलता की नींव कहा जा सकता है। आध्यात्मिक विकास दीर्घकालिक सफलता प्राप्त करने में मदद करता है। यह व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास की गति को तीव्र करता है और इसमें व्यक्तिगत विकास के अंतर्गत भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अनुशासन, निरंतर सीखना और विकास की मानसिकता जैसे तत्व शामिल होते हैं। कौशल विकास और शिक्षा बौद्धिक विकास के लिए कौशल विकास और शिक्षा का स्तर बढ़ाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के विकास के लिए समय के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए नए पाठ्यक्रम शुरू किए जा सकते हैं। इसके अलावा, समय और क्षमता के आधार पर उच्च शिक्षा नियमित छात्र के रूप में या दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। बौद्धिक विकास के लिए अच्छी और शिक्षाप्रद पुस्तकें पढ़ी जा सकती हैं तथा कोई नया कौशल सीखने का प्रयास भी किया जा सकता है।

जब आपके पास समय हो तो आपको अपने अंदर संचार कौशल विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, मानसिक और शारीरिक तंदुरुस्ती के लिए नियमित रूप से टहलने, व्यायाम या योग की आदत डालनी चाहिए। ये चीजें मानसिक तनाव को कम करने में बहुत मदद करती हैं और योग की ध्यान पद्धति हमारे बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में मदद करती है।

अपने बारे में जानें.

करियर और जीवन दोनों में सफल होने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम पहले खुद को अच्छी तरह से जानें। स्वयं को जानने का अर्थ है अपनी शक्तियों और कमजोरियों से भली-भांति परिचित होना। हमें इस प्रकार योजना बनानी चाहिए कि हमारे गुण बढ़ें और हमारी कमजोरियां कम हों। इस कार्य के लिए हमें अपने अंदर यह मानसिकता विकसित करनी होगी कि निरंतर परिश्रम और अभ्यास से कौशल और बुद्धि का विकास किया जा सकता है।

भावनाओं को गहराई से समझें

हमें अपनी भावनाओं का गहन विश्लेषण करना चाहिए और उन्हें गहराई से समझना चाहिए, साथ ही दूसरों की भावनाओं को समझने और उनकी सराहना करने का गुण भी विकसित करना चाहिए। ऐसा करने से हमारे पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते बहुत अच्छे और उत्साहवर्धक बनेंगे तथा हम भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनेंगे।

निरंतर सीखने और अभ्यास की आदत डालें।

आध्यात्मिक विकास और कैरियर विकास को अलग-अलग करने के बजाय, उन्हें एक साथ करने का प्रयास करना चाहिए। हमें हर समय अपने प्रयासों में निरंतरता बनाए रखनी चाहिए तथा अपने प्रयासों का प्रतिदिन मूल्यांकन करते रहना चाहिए। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि बड़ी सफलताएं रोजाना किए गए छोटे-छोटे प्रयासों से ही प्राप्त होती हैं। अपने प्रयासों और प्राप्त परिणामों की निरंतर समीक्षा करने से हमें आवश्यकतानुसार अपनी रणनीति बदलने का अवसर मिलता है और विकास एवं सफलता प्राप्त करने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

कभी-कभी जब हम किसी और को कुछ चीजें या कौशल सिखाने की कोशिश करते हैं, तो हमारी अपनी सीखने की प्रक्रिया और हमारे अपने कौशल मजबूत हो जाते हैं, और यह ताकत हमारे करियर को नई ऊंचाइयां देती है। करियर विकास के लिए, हमें अपने-अपने क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करने और अपने भीतर नेतृत्व, टीमवर्क, समस्या-समाधान और संचार कौशल विकसित करने के लिए नई तकनीकों को अपनाने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए। हमें अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों से जुड़ना चाहिए और उचित मंचों पर व्यक्तिगत ब्रांडिंग भी करनी चाहिए। अंत में, यह याद रखना चाहिए कि आध्यात्मिक और कैरियर विकास के शिखर को प्राप्त करने के लिए, हमें निरंतर सीखने और अभ्यास की आदत विकसित करनी होगी। हमें अपनी सीमाओं से ऊपर उठने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

कहानी: इडली सांभर

विजय गर्ग

एक छोटी सी घटना जीवन को एक खेल की तरह अपनी डगर पर मोड़ती चली गई और आज दोनों को एकदूसरे की अब इतनी जरूरत महसूस होती है. शायद इसे ही प्यार कहते हैं.

पहली मुलाकात के बाद जिस तरह पुरवा और सुहास का प्यार परवान चढ़ा उसे देखते हुए पुरवा सुहास में एक बेहतर जीवनसाथी होने के सारे गुण ढूंढ़ने लगी, लेकिन क्या सुहास उस की उम्मीदों पर खरा उतर पाया ?

उस दिन बस में बहुत भीड़ थी. कालिज पहुंचने की जल्दी न होती तो पुरवा वह बस जरूर छोड़ देती. उस ने एक हाथ में बैग पकड़ रखा था और दूसरे में पर्स. भीड़ इतनी थी कि टिकट के लिए पर्स से पैसे निकालना कठिन लग रहा था. वह अगले स्टाप पर बस रुकने की प्रतीक्षा करने लगी ताकि पर्स से रुपए निकाल कर टिकट ले सके. बस स्टाप जैसे ही निकट आया कि अचानक किसी ने पुरवा का पर्स खींचा और चलती बस से कूद गया. पुरवा जोरजोर से चिल्ला पड़ी, "मेरा पर्स, अरे, मेरा पर्स ले गया. कोई पकड़ो उसे," उस के स्वर में बेचैनी भरी चीख थी.

पुरवा की चीख के साथ ही बस झटके से रुक गई और लोगों ने देखा कि तुरंत एक युवक बस से कूद कर चोर के पीछे भागा.

"लगता है यह भी उसी चोर का साथी है," बस में एकसाथ कई स्वर गूंज उठे.

बस रुकी हुई थी. लोगों की टिप्पणी बस में संवेदना जता रही थी. एक यात्री ने कहा, "क्या पता साहब, इन की पूरी टोली साथ चलती है."

तभी नीचे हंगामा सा मच गया. बस से कूद कर जो युवक चोर के पीछे भागा था वह काफी फुर्तीला था. उस ने भागते हुए चोर को पकड़ लिया और उस की पिटाई करते हुए बस के निकट ले आया.

"अरे, बेटे, इसे छोड़ना मत," एक बुजुर्ग बोले, "पुलिस में देना, तब पता चलेगा कि मार खाना किसे कहते हैं."

उधर कुछ यात्री जोश में आ कर अपनेअपने हाथों का जोर भी चोर पर आजमाने लगे.

पुरवा परेशान खड़ी थी. एक तो पर्स छिनने के बाद से अब तक उस का दिल धकधक कर रहा था, दूसरे, कालिज पहुंचने में देर पर देर हो रही थी. बस कंडेक्टर ने उस चोर को डराधमका कर उस की पूरी जेब खाली करवा ली और फिर कभी बस में सूरत न दिखाने की हिदायत दे कर बस स्टार्ट करवा दी.

सभी यात्री महज उस बात से खुश थे कि चलो, जल्दी जान छूट गई, वरना पुलिस थाने में जाने कितना समय खराब होता.

युवक ने पुरवा को पर्स देते हुए कहा, "देख लीजिए, पर्स में पैसे पूरे हैं कि नहीं."

उस युवक के इस साहसिक कदम से गद्गद पुरवा ने पर्स लेते हुए कहा, "धन्यवाद, आप ने तो कमाल कर दिया."

"नहीं जी, कमाल कैसा. इतने सारे यात्री देखते रहते हैं और एक व्यक्ति अपना हाथ साफ कर भाग जाता है, यह तो सरासर कायरता है," उस युवक ने सारे यात्रियों की तरफ देख कर कहा तो कुछ दूरी पर बैठे एक वृद्ध व्यक्ति धीरे से बोल पड़े, "जवान लड़की देख कर हीरो बनने के लिए बस से कूद लिया था. हम बूढ़ों का पर्स जाता तो खड़ाखड़ा मुंह देखता रहता."

इस घटना के बाद तो अकसर दोनों बस में टकराने लगे. पुरवा किसी के साथ बैठी होती तो उसे देखते ही मुसकरा देती. यदि वह किसी के साथ बैठा होता तो पुरवा को देखते ही थोड़ा आगे खिसक जाता और उस से भी बैठ जाने का आग्रह करता.

जब पहली बार दोनों साथ बैठे थे तो पुरवा ने कहा था, "मैं ने अपने मम्मीपापा को आप के साहस के बारे में बताया था."

"अच्छा," युवक हंस दिया, "आप को लगता है कि वह बहुत साहसिक कार्य था तो मैं भी मान लेता हूं पर मैं ने तो उस समय अपना कर्तव्य समझा और चोर के पीछे भाग लिया."

"आप क्या करते हैं ?" पुरवा ने पूछ लिया.

"अभी तो फिलहाल इस दफ्तर से उस दफ्तर तक एक अदद नौकरी के लिए सिर्फ टक्करें मार रहा हूं."

"आप तो बहुत साहसी हैं. धैर्य रखिए, एक न एक दिन आप अपने मकसद में जरूर कामयाब होंगे," पुरवा को लगा, युवक को सांत्वना देना उस का कर्तव्य बनता है.

पुरवा के उतरने का समय आया तो वह हड़बड़ा कर बोली, "आप का नाम ?"

"कुछ भी पुकार लीजिए," युवक मुसकरा कर बोला, "लोग मुझे सुहास के नाम से जानते हैं."

अगली बार एकसाथ बैठते ही सुहास ने पूछ लिया, "आप ने इतने दिनों में अपने बारे में कुछ बताया ही नहीं."

"क्या जानना चाहते हैं ? मैं एक छात्रा हूं. एम.ए. का अंतिम वर्ष है और मैं अंधमहाविद्यालय में संगीत भी सिखाती हूं."

फिर बहुत देर तक दोनों अपनीअपनी पढ़ाई पर चर्चा करते रहे. विदा होते समय सुहास को याद आया, वह बोला, "आप का नाम पूछना तो मैं रोज ही भूल जाता हूं."

पुरवा मुसकरा दी और बोली, "पुरवा है मेरा नाम," और चहकती सी बस से उतर गई.

एक दिन सुहास भी उसी बस स्टाप पर उतर गया जहां पुरवा रोज उतरती थी तो वह चहक कर बोली, "आज आप यहां कैसे "

"बस, तुम्हारे साथ एक कप चाय पीने को मन हो आया," सुहास के स्वर में भी उल्लास था. फिर सुहास को लगा जैसे कुछ गलत हुआ है अत: अपनी भूल सुधारते हुए बोला, "देखिए, आप के लिए मेरे मुंह से तुम शब्द निकल गया है. आप को बुरा तो नहीं लगा."

पुरवा हंस दी. मन में कुछ मधुर सा गुनगुनाने लगा था. धीरे से बोली, "यह आज्ञा तो मैं भी चाहती हूं. हम दोनों मित्र हैं तो यह आप की औपचारिकता क्यों ?"

"यही तो " सुहास ने झट से उस की हथेली पर अपने सीधे हाथ का पंजा थपक कर ताली सी बजा दी, "फिर हम चलें किसी कैंटीन में एकसाथ चाय पीने के लिए ?" सुहास ने आग्रह करते हुए कहा.

चाय पीते समय दोनों ने देखा कि कुछ लड़के इन दोनों को घूर रहे थे. सुहास का पौरुष फिर जाग उठा. उस ने पुरवा से कहा, "लगता है इन्हें सबक सिखाना पड़ेगा."

"जाने दो, सुहास. समझ लो कुत्ते भौंक रहे हैं. सुबहसुबह उलझना ठीक नहीं है."

चाय पी कर दोनों फिर सड़क पर आ गए.

"सुनो, सुहास," पुरवा ने उसे स्नेह से देखा, "तुम्हें इतना गुस्सा क्यों आ रहा था कि उन की मरम्मत करने को उतावले हो उठे."

"देख नहीं रही थीं, वे सब कैसे तुम्हें घूर रहे थे," सुहास का क्रोध अभी तक शांत नहीं हुआ था.

"मेरे लिए किसकिस से झगड़ा करोगे," पुरवा ने उसे समझाने की चेष्टा की, लेकिन उस के मन में एक मीठी सी गुदगुदी हुई कि इसे मेरी कितनी चिंता है, मेरी मर्यादा के लिए मरनेमारने को तत्पर हो उठा.

धीरेधीरे कैंटीन में बैठ कर एकसाथ चाय पीने का सिलसिला बढ़ गया. अब दोनों के ड्राइंगरूम के फोन भी घनघनाने लगे थे. देरदेर तक बातें करते हुए दोनों अपनेअपने फोन का बिल बढ़ाने लगे.

दोनों जब कभी एकसाथ चलते तो उन की चाल में विचित्र तरह की इतराहट बढ़ने लगी थी, जैसे पैरों के नीचे जमीन नहीं थी और वे प्यार के आकाश में बिना पंख के उड़े चले जा रहे थे.

एक उच्च सरकारी पद से रिटायर हुए मकरंद वर्मा के ३ बेटे और एक बेटी थी. बेटी श्वेता इकलौती होने के कारण बहुत दुलारी थी. एक बार जो कह दिया वह पूरा होना ही चाहिए.

उन के लिए तो सभी बच्चे लाडले ही थे. उन का बड़ा बेटा निशांत डाक्टर और दूसरा बेटा आकाश इंजीनियर था. सब से छोटा बेटा सुहास अभी नौकरी की तलाश में था.

पढ़ाई में अपने दोनों बड़े भाइयों से अलग सुहास किसी तरह बी. काम. पास कर सका था. बस, तभी से वह लगातार नौकरी के लिए आवेदन भेज रहा है. कभीकभी साक्षात्कार के लिए बुलावा आ जाता है तो आंखों में सपने ही सपने तैरने लगते हैं.

मकरंद वर्मा की बूढ़ी आंखों में भी उत्साह जागता है. सोचते हैं कि शायद अब की बार यह अपने पैरों पर खड़ा हो जाए पर दोनों में से किसी का भी सपना पूरा नहीं होता.

सुहास खाली समय घर वालों का भाषण सुनने के बजाय बाहर वालों की सेवा करने में अधिक खुश रहता है. उस सेवा में मित्रों के घर उन के मातापिता को अस्पताल ले जाने से ले कर बस में चोरउचक्कों को पकड़ना भी शामिल है.

सुहास अपनी बहन श्वेता को कुछ अधिक ही प्यारदुलार करता है. श्वेता भी भाई का हर समय साथ देती है. मम्मी रजनी बाला अपनी लाडली बेटी को जेब खर्च के लिए जो रुपए देती हैं उन में से बहन अपने भाई को भी दान देती रहती है क्योंकि उसे पता है कि भाई बेकार है. अपने दोनों बड़े भाइयों की तरह जीवन में सफल नहीं है इसलिए उस की तरफ लोग कम ध्यान देते हैं. लेकिन श्वेता को पता है कि सुहास कितना अच्छा है जो उस का हर काम करने को तत्पर रहता है. बाकी दोनों भाई तो विवाह कर के अपनीअपनी बीवियों में ही मगन हैं. इसीलिए उसे सुहास ही अधिक निकट महसूस होता है.

मकरंद वर्मा को अपने दोनों छोटे बच्चों, श्वेता व सुहास के भविष्य की बेहद चिंता थी पर चिंता करने से समस्या कहां दूर होती है. श्वेता के लिए कई लड़के देखे, पर उसे सब में कुछ न कुछ दोष दिखाई दे जाता है. श्वेता रजनी से कहती है, "मम्मा, ये मोटी नाक और चश्मे वाला लड़का ही आप को पसंद करना था."

रजनी उसे प्यार से पुचकारतीं, "बेटी, लड़कों का रूपरंग नहीं उन का घरपरिवार और पदप्रतिष्ठा देखी जाती है."

इस तरह 1 से २ और २ से ३ लड़के उस की आलोचना के शिकार होते गए.

श्वेता को सहेलियों के साथ घूमना जितना अच्छा लगता था उस से कहीं अधिक मजा उसे अपने भाई सुहास को चिढ़ाने में आता था.

उस दिन रविवार था. शाम को श्वेता को किसी सहेली के विवाह में जाना था. कारीडोर में बैठ कर वह अपने लंबे नाखूनों की नेलपालिश उतार रही थी. तभी उस ने सुहास को तैयार हो कर कहीं जाते देखा तो झट से टोक दिया, "भैयाजी, आज छुट्टी का दिन है और आप कहां नौकरी ढूंढ़ने जा रहे हैं ?"

"बस, घर से निकलो नहीं कि टोक देती है," फिर श्वेता के निकट आ कर हथेली खींचते हुए बोला, "ये नाखून किस खुशी में इतने लंबे कर रखे हैं ?"

"सभी तो करती हैं," श्वेता ने हाथ वापस खींच लिया.

"सभी गंदगी करेंगे तो तुम भी करोगी," सुहास झुंझला गया.

"कुछ कामधाम तो है नहीं आप को, बस, यही सब टोकाटाकी करते रहते हैं," श्वेता ने सीधे उस के अहं पर चोट कर दी तो वह क्रोध पी कर बाहर दरवाजे की ओर बढ़ गया.

"सुहास," रजनी के स्वर कानों में पड़ते ही वह पलट कर बोला, "जी, मम्मी."

"बिना नाश्ता किए सुबहसुबह कहां चल दिए ?"

"मम्मी, एक दोस्त ने चाय पर बुलाया है. जल्दी आ जाऊंगा."

"दोस्त से फुरसत मिले तो शाम को जल्दी चले आइएगा," श्वेता बोली, "एक सहेली की शादी में जाना है. वहीं आप की जोड़ीदार भी खोज लेंगे."

"मेहरबानी रखो महारानी. अपना जोड़ीदार खोज लेना, हमारा ढूंढ़ा तो पसंद नहीं आएगा न," सुहास ने भी तीर छोड़ा और आगे बढ़ गया.

पुरवा जल्दीजल्दी तैयार हो रही थी तभी उस की मम्मी ने उसे टोका, "छुट्टी के दिन क्यों इतनी तेजी से तैयार हो रही है ? आज तुझे कहीं जाना है क्या ?"

"अरे मम्मा, तुम्हें याद नहीं, मुझे अंधमहाविद्यालय भी तो जाना है."

"लेकिन आज, छुट्टी वाले दिन ?" मम्मी ने उस के बिस्तर की चादर झाड़ते हुए कहा, "कम से कम छुट्टी के दिन तो अपना कमरा ठीक कर लिया कर."

"वापस आ कर कर लूंगी, मम्मी. वहां बच्चों को नाटक की रिहर्सल करवानी है," पुरवा ने चहकते हुए कहा और अपना पर्स उठा कर चल दी.

"कम से कम नाश्ता तो कर ले," मम्मी तकियों के गिलाफ सही करती हुई बोलीं.

"कैंटीन में खा लूंगी, मम्मी," पुरवा रुकी नहीं और तीव्रता से चली गई.

सुहास निश्चित स्थान पर पुरवा की प्रतीक्षा कर रहा था.

"हाय, पुरवा," पुरवा को देखते ही उल्लसित हो सुहास बोला.

"देर तो नहीं हुई ?" पुरवा ने उस की बढ़ी हुई हथेली थाम ली.

"मैं भी अभी कुछ देर पहले ही आया था."

दोनों के चेहरे पर एक अनोखी चमक थी. पुरवा के साथसाथ चलते हुए सुहास ने कहा, "घर वालों से झूठ बोल कर प्यार करने में कितना अनोखा आनंद है."

"क्या कहा, प्यार " पुरवा चौंक कर ठहर गई.

"हां, प्यार," सुहास ने हंस कर कहा.

"लेकिन तुम ने अभी तक प्यार का इजहार तो किया ही नहीं है," पुरवा ने कुछ शरारत से कहा.

"तो अब कर रहा हूं न," सुहास ने भी आंखों में चंचलता भर कर कहा.

"चलो तो इसी खुशी में कौफी हो जाए," पुरवा ने मुसकरा कर कहा.

रेस्तरां की ओर बढ़ते हुए दोनों एकदूसरे के परिवार का इतिहास पूछने लगे. जैसे प्यार जाहिर कर देने के बाद पारिवारिक पृष्ठभूमि की जानकारी जरूरी हो.

"सबकुछ है न घर में," सुहास कौफी का आर्डर देते हुए हंस कर बोला, "मम्मीपापा हैं, २ भाईभाभी, एक लाडली सी बहन, भाभियों का तो यही कहना है कि मम्मीपापा ने मुझे लाड़ में बिगाड़ रखा है लेकिन मैं किसी तरफ से तुम्हें बिगड़ा हुआ लगता हूं क्या ?"

पुरवा ने आगेपीछे से उसे देखा और गरदन हिला दी, "लगते तो ठीकठाक हो," उस ने शरारत से कहा, "नाक भी ठीक है, कान भी ठीक जगह फिट हैं और मूंछें तौबातौबा, वह तो गायब ही हैं."

"ठीक है, मैडम, अब जरा आप अपनी प्रशंसा में दो शब्द कहेंगी," सुहास ने भी उसे छेड़ने के अंदाज में कहा.

"क्यों नहीं, महाशय," पुरवा इतरा उठी, "मेरी एक प्यारी सी मम्मी हैं जो मेरी बिखरी वस्तुएं समेटती रहती हैं. पापा का छोटा सा व्यापार है. बड़े भाई विदेश में हैं. एक छोटा भाई था जिस की पिछले साल मृत्यु हो गई."

"ओह," सुहास ने दुखी स्वर में कहा.

इस के बाद दोनों गंभीर हो गए थे. थोड़ी देर के लिए दोनों की चहक शांत हो गई थी.

कौफी का घूंट भरते हुए सुहास ने पूछा, "क्या खाओगी ?"

"जो तुम्हें पसंद हो," पुरवा ने कहा.

"यहां सुबहसुबह इडलीचटनी गरम सांभर के साथ बहुत अच्छी मिलती है."

"ठीक है, फिर वही मंगवा लो," पुरवा निश्चिंत सी कौफी पीने लगी. मन में अचानक कई विचार उठने लगे. मम्मी से झूठ बोल कर आना क्या ठीक हुआ, आज तक जो कार्य नहीं किया वह सुहास की संगत पाने के लिए क्यों किया ? यह ठीक है कि उसे अंधमहाविद्यालय के लिए नाटक की रिहर्सल करवानी पड़ती है, पर आज तो नहीं थी. उस ने सुहास की ओर देखा. इतने बड़े घर का बेटा है, पर दूसरों के दुख को अपना समझ कर कैसे सहायता करने को तड़प उठता है. उस के इसी व्यक्तित्व ने तो पुरवा का मन जीत लिया है.

इडलीसांभर आ चुका था. पुरवा ने अपनी प्लेट सरकाते हुए कहा, "मम्मी ने बड़े प्यार से हलवा तैयार किया था, पर मैं बिना नाश्ता किए ही भाग आई."

"हाथ मिलाओ यार," सुहास ने तपाक से हथेली बढ़ा दी, "मेरी मम्मा भी नाश्ते के लिए रोकती ही रह गईं, पर देर हो रही थी न, सो मैं भी भाग आया."

"अरे वाह," कहते हुए पुरवा ने पट से उस की हथेली पर अपनी कोमल हथेली रख दी तो उस का संपूर्ण शरीर अनायास ही रोमांचित हो उठा. यह कैसा विचित्र सा कंपन है, पुरवा ने सोचा. क्या किसी पराए व्यक्ति के स्पर्श में इतना रोमांच होता है ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता. उस के मन ने तर्क किया. यह तो एक सद्पुरुष के प्यार भरे स्पर्श का ही रोमांच होगा. कितनी विचित्र बात है कि एक छोटी सी घटना जीवन को एक खेल की तरह अपनी डगर पर मोड़ती चली गई और आज दोनों को एकदूसरे की अब इतनी जरुरत महसूस होती है. शायद इसे ही प्यार कहते हैं.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

एयरबस के सीईओ ने भारतीय एविऐशन इंडस्ट्री को लेकर बताई जरूरी बातें

परिवहन विशेष न्यूज

एयरबस के सीईओ ने कहा भारत इंजीनियरिंग आईटी सिस्टम और सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में वास्तव में एक बेहतरीन भूमिका निभा रहा है मुझे लगता है कि यही वह जगह है जहां भारत दोनों तरफ से जीत की स्थिति में है। एयरबस प्रमुख ने कहा कि भारत में बहुत उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और नए हवाई अड्डों की संख्या को देखना काफी आश्चर्यजनक है।

नई दिल्ली। टूलूज़ (फ्रांस), विमान निर्माता कंपनी एयरबस के सीईओ गिलौम फाउरी ने विमानन उद्योग या एविएशन इंडस्ट्री को लेकर कई बाते कही है। उन्होंने कहा है कि भारत से उसके सेवाओं की वार्षिक सोर्सिंग में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। उन्होंने अनुमान लगाया है कि ये वार्षिक सोर्सिंग 2030 से पहले 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगी।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि देश को अतीत में दूसरों द्वारा किए गए कामों को दोहराने के बजाय अपनी ताकत पर काम करना चाहिए। एयरबस वर्तमान में भारत से कलपुर्जों (Components) और सेवाओं की सोर्सिंग सालाना 1.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर करता है, जो दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है। विकास के एक तरह से भारत एयरबस कंपनी के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाजारों में से एक है।

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक एयरबस के ऑर्डर बुक में भारतीय वाहकों को दिए जाने वाले 1,300 से अधिक विमान हैं और अकेले इंडिगो ने 900 से अधिक विमान ऑर्डर किए हैं, जिनमें वाइड बॉडी ए350 भी शामिल हैं। इनमें एयर इंडिया और इंडिगो से क्रमशः 50 और 30 ए350 के पक्के ऑर्डर रखे गए हैं।

वर्तमान में, भारत में लगभग 700 एयरबस विमान हैं, जो दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते उड्डयन बाजारों में से एक है।

उन्होंने कहा कि कंपनी भारत से सोर्सिंग बढ़ा रही है। ये सोर्सिंग सभी क्षेत्रों में बढ़ाने की कोशिश की जाएगी। जिसमें पार्ट्स, सब-सिस्टम निर्माण, एयरफ्रेम और अत्यधिक लोड किए गए घटक शामिल हैं।

एयरबस के सीईओ ने मंगलवार को टूलूज़ में हुई एयरबस समिट 2025 के दौरान भारतीय पत्रकारों के साथ बातचीत की। उन्होंने कहा कि हम आपूर्ति आधार बढ़ा रहे हैं, हम आज भारत से 1.2 से 1.3 बिलियन अमरीकी डॉलर (घटक और सेवाओं के मूल्य) खरीद रहे हैं और 2030 से पहले हम लगभग 2 बिलियन अमरीकी डॉलर पर होंगे।

इसकी वेबसाइट से मिली जानकारी के मुताबिक एयरबस की भारत में महत्वपूर्ण उपस्थिति है, इसके विभिन्न साइटों पर 3,600 से अधिक कर्मचारी हैं और इसकी आपूर्ति श्रृंखला के माध्यम से 15,000 से अधिक नौकरियों दी गई है।

पिछले साल, एयरबस ने अपने A220 फैमिली एयरक्राफ्ट के दरवाज़े बनाने और असेंबल करने का ठेका बेंगलुरु स्थित डायनामैटिक टेक्नोलॉजीज को दिया था।

एयरबस के सीईओ ने कहा, "भारत इंजीनियरिंग, आईटी, सिस्टम और सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में वास्तव में एक बेहतरीन भूमिका निभा रहा है, मुझे लगता है कि यही वह जगह है जहां भारत दोनों तरफ से जीत की स्थिति में है।₹ एयरबस प्रमुख ने कहा कि भारत में बहुत उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और नए हवाई अड्डों की संख्या को देखना काफी आश्चर्यजनक है।

उन्होंने कहा कि भारत ऐसा स्थान है जहां विकास का पैमाना सबसे तेज है। एयरबस में हमारी चुनौती भारत में विमानन उद्योग के विकास की गति का समर्थन करना है...भारत का विकास पथ दुनिया के विकास पथ से काफी आगे है उन्होंने कहा कि चुनौतियां विशेषज्ञता, मानव संसाधन, भर्ती, प्रशिक्षण...(और विकास को सर्वोत्तम संभव परिस्थितियों में बनाए रखने) से संबंधित हैं। आपूर्ति श्रृंखला की बाधाओं के बारे में, जिसके कारण मांग अधिक होने पर विमान डिलीवरी के लिए लंबा इंतजार करना पड़ता है, फाउरी ने कहा कि आपूर्ति श्रृंखला की स्थिति बेहतर हो रही है।

15 साल निवेश करने पर किसमें मिलता है ज्यादा रिटर्न, देखें पूरा कैलकुलेशन

परिवहन विशेष न्यूज

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान और पब्लिक प्रोविडेंट फंड दोनों ही निवेशकों के बीच काफी पॉपुलर है। पीपीएफ के तहत आपका पैसा 15 साल के लिए लॉक हो जाता है। जिसका मतलब है कि इस अवधि के दौरान आप पैसा नहीं निकाल सकते। आज हम जानेंगे कि एसआईपी और पीपीएफ में 15 साल निवेश करने पर किसमें ज्यादा रिटर्न मिल जाता है।

नई दिल्ली। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF) और सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (SIP) दोनों में ही निवेश कर मोटा फंड तैयार किया जा सकता है। पीपीएफ एक सुरक्षित निवेश प्लेटफॉर्म है। वहीं म्यूचुअल फंड एसआईपी में मिलने वाला रिटर्न शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव पर निर्भर करता है। इसलिए इसे कम सुरक्षित माना जाता है।

ये दोनों ही स्कीम निवेशकों के बीच काफी पॉपुलर हो चुकी है। म्यूचुअल फंड एसआईपी अपने बेहतर रिटर्न के चलते निवेशकों के बीच काफी फेमस हो गई है। म्यूचुअल फंड एसआईपी में आपको अनुमानित 12 से 14 फीसदी तक रिटर्न मिल जाता है। वहीं पीपीएफ के तहत आपको 7.1 फीसदी रिटर्न मिलता है। आज हम जानेंगे की अगर दोनों ही स्कीम में 15 साल के लिए पैसा निवेश किया जाता है, तो किसमें आपको बेहतर रिटर्न मिल सकता है या कौन-सी स्कीम आपके लिए बेहतर है

15 साल निवेश करने पर किसमें मिलेगा ज्यादा रिटर्न?

पीपीएफ के तहत 15 साल के लिए आपका पैसा लॉक-इन पीरियड में रहता है। जिसका मतलब है कि आप 15 साल से पहले ये पैसे नहीं निकाल सकते। वहीं म्यूचुअल फंड एसआईपी में भी निवेश करने का फायदा तभी होगा, जब आप इसमें लंबी अवधि के लिए पैसा निवेश करेंगे।

अगर आप दोनों में ही 15 साल की अवधि के लिए निवेश करते हैं, तो आपको म्यूचुअल फंड एसआईपी में बेहतर रिटर्न मिलेगा। हालांकि ये रिटर्न बाजार के उतार-चढ़ाव पर भी निर्भर करता है। हमने इन दोनों में तुलना म्यूचुअल फंड में मिलने वाले अनुमानित रिटर्न 12 से 14 फीसदी के हिसाब से किया है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए अगर आप म्यूचुअल फंड एसआईपी और पीपीएफ दोनों में ही एक साल में 65,000 रुपये निवेश करते हैं, तो 7.1 फीसदी रिटर्न के हिसाब से आपको 15 साल में लगभग 17,62,891 रुपये मिलेंगे। इसके साथ ही अगर यहीं पैसे म्यूचुअल फंड एसआईपी में 15 साल के लिए निवेश किए जाते हैं, तो आपको 27,32,784 रुपये रिटर्न में मिल सकता है। ये रिटर्न म्यूचुअल फंड में मिलने वाले अनुमानित रिटर्न 12 से 14 फीसदी के हिसाब से कैलकुलेट किया जाता है।

15 साल में निवेश किए गए 65,000 रुपये, 9,75,000 रुपये बन जाएंगे। वहीं पीपीएफ के 7.1 फीसदी रिटर्न के हिसाब से आपको 9,75,000 रुपये पर 7,87,891 रुपये ब्याज के रूप में मिलेंगे। कुल मिलाकर आपको 17,62,891 रुपये प्राप्त होंगे।

वहीं म्यूचुअल फंड में 9,75,000 रुपये रकम पर आपको लगभग 17,57,904 रुपये ब्याज के रूप में दिया जाएगा। जिसका मतलब है कुल मिलाकर आपका 27,32,784 रुपये का फंड बनकर तैयार हो जाएगा।

मुफ्त इलाज से लेकर पेंशन तक मिलती है कई सुविधाएं, देखें इससे जुड़ी सभी डिटेल्स

परिवहन विशेष न्यूज

कर्मचारी राज्य बीमा योजना (ईएसआइ) में बीमित कर्मचारियों को अब आयुष्मान भारत स्कीम (Ayushman Scheme) के पैनल में शामिल अस्पतालों में इलाज की सुविधा मिलेगी। केंद्र सरकार इस सुविधा के बारे में जल्द ही घोषणा कर सकती है। आइये जानते हैं कि क्या है ईएसआइ। इसके साथ ही जानेंगे कि इसके लाभार्थी को क्या फायदे मिल सकते हैं।

नई दिल्ली। कर्मचारी राज्य बीमा योजना के लाभार्थियों के लिए बड़ी खबर है, अब ईएसआइ के बीमित कर्मचारी आयुष्मान कार्ड स्कीम में शामिल अस्पतालों में भी इलाज करा सकते हैं। इसे लेकर सरकार जल्द घोषणा कर सकती है।

क्या है ईएसआइ?

ईएसआइसी एक बहुआयामी सामाजिक सुरक्षा योजना है। यह योजना संगठित क्षेत्र में कर्मचारियों को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है। योजना के तहत बीमारी, मातृत्व और येकलांगता की स्थिति में बीमित कर्मचारियों और उनके परिवारों को स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा मिलती है। देशभर में ईएसआइ के 150 से ज्यादा अस्पताल हैं। यहां सामान्य से लेकर गंभीर बीमारियों तक का इलाज होता है।

ईएसआइ के लिए कौन है पात्र

ईएसआइ के तहत उन कर्मचारियों को कवरेज मिलता है, जिनका मासिक वेतन 21,000 रुपये प्रति माह या इससे कम है। दिव्यांग कर्मचारियों के लिए यह सीमा 25,000 रुपये है। पात्र कर्मचारियों को ईएसआइ योजना में नामांकित करना नियोक्ता की जिम्मेदारी होती है।

कर्मचारी और नियोक्ता करते हैं योगदान

ईएसआइ योजना एक स्व वित्त पोषित कार्यक्रम है। इसके लिए नियोक्ता और कर्मचारी दोनों योगदान करते हैं। इसमें कर्मचारी अपने वेतन का 0.75 प्रतिशत और नियोक्ता कर्मचारी के वेतन का 3.25 प्रतिशत योगदान करता है।

ईएसआइ के फायदे?

* बीमित कर्मचारी और उसके परिवार को इलाज की मुफ्त सुविधा मिलती है
* बीमित कर्मचारी या उसके परिवार के इलाज पर खर्च की कोई अधिकतम सीमा नहीं है
* रिटायर होने के बाद 120 रुपये मासिक प्रीमियम पर कर्मचारी और जीवनसाथी को भी मिलती है इलाज की सुविधा
* हर वर्ष अधिकतम 90 दिनों की बीमारी की अवधि के दौरान वेतन का 70 प्रतिशत नकद मुआवजा मिलता है
* कर्मचारी की काम के दौरान मौत होने पर आश्रितों को वेतन के 90 प्रतिशत की दर से मिलता है मासिक भुगतान

नौकरी बदलने पर नहीं बदलता बीमा नंबर

इस योजना की एक विशेषता यह है कि जब तक कर्मचारी ईएसआइ वेतन सीमा के अंदर रहता है, तब तक उसका बीमा नंबर वही रहता है। नौकरी बदलने से कर्मचारी की बीमा स्थिति प्रभावित नहीं होगी और उसका बीमा नंबर वही रहता है।

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने से क्या-क्या मिलते हैं फायदे, यहां देखें इससे जुड़ी सभी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

मौजूदा वित्त वर्ष 2024-25 का इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने में बस कुछ महीनों का वक्त रह गया है। अगर आपने इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं की है तो भी आपके पास समय बचा है। भले ही आप इनकम टैक्स की सीमा में ना आते हो लेकिन इस फाइल करने से कई फायदे मिलते हैं। चलिए इसके बारे में डिटेल में जानते हैं।

नई दिल्ली। इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने में बस कुछ ही महीनों का वक्त रह गया है। टैक्सपेयर्स 31 जुलाई 2025 तक इनकम टैक्स रिटर्न फाइल कर सकते हैं। आप चाहे इनकम टैक्स की सीमा में ना आते हो, लेकिन इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने से आपको कई लाभ मिलते हैं।

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल बस एक टैक्स भरने का जरिया नहीं है, बल्कि ये एक महत्वपूर्ण फाइनेंशियल डॉक्यूमेंट है। इस डॉक्यूमेंट को आप लोन, निवेश या वीजा जैसे कामों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

कई लोग इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं करते, क्योंकि उनकी मौजूदा सैलरी इनकम टैक्स की सीमा में नहीं आती। लेकिन इसे ना भर के गलती कर रहे हैं। कोई भी टैक्सपेयर्स जो इनकम टैक्स के दायरे में नहीं आता, वो भी आईटीआर फाइल कर सकता है। इससे उसे कई फायदे मिलते हैं।

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने के फायदे

TDS का पैसा मिलता है वापस

कई लोगों की इनकम से टीडीएस (टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स) काटा जाता है। इस टीडीएस को आप आईटीआर फाइल करके अपना पैसा वापस ले सकते हैं। टीडीएस आमतौर पर ब्याज, कमीशन, सैलरी या फीस पर काटा जाता है।

अगर आप इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं करते, तो आपके टीडीएस में जमा पैसा सरकार के पास ही फंस जाता है। इसलिए आईटीआर फाइल करना काफी जरूरी है।

नुकसान को करता है कम

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने से आपका फाइनेंशियल नुकसान कम हो जाता है। व्यक्ति को कई तरह से फाइनेंशियल नुकसान हो सकते हैं, जैसे शेयर बाजार में पैसा डूबना, बिजनेस या प्रॉपर्टी में नुकसान हो जाना इत्यादि। लेकिन इस नुकसान को आईटीआर फाइल कर कम किया जा सकता है।

आप इस साल के नुकसान को दिखाकर आईटीआर फाइल कर सकते हैं। इसे अगले साल के मुनाफे के साथ एडजस्ट कर दिया जाएगा। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आप इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करें।

क्योंकि अगर नुकसान वाले साल में आईटीआर फाइल नहीं करते, तो इसे अगले साल के मुनाफे में एडजस्ट नहीं कर पाएंगे। अगर आपको प्रॉपर्टी और कैपिटल एसेट्स में कोई नुकसान हुआ है, तो आईटीआर जरूर फाइल करें।

विदेशी यात्रा में आसानी

अगर आप भविष्य में कोई विदेशी यात्रा की प्लानिंग कर रहे हैं, तो आईटीआर जरूर फाइल करें। क्योंकि कई देश वीजा देने के लिए आपसे इनकम प्रूफ मांग सकती है। इन देशों में अमेरिका, यूरोप, कनाडा या ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। इन देशों का वीजा प्राप्त करने के लिए आपको इनकम प्रूफ देना पड़ सकता है।

आसानी से मिल जाता है लोन

बैंक या फाइनेंशियल संगठन से लोन के लिए कई बार हमें इनकम प्रूफ देने की जरूरत पड़ती है। आप आईटीआर फाइल को इनकम प्रूफ के रूप में दिखा सकते हैं। क्योंकि बिना इनकम प्रूफ देकर आप लोन के लिए आवेदन नहीं कर पाएंगे।

इनकम प्रूफ देने से बैंक की उधारकर्ता पर विश्वास बढ़ता है। इसके साथ ही बैंक इनकम प्रूफ के जरिए आवेदनकर्ता की लोन देने की क्षमता चेक करता है।

बड़े कमाल की है ये एलआईसी स्कीम, रिटायरमेंट के बाद मिलेंगे 12 हजार रुपये पेंशन; देखें कैलकुलेशन

परिवहन विशेष न्यूज

आजकल हर कोई रिटायरमेंट के लिए पहले से ही फंड तैयार करने लगा है। ताकि उन्हें रिटायरमेंट के बाद किसी भी तरह की दिक्कत ना हो। आज हम एलआईसी की ऐसी स्कीम लेकर आए है। जिसमें निवेश कर रिटायरमेंट के बाद भी आपकी इनकम होती रहेगी। इस स्कीम के जरिए आप 12 हजार रुपये कमा सकते हैं। चलिए एलआईसी की स्कीम के बारे में डिटेल में जानते हैं।

नई दिल्ली। एलआईसी कई तरह की स्कीम ऑफर करती है। जिसके जरिए आप भविष्य के लिए मोटा फंड तैयार कर सकते हैं। अगर आप रिटायरमेंट की प्लानिंग कर रहे हैं, तो एलआईसी की ये स्कीम आपके लिए फायदेमंद हो सकती है। इस स्कीम में निवेश कर आप रिटायरमेंट के बाद 12 हजार रुपये पेंशन प्राप्त कर सकते हैं।

हम बात कर रहे हैं, एलआईसी स्मार्ट पेंशन स्कीम की। आजकल हर कोई पहले से ही रिटायरमेंट की प्लानिंग करने लगे हैं, ताकि उन्हें बुढ़ापे में किसी पर निर्भर ना होना पड़े। अगर आप रिटायरमेंट के लिए प्लानिंग कर रहे हैं, तो एलआईसी स्मार्ट पेंशन प्लान एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

क्या है LIC Smart Pension Plan?

एलआईसी स्मार्ट पेंशन प्लान खासतौर पर रिटायरमेंट के लिए बनाई गई है। इस स्कीम के तहत निवेश करने पर रिटायरमेंट के बाद भी आपके खाते में निश्चित इनकम आती रहेगी।

कैसे पाएं 12 हजार रुपये पेंशन?

अगर आप 12 हजार रुपये की पेंशन का फायदा उठाना चाहते हैं, तो आपको एलआईसी स्मार्ट पेंशन प्लान के तहत कम से कम 1 लाख रुपये निवेश करने होंगे। जिसके बाद आपको रिटायरमेंट में हर महीने 1000 रुपये मिलेंगे। वहीं तीन महीने में आपको 3000 रुपये पेंशन के रूप में मिल सकते हैं।

इसके अलावा अगर आप 6 महीने बाद पेंशन लेते हैं, तो 6000 रुपये पेंशन के रूप में मिलेंगे। ऐसी ही अगर हर एक साल बाद पेंशन के लिए क्लेम करते हैं, तो 12 हजार रुपये पेंशन के रूप में मिलेंगे। वहीं इस स्कीम के तहत ज्वाइंट अकाउंट खोला जा सकता है। तो ऐसे में अगर एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। तो दूसरा व्यक्ति इस योजना का लाभ उठा सकता है।

वहीं इस स्कीम में एन्युटी का लाभ भी मिलता है।

ऐसे करें अप्लाई

अगर आप एलआईसी की स्मार्ट पेंशन प्लान स्कीम में अप्लाई करना चाहते हैं, तो एलआईसी की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाकर अप्लाई कर सकते हैं। इसके अलावा आप एलआईसी एजेंट के जरिए ऑफलाइन भी स्कीम में अप्लाई कर सकते हैं। वहीं कॉमन पब्लिक सर्विस सेंटर की मदद से भी स्कीम में अप्लाई किया जा सकता है।

इसके अलावा हर नौकरीपेशा व्यक्ति को ईपीएफओ के तहत रिटायरमेंट के बाद पेंशन दी जाती है। ईपीएफओ के तहत मिलने वाले पैसे आपकी सैलरी से हर महीने पीएफ के रूप में काटे जाते हैं।

वहीं आप एनपीएस और यूपीएस के जरिए भी पेंशन का फायदा ले सकते हैं।

राशन कार्ड ई-KYC करने का सबसे आसान तरीका, देखें स्टेप बाय स्टेप प्रोसेस

परिवहन विशेष न्यूज

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक 2013 में लोगों ने राशन कार्ड का ई-केवाईसी करवाया था। नियम के मुताबिक हर 5 साल में ई-केवाईसी करना जरूरी है। 2013 से अब 10 साल से भी ज्यादा हो गए हैं। इस बीच कई परिवार की आर्थिक स्थिति में बदलाव हुआ होगा। ऐसे में अब राशन कार्ड का ई-केवाईसी करना जरूरी हो गया है।

नई दिल्ली। राशन कार्ड के जरिए देश के तमाम लोगों को मुफ्त या कम पैसों में राशन दिया जाता है। इसके साथ ही ये हर भारतीय नागरिक की पहचान से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) के तहत राशन कार्ड का ई-केवाईसी कराना जरूरी है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक 2013 में देश के तमाम लोगों ने राशन कार्ड का ई-केवाइसी करवाया था। 2013 से अब तक 10 साल से भी ज्यादा हो चुके हैं। वहीं नियम ये कहता है कि हर 5 साल में ई-केवाईसी होना जरूरी है। इस डिजिटल जमाने में आप घर बैठे ही आसानी से अपना ई-केवाईसी कर सकते हैं।

इसके लिए आपको दफ्तरों के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है।

घर बैठे कैसे करें राशन कार्ड का ई-केवाईसी

अगर आप भी राशन कार्ड का ई-केवाईसी करना चाहते हैं, तो नीचे बताए गए स्टेप्स को ध्यानपूर्वक फॉलो करें। इसके लिए आपको मोबाइल फोन और इंटरनेट सर्विस की जरूरत होगी।

स्टेप 1- सबसे पहले मेरा केवाईसी और Aadhaar FaceRD डाउनलोड करना होगा।

स्टेप 2- इसके बाद एप ओपन कर, लोकेशन दर्ज करें।

स्टेप 3- फिर आपको आधार नंबर, कैप्चा और मिला गया ओटीपी दर्ज करना होगा।

स्टेप 4- फिर सभी जानकारी स्क्रीन पर शॉ हो जाएगी। जिसके बाद face-e-kyc ऑप्शन चुने।

स्टेप 5- जिसके बाद कैमरा ऑन होगा, फोटो क्लिक कर सबमिट करें।

स्टेप 6- अंत में आपका ई-केवाईसी पूरा हो जाएगा।

वहीं कई लोगों का ई-केवाईसी हो चुका होगा, लेकिन उन्हें कनफ्यूज होगी कि क्या हमारा ई-केवाईसी हो चुका है या नहीं। आप नीचे बताए गए स्टेप्स के जरिए ई-केवाईसी स्टेटस चेक कर सकते हैं।

कैसे चेक करें ई-केवाईसी स्टेटस चेक?

स्टेप 1- सबसे पहले आपको मेरा केवाईसी ऐप ओपन करना होगा।

स्टेप 2- फिर लोकेशन दर्ज करें।

स्टेप 3- आधार नंबर, कैप्चा और ओटीपी दर्ज करें।

स्टेप 4- अगर आपका केवाईसी हो चुका होगा, तो आपको स्टेटस में Y लिखा दिखाई देगा।

इसके अलावा आप ऑफलाइन तरीके से भी राशन कार्ड का ई-केवाईसी करा सकते हैं। अगर आपका मोबाइल ऐप काम नहीं कर रहा है, तो घबराने की जरूरत नहीं है। आप पास में स्थित राशन की दुकान से ई-केवाईसी करा सकते हैं।

इसके लिए आपको राशन की दुकान में जाना होगा। वहां आपका पीओएस मशीन के जरिए अंगूठे या उंगलियों का निशान लिया जाएगा। इसके साथ ही आपको आधार कार्ड और राशन कार्ड भी ले जाना होगा।

आपके अंगूठे या उंगलियों का निशान लेकर वेरिफिकेशन किया जाएगा। जिसके बाद आपका ई-केवाईसी हो जाएगा।

पुरी-राउरकेला बंद भारत ट्रेन पर पथराव

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पुरी-राउरकेला बंद भारत ट्रेन पर पथराव। पुरी से राउरकेला आ रही वंदे भारत ट्रेन पर आज दोपहर कलुंगा स्टेशन से गुजरते समय पथराव किया गया। वंदे भारत ट्रेन के सी-5 कोच का शीशा एक बदमाश द्वारा भागते समय फेंके गए पत्थर से टूट गया।

रेलवे अधिकारियों ने कलुंगा स्टेशन पर ट्रेन को रोका और यात्रियों की सुविधा के मुद्दों पर चर्चा की। इस घटना में कोई यात्री घायल नहीं हुआ। राउरकेला रेलवे स्टेशन प्रबंधक ने बताया कि टूटे शीशे पर टेप लगाकर वंदे भारत ट्रेन को राउरकेला स्टेशन लाया गया। हालांकि विदेशों में बंद भारत ट्रेनों पर पथराव की घटनाएं पहले भी हो चुकी हैं, लेकिन राउरकेला के पास यह ऐसी पहली घटना है। इसलिए पत्थर किसने और क्यों फेंके, यह जांच के बाद पता चलेगा। रेलवे सूत्रों ने पुष्टि की है कि पथराव की घटना में कोई यात्री घायल नहीं हुआ।

पुरी-राउरकेला बंदे भारत एक्सप्रेस के समय में परिवर्तन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : यात्री सुविधा बढ़ाने के लिए २०८३५/२०८३६ राउरकेला-पुरी-राउरकेला वंदे भारत एक्सप्रेस की सेवा समय-सारिणी में संशोधन किया गया है। पुरी-राउरकेला-पुरी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन, जो वर्तमान में शनिवार को छोड़कर प्रतिदिन चलती है, अब मंगलवार को छोड़कर प्रतिदिन चलेगी।यह ट्रेन ३ जून से साप्ताहिक अवकाश वाले दिन मंगलवार को बंद रहेगी। 7 जून से शनिवार को यातायात सामान्य रहेगा। २०८३६ पुरी-राउरकेला वंदे भारत एक्सप्रेस सुबह ५ बजे पुरी से रवाना होती है और दोपहर १२.45 बजे राउरकेला पहुँचती है। २०८३५ राउरकेला-पुरी वंदे भारत एक्सप्रेस राउरकेला से दोपहर १:10 बजे रवाना होती है और रात 9:40 बजे पुरी पहुँचती है। इस ट्रेन के लिए निर्धारित स्टेशनों पर ट्रेन के समय और ठहराव में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

सुबर्नपुर से पुराने कटक तक जल्द चलेगी ट्रेन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : जल्द ही पुराने कटक स्टेशन पर रेलगाड़ियां आ जाएंगी। इससे पहले सुबरनपुर से बौध स्टेशन तक सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया गया था, जबकि आज बौध स्टेशन से पुराने कटक स्टेशन तक सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया गया।रेलवे ने 110 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से ट्रेन चलाकर नए ट्रैक की क्षमता का परीक्षण किया है। अब हम सिर्फ हरी झंडी का इंतजार कर रहे हैं। रेलगाड़ी 110 किमी/घंटा की गति से चल रही थी। यात्री रेलगाड़ियों के लिए सड़क तैयार कर दी गई है। पैसेंजर ट्रेन सुबरनपुर से पुराने कटक तक चलेगी। बौध जिले के संचार नेटवर्क में एक नया पुल जुड़ने जा रहा है। सुरक्षा जांच प्रक्रिया पहले ही पूरी हो चुकी है। और बस कुछ दिन और इंतज़ार करो. रेल मंत्रालय से अनुमति मिलने के बाद यह ट्रेन बौध तक चलेगी। पूर्वी तटीय रेलवे के सुरक्षा आयुक्त और संबलपुर के डीआरएम की टीम ने दो दिनों तक ट्रैक का निरीक्षण किया। उन्होंने सिग्नल, सभी लोहे के पुल, लूप लाइन और मुख्य लाइनों का परीक्षण किया, जिनसे रेलगाड़ी गुजरती है। सभी जांच पूरी करने के बाद विभाग ने लोक पायलट को पैसेंजर ट्रेन को 110 किमी प्रति घंटे की गति से बलांगीर की ओर चलाने का निर्देश दिया। पुराने कटक स्टेशन को आधुनिक शैली में बनाया गया है। जिसमें एक मुख्य लाइन और दो लूप लाइनें हैं। स्टेशन को बिजली से जोड़ दिया गया है, वहीं स्टेशन मास्टर कक्ष, टिकट काउंटर, रिले रूम, सिग्नल रूम, स्टॉप रूम और बैटरी रूम का काम पूरा हो चुका है। और जो भी संबंधित कार्य शेष रह गया है, वह भी बहुत जल्द पूरा कर लिया जाएगा। मजदूर अपनी आजीविका के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। कुछ दिन पहले सुबरनपुर से बौध तक सुरक्षा जांच पूरी कर ली गई थी, अब चंपापुर और पुराने कटक स्टेशनों के बीच सुरक्षा जांच पूरी कर ली गई है। अब बस हरी झंडी का इंतजार है। हरी झंडी मिलने के बाद ट्रेन पुराने कटक स्टेशन से बलांगीर तक चलेगी।

पशुपालकों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर असर, हरियाणा के इतिहास में सबसे लंबे कर्मचारी आंदोलनों में से एक

डिप्लोमा वेटरनरी एसोसिएशन हरियाणा: 1016 दिनों से संघर्ष जारी, कब मिलेगा न्याय?

हरियाणा पशुपालन विभाग में महानिदेशक पद पर आईएएस अधिकारी की नियुक्ति एवं VLDA कर्मचारियों की माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा स्वीकृत मांगों की अधिसूचना जारी करवाने हेतु Diploma Veterinary Association Haryana 633 द्वारा 1015 दिनों से आंदोलन जारी है। बिजेंद्र सिंह बैनीवाल, राज्य प्रधान एवं रामफल राहड़, महासचिव, डिप्लोमा वैटरनरी एसोसिएशन हरियाणा का कहना है कि जब तक हरियाणा सरकार वीएलडीए कर्मचारियों की मांगों की अधिसूचना जारी नहीं करती तब तक यह आन्दोलन जारी रहेगा। उनकी मांगें न्यायसंगत हैं और जनता के हित में हैं।

प्रियंका सौरभ

हरियाणा के पशुपालन और वेटरनरी सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले Veterinary Livestock Development Assistants (VLDA) पिछले 1016 दिनों से अपनी जायज मांगों को लेकर संघर्षरत हैं। पंचकूला के सेक्टर-5 में धरने पर बैठे ये कर्मचारी अपनी सेवा शर्तों में संशोधन, पदनाम परिवर्तन और बेहतर वेतनमान की मांग कर रहे हैं। हालांकि, अभी तक सरकार की ओर से कोई ठोस समाधान नहीं निकला है, जिससे कर्मचारियों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है।

संघर्ष की मुख्य मांगें

डिप्लोमा वेटरनरी एसोसिएशन हरियाणा द्वारा उठाई गई प्रमुख मांगें इस प्रकार हैं:

1. VLD डिप्लोमा का नाम बदलकर DVSC (Diploma in Veterinary Science) किया जाए – ताकि इसे राष्ट्रीय स्तर पर अधिक मान्यता मिले।

2. VLDA के सर्विस रूल्स में संशोधन किया जाए – जिससे कर्मचारियों की पदोन्नति और भविष्य सुरक्षित हो सके।

3. VLDA का पदनाम बदलकर VLEO (Veterinary Livestock Extension Officer) किया जाए – ताकि उनकी भूमिका को अधिक आधिकारिक दर्जा मिल सके।

4. डिप्लोमा वेटरनरी काउंसिल का गठन – जिससे इस क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों के लिए एक नियामक निकाय बनाया जा सके।

5. वेतनमान में ग्रेड पे को अपग्रेड किया जाए – जिससे कर्मचारियों को उचित आर्थिक लाभ मिले।

6. हरियाणा के पशु अस्पतालों में मूलभूत सुविधाओं का सुधार – ताकि प्रदेश के पशुपालकों को बेहतर सेवाएं मिल सकें।

7. सेवा नियमों में संशोधन: Assured Career Progression (ACP) को लागू किया जाए, ताकि कर्मचारियों की पदोन्नति और करियर ग्रोथ सुनिश्चित हो सके।

8. ऑनलाइन ट्रांसफर ड्राइव में भागीदारी: सभी VLDAs को आगामी ऑनलाइन स्थानांतरण अभियान में शामिल किया जाए, जिससे स्थानांतरण प्रक्रिया में पारदर्शिता और समानता बनी रहे।

राजनीतिक समर्थन और सरकार की चुप्पी

हरियाणा में विभिन्न राजनीतिक दल इस आंदोलन को समर्थन देने लगे हैं। हाल ही में कई विपक्षी नेता धरना स्थल पर पहुंचे और एसोसिएशन की मांगों को जायज़ बताया। उन्होंने सरकार से जल्द समाधान निकालने की अपील की।

वहीं, सरकार की चुप्पी और निष्क्रियता से प्रदर्शनकारियों में नाराजगी बढ़ रही है। पशुपालन विभाग में VLDA की भूमिका अहम होने के बावजूद उनकी अनदेखी हो रही है। यह सवाल उठने लगे हैं कि क्या सरकार इस क्षेत्र को गंभीरता से ले रही है?

सरकार की प्रतिक्रिया क्या रही है?

अब तक हरियाणा सरकार की ओर से कोई ठोस बयान या ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। कुछ उच्च अधिकारियों ने बातचीत के संकेत दिए हैं, लेकिन कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया। सरकार और कर्मचारियों के बीच बार-बार वार्ता असफल रही है।

पशुपालकों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर असर

हरियाणा एक कृषि और पशुपालन प्रधान राज्य है, जहां लाखों पशुपालक सरकारी पशु चिकित्सालयों पर निर्भर हैं। VLDA कर्मचारियों की कमी और उनकी समस्याओं का समाधान न होना, सीधा असर पशुपालकों पर डाल रहा है।

अगर VLDA कर्मचारियों की स्थिति में सुधार किया जाता है, तो इससे पशु स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता भी बेहतर होगी। यह सीधे तौर पर ग्रामीण अर्थव्यवस्था और डेयरी उद्योग को मजबूती देगा।

हरियाणा में गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और अन्य पशुधन की बड़ी संख्या है।

VLDA कर्मचारी ही गांव-गांव जाकर पशुओं की बीमारियों का इलाज और टीकाकरण करते हैं।

सरकार की उपेक्षा से पशुपालकों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं नहीं मिल रही हैं।

प्रदर्शनकारियों की अगली रणनीति

धरना 1000 दिनों से अधिक समय से जारी है, लेकिन अब कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर और आक्रामक रुख अपनाने की तैयारी में हैं।

1. प्रदेशभर में VLDA कर्मचारियों द्वारा विरोध प्रदर्शन तेज किया जाएगा।

2. काम बंद हड़ताल – अगर सरकार गंभीरता नहीं दिखाती, तो VLDA कर्मचारियों द्वारा सेवाएं ठप करने की चेतावनी दी जा सकती है, जिससे पशुपालन विभाग में भारी संकट आ सकता है।

विशेषज्ञों की राय: क्या समाधान निकल सकता है?

विशेषज्ञ मानते हैं कि VLDA कर्मचारियों की मांगें पूरी तरह से जायज़ हैं और सरकार को इसे गंभीरता से लेना चाहिए।

"अगर पशुपालन क्षेत्र को मजबूत बनाना है, तो VLDA कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना होगा। उनका पदनाम और वेतनमान सुधारने से पशुपालकों को भी बेहतर सेवाएं मिलेंगी।"

"देशभर में पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं बनाई जा रही हैं, लेकिन जब तक फील्ड लेवल पर काम करने वाले कर्मचारियों को सम्मानजनक वेतन और पद नहीं मिलेगा, तब तक योजनाओं का सही लाभ नहीं मिलेगा।"

क्या होगा आगे?

यह संघर्ष अब हरियाणा के इतिहास में सबसे लंबे कर्मचारी आंदोलनों में से एक बन चुका है। सवाल यह है कि क्या सरकार इस पर ध्यान देगी या यह आंदोलन और लंबा खिंचेगा?

हरियाणा सरकार को चाहिए कि वह संवेदनशीलता के साथ इन मांगों को सुने और जल्द से जल्द समाधान निकाले।

1. सरकार को VLDA कर्मचारियों के प्रतिनिधियों से बातचीत करनी चाहिए।

2. डिप्लोमा वेटरनरी काउंसिल का गठन करने की प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए।

3. पदनाम और वेतनमान सुधारने के लिए सर्वे और समीक्षा रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए।

अगर सरकार समय रहते समाधान निकालती है, तो यह न केवल कर्मचारियों के हित में होगा, बल्कि पूरे पशुपालन क्षेत्र की बेहतरी के लिए भी एक अहम कदम साबित होगा।

निष्कर्ष

हरियाणा सरकार को अब इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। 1016 दिनों से चल रहे इस संघर्ष का जल्द समाधान निकालना न केवल VLDA कर्मचारियों के हित में है, बल्कि यह पशुपालकों, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राज्य के विकास के लिए भी आवश्यक है।

अगर सरकार ने जल्द कदम नहीं उठाए, तो यह आंदोलन और बड़ा रूप ले सकता है, जिससे पशुपालन सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं और पशुपालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

स्वच्छ जल की सुलभता: आज भी याद चुनौती !

भौगोलिक दृष्टि से भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है, जबकि जनसंख्या के दृष्टिकोण से आज के समय दुनिया का सबसे बड़ा देश है। पाठकों को बताता चलूं कि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के नवीनतम आंकड़ों से यह पता चलता है कि पिछले दशक में भारत की जीडीपी में 105 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि हुई है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार, भारत की जीडीपी वर्तमान में 4.3 ट्रिलियन डॉलर है। वर्ष 2015 में जीडीपी 2.1 ट्रिलियन डॉलर थी।अच्छी बात यह है कि पिछले कुछ ही सालों में भारत ने सकल घरेलू उत्पाद या जीडीपी के मामले में अपनी अर्थव्यवस्था को दोगुना से भी अधिक कर लिया है।सच तो यह है कि भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जापान को पीछे छोड़ने के कगार पर है।जापान की जीडीपी वर्तमान में 4.4 ट्रिलियन डॉलर है और भारत 2025 की तीसरी तिमाही तक उस आंकड़े को पार कर जाएगा और यदि विकास की औसत दर इसी तरह जारी रही, तो भारत वर्ष 2027 की दूसरी तिमाही तक जर्मनी को भी पीछे छोड़ देगा, यह बहुत अच्छी बात है। आज भारत अंतरिक्ष से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हो या चिकित्सा का क्षेत्र या कोई भी अन्य क्षेत्र, लगभग-लगभग सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है। यहां तक कि भारत ने पिछले सालों में देश ने अलग-अलग क्षेत्रों में विकास के नये कीर्तिमान रचे हैं और वर्तमान में भी भारत लगातार विकास और उन्नयन के पथ पर अग्रसर है, लेकिन स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के मोर्चे पर देश की प्रगति को संतोषजनक कतई नहीं कहा जा सकता है। कहते हैं कि 'जल ही जीवन है।' जल बिना मनुष्य सहित धरती के सभी प्राणियों/जीवों तथा वनस्पतियों का जीवन संभव नहीं है। जल, मानव, जीवों व वनस्पतियों के अस्तित्व को बनाए रखने के लिये एक प्रमुख प्राकृतिक व सीमित संसाधन है। यह न केवल ग्रामीण और शहरी समुदायों की स्वच्छता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि कृषि के सभी रूपों और अधिकांश औद्योगिक उत्पादन प्रक्रियाओं के लिये भी बहुत आवश्यक है।कहना ग़लत नहीं होगा कि स्वच्छ जल की उपलब्धता हर व्यक्ति का मूलभूत अधिकार है, लेकिन आज भी बहुत से लोग स्वच्छ पेयजल से वंचित हैं। बड़े महानगरों से लेकर छोटे शहरों, ग्रामीण दूर-दराज के इलाकों में आज भी स्वच्छ जल की उपलब्धता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। पाठक जानते होंगे कि पृथ्वी पर मौजूद पानी का 97% हिस्सा समुद्रों में है।धरती पर मौजूद मीठे पानी का 2.7% हिस्सा ही झील, नदी, और भूजल के रूप में है और मीठे पानी का 0.6% हिस्सा नदियों, झीलों, और तालाबों में है। गौरतलब है कि पृथ्वी पर मौजूद मीठे पानी का 2.4% हिस्सा ग्लेशियरों और ध्रुवों में जमा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पृथ्वी पर उपलब्ध पानी में से केवल 3% हिस्सा ही पीने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है और इसमें से भी ज़्यादातर हिस्सा ग्लेशियरों और ध्रुवों में जमा है।आज दुनिया भर में कई लोग दूषित पानी पीने को मजबूर हैं, भारत भी इनमें से एक है। वास्तव में दूषित पानी पीने से कई तरह की बीमारियां हो जाती हैं और जल प्रदूषण की वजह से कई जलीय प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही देश के 302 जिलों के सर्वे को लेकर 'लोकल सर्कल्स की रिपोर्ट' सचमुच चिंताजनक है, जिसमें यह कहा गया है कि शहरी क्षेत्रों में तो 12 फीसदी घरों तक तो पाइप लाइन से पेयजल आपूर्ति ही नहीं हो पा रही और जिन्हें मिल भी रहा है उनमें भी महज छह फीसदी घरों को ही स्वच्छ जल सुलभ हो पा रहा है, क्या यह चिंताजनक बात नहीं है ? पाठकों को बताता चलूं कि नीति आयोग द्वारा वर्ष 2018 में जारी कम्पोज़िट वाटर मैनेजमेंट इंडेक्स रिपोर्ट में बताया गया है कि देश भर के लगभग 21 प्रमुख शहर (दिल्ली, बंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद और अन्य) वर्ष 2020 तक शून्य भूजल स्तर तक पहुँच जाएंगे एवं इसके कारण लगभग 100 मिलियन लोग प्रभावित होंगे। इतना ही नहीं, वर्ष 2030 तक भारत में जल की मांग, उसकी पूर्ति से लगभग दोगुनी हो जाएगी। आंकड़े बताते हैं कि देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घनमीटर थी, जो वर्ष 2000 में 2300 घनमीटर रह गई तथा वर्ष 2025 तक इसके और घटकर 1600 घनमीटर रह जाने का अनुमान है।आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत के शहरी क्षेत्रों में 970 लाख लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता है, जबकि देश के ग्रामीण इलाकों में तकरीबन 70 प्रतिशत लोग प्रदूषित पानी पीने और 33 करोड़ लोग सूखे वाली जगहों में रहने को मजबूर हैं। बहरहाल, हम जानते हैं कि आज देश की आबादी लगातार बढ़ती चली जा रही है। शहरीकरण, औधोगिकीकरण में लगातार बढ़ोतरी हुई है। ऐसे में बढ़ती आबादी, शहरीकरण और औधोगिकीकरण के बीच जल की जरूरतों को पूरा कर पाना कोई आसान काम नहीं है। जल के प्रति हमारी एक आम सोच यह भी है कि जल एक कभी भी नहीं समाप्त होने वाला धरती का बड़ा संसाधन है।हम आज पानी को व्यर्थ बहाते हैं। पानी की कीमत को हम नहीं समझते हैं। आज देश को बढ़ती आबादी के अनुरूप पाइप लाइनों के विस्तार, ट्रीटमेंट प्लांटों की संख्या में वृद्धि जैसी आधारभूत साधन-सुविधाओं की जरूरत है। ऐसा भी नहीं है कि सरकार ने जल संरक्षण व स्वच्छ पेयजल की हर व्यक्ति तक उपलब्धता के लिए कोई कदम नहीं उठाए हैं। आज देश में जल संरक्षण को लेकर तरह तरह के अभियान चलाए जा रहे हैं, आम आदमी को जागरूक किया जा रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि हर घर जल भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019 में वर्ष 2024 तक हर ग्रामीण घर में नल का पानी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई एक योजना है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वर्ष 2019 के केंद्रीय बजट में इस योजना की घोषणा की थी। गौरतलब है कि अपनी स्थापना के बाद से, इस योजना ने भारत में घरेलू स्वच्छ नल के पानी की उपलब्धता में उल्लेखनीय सुधार किया है। इस योजना के तहत प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नियमित और दीर्घकालिक आधार पर पर्याप्त मात्रा में निर्धारित गुणवत्ता वाला पीने का पानी उपलब्ध कराया गया है। इतना ही नहीं, ग्रामीण क्षेत्र में प्रत्येक परिवार को नल कनेक्शन प्रदान करने हेतु जलापूर्ति अवसंरचना का विकास किया गया है।जलापूर्ति प्रणाली को दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान करने हेतु विश्वसनीय पेयजल स्रोतों का विकास सुनिश्चित किया गया है। यहां तक कि धूसर जल का प्रबंधन तक किया गया है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि घरेलू प्रक्रियाओं (जैसे बर्तन धोना, कपड़े धोना और स्नान करना) से उत्पन्न अपशिष्ट जल को धूसर जल कहा जाता है। इतना ही नहीं, विभिन्न संस्थाओं, प्रयोगशालाओं, परीक्षण और निगरानी आदि के माध्यम से समुदायों की क्षमता निर्माण किया गया है, लेकिन इन सबके बावजूद भी क्या यह तथ्य चिंताएं पैदा नहीं करता है कि सर्वे में देश के 485 शहरों को मिलाकर मात्र 46 नगर पालिकाएं ही स्वच्छ पानी के लिए तय मापदंडों पर 100 प्रतिशत खरी उतरी है। शेष सभी जगह पानी स्वच्छ नहीं है। आज शहरों ही नहीं, गांवों में वाटर प्यूरीफायर, आर ओ लगने लगें हैं, क्यों कि पानी प्रदूषित है। कुछ लोग गांवों में फिटकरी पाउडर/ब्लीचिंग पाउडर वगैरह छिड़क कर तो कुछ लोग पानी को उबालकर और छानकर तक प्रयोग में ला रहें हैं अथवा कुछ लोग बाहर से (आर.ओ.) से पानी की सप्लाई अपने घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों में मंगवाते हैं।सच तो यह है कि इन सब उपायों के बावजूद लोगों को पीने का शुद्ध पानी प्राप्त करने के लिए काफी मशक्कत व परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। नीति आयोग की वर्ष 2018 की रिपोर्ट में यह बात कही गई है कि स्वच्छ जल के अभाव में हर साल दो लाख से ज्यादा लोगों की जान जा रही है। पाठकों को बताता चलूं कि नीति आयोग की इसी रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया गया है कि लगभग 600 मिलियन लोगों को पानी के तनाव का सामना करना पड़ सकता है, जो भारत की अनुमानित आबादी का लगभग 40% है।एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2015 में भारत में 0.5 मिलियन मौतें अस्वच्छ जल स्रोतों की वजह से हुई थीं। पाठकों को बताता चलूं कि दूषित जल पीने से मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, दिमागी बुखार, पेचिश, टाइफ़ॉइड, पीलिया, हैजा जैसी बीमारियां फैलतीं हैं। हाल फिलहाल, पेयजल की शुद्धता को लेकर शहरों का ही यह हाल है तो गांवों की स्थिति का तो सहज ही अंदाजा लगाया ज सकता है। पानी की दिक्कत सबसे ज्यादा मेट्रो शहरों और रेगिस्तानी इलाकों के लोगों को होतीं हैं और राजस्थान जैसे राज्य में तो आज भी दूर-दराज के इलाकों में पनिहारियों को कोसों कोसों से पानी लाना पड़ता है और पानी को घी की तरह फूंक-फूंक कर इस्तेमाल करना पड़ता है। आज जरूरत इस बात की है कि 'जल जीवन मिशन' को और आगे बढ़ाया जाए और इसकी सतत निगरानी की जाए। यह भी सुनिश्चित करना होगा कि लोगों के घरों तक शुद्ध पेयजल की आपूर्ति हो, क्यों कि स्वस्थ जनसंख्या ही देश व समाज के विकास में योगदान दे सकती है। इसके लिए सरकारों के साथ ही हम सभी को सामूहिकता से आगे आना होगा और प्रतिबद्धता, ईमानदारी के साथ काम करना होगा। हमें यह भी समझना होगा कि जल धरती पर उपलब्ध एक बहुत ही सीमित संसाधन है। हमें जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

28 मार्च - विश्व पियानो दिवस

सुरीला पियानो दिवस मनाओ...!

पियानो की 88 कुंजियों को दो सम्मान,
संगीत की स्वर लहरियों का हुआ ज्ञान।
इसने दी अभिनेत्रियों को खूब 'तसल्ली',
गम भुलाने के लिए कई बार हुई टल्ली।
अभिनेताओं को ढूंढा इसने 'गली-गली',
'इश्क' की हवा क्या? मस्त होकर चली।

पियानो की 88 कुंजियों को दो सम्मान,
संगीत की स्वर लहरियों का हुआ ज्ञान।
जितने भी गम थे पियानों ही लेके उड़ा,
जमाने के सामने खुद जाकर हुआ खड़ा।
इसके पहलू में आकर खूब रोएं किरदार,
जाने कितने नतमस्तक हुए 'असरदार'।

पियानो की 88 कुंजियों को दो सम्मान,
संगीत की स्वर लहरियों का हुआ ज्ञान।
इससे पूरे परिवार को हो जाता हैं लगाव,
स्टूल पर बैठकर साथ खूब तराने गाओ।
गैरों पे करम और अपनों पे सितम ढ़ाओ,
खुशियाँ हैं कम, गम को ही गले लगाओ।
बजाओ सुरीला 'पियानो दिवस' मनाओ!

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**